विश्व संकट तथा शान्तिपथ

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

WORLD CRISIS

and the Pathway to

PEACE

The world is passing through very turbulent times. The global economic crisis continues to manifest newer and graver dangers almost every week. The similarities to the period just before the Second World War continue to be cited and it seems clear that events are moving the world at an unprecedented pace towards a horrific Third World War.

In this book, His Holiness Mirza Masroor Ahmad, the Head of the worldwide Ahmadiyya Muslim Community warns the world of the fast approaching dangers and how it can avert disaster and chart a course to peace.

विश्व संकट
तथा
शान्तिपथ

विश्व संकट तथा शान्तिपथ

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद
विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख तथा इमाम
और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पंचम ख़लीफ़ा

के

पत्रों एवं भाषणों का संकलन

विश्व संकट तथा शान्तिपथ

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख तथा इमाम
और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पंचम ख़लीफ़ा

के

पत्रों एवं भाषणों का संकलन

First Published in the UK in English: 2012 [ISBN: 978-1-84880-079-3]
First Hindi Edition Published in India: 2015
Second Hindi Edition Published in India: April 2017
Translated by: Bilal Ahmad Shamim

Published by
Nazarat Nashr-o-Ishaat
Sadr Anjuman Ahmadiyya
Qadian-143516. Distt Gurdaspur
Punjab, INDIA

Printed at
Fazle Umar Printing Press, Qadian

For further information please visit:

www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in
ISBN: 978-93-83882-39-7

विषय सूची

भाषण

विश्व के नेताओं के नाम पत्र

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

लेखक के विषय में

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सर्वोच्च प्रमुख हैं। आप हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी अलैहिस्सलाम के पांचवें उत्तराधिकारी हैं।

आपका जन्म 15 सितम्बर 1950 को रब्वह पाकिस्तान में स्वर्गीय मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब व स्वर्गीय नासिरा बेगम साहिबा के परिवार में हुआ। कृषि विश्वविद्यालय फैसलाबाद, पकिस्तान से 1977 ई. में कृषि-अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् आपने औपचारिक रूप से अपना जीवन इस्लाम की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। तदोपरान्त आपको 1977 ई. में घाना (अफ्रीका) भिजवाया गया जहां आप कई वर्षों तक विभिन्न अहमदिया मुस्लिम स्कूलों में प्रधानाचार्य के रूप में सेवारत रहे। आपने अहमदिया सेकेण्डरी स्कूल श्लाघा के आरम्भ होने में भी योगदान दिया और प्रारम्भिक दो वर्ष तक वहां प्रिंसिपल के रूप में भी कार्यरत रहे।

वहां से पाकिस्तान लौट आने के पश्चात् आप रब्वह में अहमदिया जमाअत के मुख्यालय में विभिन्न पदों पर आसीन रह कर सेवारत रहे। सन् 1999 ई. में आप को एक चिन्ह-पट से पवित्र क़ुर्आन के शब्द मिटाने के मिथ्या आरोप में अल्पावधि के लिए कारावास भी काटना पड़ा।

22 अप्रैल, 2003 को अहमदिया मुस्लिम जमाअत के जीवनपर्यन्त पद 'ख़लीफ़ा' के लिए निर्वाचित होने के फलस्वरूप आप एक अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक संस्था जिसके 200 से अधिक देशों में लाखों अनुयायी हैं, के विश्वव्यापी धार्मिक एवं प्रशासनिक प्रमुख भी हैं।

ख़लीफ़ा निर्वाचित होने के पश्चात से अब तक हुज़ूर प्रचार एवं प्रसार के सभी माध्यमों द्वारा इस्लाम का शान्तिपूर्ण सन्देश पहुंचाने का एक विश्वव्यापी अभियान का नेतृत्व करते आ रहे हैं। आपके नेतृत्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की राष्ट्रीय शाखाओं द्वारा इस्लाम की वास्तविक शान्तिपूर्ण शिक्षाओं को प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं। विश्व भर में अहमदी मुसलमान लाखों की संख्या में मुसलमानों तथा ग़ैर मुस्लिमों को 'शान्ति' विज्ञापन बांटने, सर्वधर्म सम्मेलन एवं शान्ति समारोह आयोजित करने तथा पवित्र क़ुर्आन के वास्तविक एवं उत्तम संदेश के प्रचार हेतु प्रदर्शनियां आयोजित करने के मूल प्रयासों में व्यस्त हैं। ये कार्यक्रम विश्वस्तर पर संचार माध्यमों के आकर्षण का केन्द्र बने हैं तथा इनके द्वारा यह प्रदर्शित होता है कि इस्लाम, शान्ति, अपने देश के प्रति वफ़ादारी और मानवता की सेवा का प्रबल समर्थक है।

हुज़ूर ने सन 2004 ई. में वार्षिक 'राष्ट्रीय शान्ति समारोह' का उद्घाटन किया जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों के लोग एकत्र होकर

शान्ति एवं एकता के सम्बन्ध में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। प्रतिवर्ष इस समारोह में बहुत से मंत्री, सांसद, राजनीतिज्ञ, धार्मिक नेता तथा अन्य पदाधिकारी सम्मिलित होते हैं। हुज़ूर ने मानवता की सेवा को प्रोत्साहित करने तथा इस उद्देश्य को साकार करने हेतु विश्वव्यापी भ्रमण किया है। हुज़ूर के नेतृत्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने विश्व के दूरस्थ भागों में उत्तम शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु बड़ी संख्या में स्कूल तथा अस्पतालों का निर्माण किया है।

हुज़ूर समाज के प्रत्येक स्तर पर शान्ति स्थापित करने में प्रयासरत हैं। हुज़ूर अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सदस्यों को निरन्तर उपदेश देते हैं कि वे व्यक्तिगत स्तर पर सुधार उत्पन्न करने के लिए अपने आप से 'जिहाद' (संघर्ष) करें जो कि सर्वश्रेष्ठ जिहाद है। इस प्रकार प्रत्येक अहमदी मुसलमान व्यक्तिगत स्तर पर शान्ति स्थापित करने में सफल होकर अन्य लोगों के लिए भी शान्ति उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध हो सकेगा।

हुज़ूर अन्य सभी लोगों को भी यही संदेश देते हैं मैलबोर्न में एक विशेष स्वागत समारोह में शान्ति स्थापना संबंधित एक ग़ैर-मुस्लिम के प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर ने कहा, "यदि आपके भीतर शान्ति है तो इस का अर्थ है कि आप शान्ति का प्रयास कर रहे हैं। यदि हम में से प्रत्येक के भीतर शान्ति हो तो इसका अर्थ है कि हम दूसरों तक शान्ति का प्रसार कर रहे हैं।"

हुज़ूर व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर तथा स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं के अनुसार शान्ति-स्थापना के यथार्थ उपायों के सम्बन्ध में अन्य सभी लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह आजकल लंदन इंग्लैंड में रह रहे हैं। अहमदी मुसलमानों के विश्वव्यापी धार्मिक नेता के रूप में आप शान्ति और दया के सुखदायी संदेश के द्वारा उत्साहपूर्ण ढंग से इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं।

प्राक्कथन

संसार अत्यन्त अशान्तिपूर्ण परिस्थितियों में से गुज़र रहा है। वैश्विक आर्थिक संकट प्रति सप्ताह निरन्तर नवीनतम और गम्भीर विपत्तियां उत्पन्न करता जा रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व की परिस्थितियों में समानता का निरन्तर वर्णन किया जा रहा है और स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि वर्तमान घटनाएं विश्व को एक अत्यन्त तीव्र गति से एक भयंकर तृतीय विश्व युद्ध की ओर ले जा रही हैं। प्रबल रूप से यह आभास हो रहा है कि स्थिति नियंत्रण से बाहर होती जा रही है और लोग किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में हैं जो विश्व मंच पर प्रकट होकर एक ऐसा यथार्थ और सुदृढ़ समाधान प्रस्तुत करे जिस पर वे पूरा विश्वास और भरोसा कर सकें और जो समान रूप से उनके हृदय एवं मन को प्रभावित कर सके और जो उनके भीतर यह आशा जागृत करे कि शान्ति की ओर अग्रसर करने वाला मार्ग भी मौजूद है। परमाणु युद्ध के परिणाम इतने भीषण हैं कि कोई उनकी कल्पना करने का भी साहस नहीं करता।

इस पुस्तक में हम ने हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब, विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख द्वारा प्रस्तुत समाधान और मार्गदर्शन को संकलित किया है। गत कई वर्षों के अन्तर्गत जैसे जैसे परिस्थितियां प्रकट होती गईं आप ने अत्यन्त निर्भयतापूर्वक इस बात की घोषणा कि परिस्थितियां किस ओर बढ़ रही हैं — आपने भय उत्पन्न करने के लिए नहीं अपितु विश्व को इस बात का विचार करने पर विवश करने के लिए ऐसा किया कि संसार आज इस स्थिति तक कैसे पहुंचा और किस प्रकार हम इस विनाश को टाल कर इस विश्व-ग्राम में निवास कर रहे सभी लोगों के लिए शान्ति एवं सुरक्षा के मार्ग का निर्माण कर सकते हैं। आप ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की कि शान्ति को सुनिश्चित बनाने का केवल यही उपाय है कि संसार विनम्रता और न्याय का मार्ग धारण कर ले और अत्यन्त नम्र एवं विनीत स्वभाव से परमात्मा की शरण में आ जाए, मनुष्य मानवता की भावना का प्रदर्शन करे, शक्तिशाली लोग निर्बल लोगों के साथ आदर, सम्मान एवं न्यायपूर्ण व्यवहार करें और निर्बल और निर्धन लोग कृतज्ञता का प्रदर्शन करें और सत्य एवं पुण्य के मार्ग पर चलें तथा सभी लोग पूर्ण विनम्रता एवं निष्कपटता से अपने स्रष्टा की शरण में आ जाएं।

आपने बार-बार सभी का इस ओर ध्यानाकर्षण कराया कि विनाश के कगार से वापस लौटने का अब केवल यही एक उपाय है कि समस्त देश परस्पर एक दूसरे के साथ न्याय के व्यवहार को अनिवार्य बना लें। यदि उनमें परस्पर शत्रुता भी है तब भी उन्हें न्याय का पालन करना चाहिए क्योंकि इतिहास से हमें यही शिक्षा मिलती है कि भविष्य में उत्पन्न होने वाली शत्रुताओं के उन्मूलन का केवल यही एक उपाय है।

अत: इस प्रकार चिरस्थायी शान्ति की स्थापना करनी चाहिए।

आपने व्यक्तिगत रूप से विश्व के महान देशों के नेताओं एवं अधिकारियों को सम्बोधित करने हेतु दूर दूर तक भ्रमण किया है जिसमें कैपिटल हिल वाशिंगटन डी.सी. लंदन में पार्लियामेंट के दोनों सदन, सैन्य मुख्यालय जर्मनी, ब्रसल्ज़ में यूरोपीय पार्लियामेंट और न्यूज़ीलैंड की राष्ट्रीय संसद में दिए गए ऐतिहासिक भाषण शामिल हैं। इन आयोजनों में प्रमुख, कांग्रेस सदस्य, सांसद, राजदूत, ग़ैर सरकारी संस्थाओं के नेता, धार्मिक नेता, प्राध्यापक, नीति सलाहकार और पत्रकार सम्मिलित होते रहे। आपने स्पष्ट रूप से यह कहा कि न्याय की मांगें तभी पूर्ण हो सकती हैं जब सभी गुटों और लोगों के साथ समानता का व्यवहार किया जाए और आपने यह चेतावनी भी दी कि अन्यायपूर्ण तथा अमानवीय आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियों के कारण विश्व की विभिन्न जातियों के मध्य तनाव में जो निरन्तर वृद्धि हो रही है उसके परिणामस्वरूप विश्व संकट गहराता जाएगा।

विश्व के नेताओं के नाम अपने पत्रों में आपने पवित्र क़ुर्आन की निम्नलिखित शिक्षा पर विशेष रूप से बल दिया

"और तुम्हें किसी जाति की शत्रुता इस कारण से कि उन्होंने तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोका था, इस बात पर न उकसाये कि तुम अत्याचार करो। और नेकी और तक़्वा में एक दूसरे का सहयोग करो और पाप और अत्याचार (वाले कामों) में सहयोग न करो और अल्लाह से डरो । निस्सन्देह अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है।"

(सूरह अलमाइदह आयत - 3)

राष्ट्रपति ओबामा को आपने लिखा :

"जैसा कि हम सभी परिचित हैं राष्ट्रसंघ की विफलता और 1932 ई. के आर्थिक संकट द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण बने थे। आज के अग्रगण्य अर्थशास्त्री यह कहते हैं वर्तमान और 1932 ई. के आर्थिक संकट में बहुत सी समानताएं हैं। हम यह देखते हैं कि राजनैतिक और आर्थिक समस्याएं छोटे देशों के मध्य पुनः युद्ध का कारण बनी हैं और उन देशों में इन के कारण आंतरिक अशान्ति और असंतोष का वातावरण व्याप्त हो चुका है। इस स्थिति में अन्ततः कुछ ऐसी शक्तियां अनुचित लाभ उठाकर संसार की बागडोर सम्भाल लेंगी जो विश्व युद्ध का कारण बन जाएंगी। यदि छोटे देशों के परस्पर विवादों का राजनीति अथवा कूटनीति से समाधान नहीं ढूंढा जा सकता तो इस के कारण विश्व में नए गुटों और समूहों का जन्म होगा और यह स्थिति तृतीय विश्व युद्ध का पूर्वावलोकन प्रस्तुत करेगी। अतः मेरा यह विश्वास है कि इस समय विश्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाए यह अतिआवश्यक और नितान्त अनिवार्य है कि हम विश्व को इस विनाश से सुरक्षित रखने के अपने प्रयासों में शीघ्र से शीघ्र तीव्रता पैदा करें। इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि मानवजाति परमात्मा को पहचाने जो कि एक है और हमारा स्रष्टा है क्योंकि केवल यही मानवता के जीवन को सुरक्षित बना सकता है, वरन् यह संसार निरन्तर आत्म-विनाश की ओर तीव्रता से अग्रसर होता रहेगा।"

राष्ट्रपति पुतिन को आपने लिखा :

"सीरिया की वर्तमान चिन्ताजनक परिस्थिति ने मुझे इस बात के लिए प्रेरित किया कि मैं आपको पत्र लिखूं और आपने युद्ध-क्षेत्र की

बजाए वार्तालाप के द्वारा समस्याओं का समाधान करने के लिए विश्व के विभिन्न देशों में सहमति बनाने का जो प्रयास किया है उसके लिए आपका धन्यवाद और सराहना करूं। किसी भी प्रकार के आक्रमण से न केवल इस क्षेत्र में युद्ध छिड़ जाएगा अपितु इसके विश्व-युद्ध में परिवर्तित होने की प्रबल संभावना है। एक पाश्चात्य समाचार पत्र में आपका एक लेख पढ़ कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई जिस में आपने इस बात को मुख्य रूप से प्रस्तुत किया कि आक्रमण करना अति विनाशकारी होगा और इसके परिणामस्वरूप विश्व-युद्ध की सम्भावना हो सकती है। आपके इसी संकल्प के कारण महा-शक्तियों ने आक्रमण का मार्ग त्याग कर सहमति एवं संधि का मार्ग अपनाया और इस समस्या का राजनैतिक समाधान निकालने पर सहमति व्यक्त की। निश्चय ही मेरा यह विश्वास है कि इस सहमति ने विश्व को एक महाविनाशकारी एवं विध्वंसक स्थिति से बचा लिया है। मैं विशेष रूप से आपके इस विचार से सहमत हूं कि यदि विश्व के देश अपने-अपने स्तर पर और एक-पक्षीय निर्णय लेंगे तो संयुक्त राष्ट्र का भी वही अन्त होगा जो कि लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) का हुआ था। ......"

सीरिया और ईरान का संकट सन् 2013 के अन्तिम छः माह में काफ़ी सीमा तक शान्त हो गया था। ब्रिटेन की सरकार ने सीरिया में सैन्य हस्तक्षेप के विरोध में मतदान किया था, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका में सीरिया के रासायनिक शस्त्रों के निपटारे सम्बन्धी एक योजना पर सहमति बन गई थी, संयुक्त राज्य अमेरिका ने सीरिया पर आक्रमण करने का विचार त्याग दिया और इसी प्रकार विश्व की महान शक्तियों ने ईरान के साथ एक ऐसे परमाणु समझौते पर सहमति प्रकट

की जो सभी के लिए स्वीकार्य था। सभी वर्ग उस दिशा में प्रगति का स्वागत करते हैं जिस ओर हुज़ूर विश्व को जाने का आग्रह करते आ रहे थे परन्तु अभी हम सुरक्षित स्थिति से बहुत दूर हैं और हमें विश्व-शान्ति का चिरस्थायी समाधान ढूंढने के लिए अत्यधिक प्रयास करना होगा।

यह हमारी सच्ची प्रार्थना है कि संकट की वर्तमान परिस्थितियों में इस पुस्तक में संकलित सुझाव एवं समाधान मानवता के लिए मार्गदर्शन का स्रोत सिद्ध हों जिसके फलस्वरूप न्याय और विनम्रता के सिद्धान्तों का पालन करते हुए परमात्मा की शरण में जाकर मनुष्य को चिरस्थायी शान्ति प्राप्त हो - आमीन

प्रकाशक

भाषण

विश्व संकट पर इस्लाम का दृष्टिकोण

ब्रिटिश पार्लियामेंट, द हाउस ऑफ कॉमन्ज़
लन्दन, यू.के. 2008

Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba] delivering the keynote address at the House of Commons

Official tour of the House of Commons, courtesy of Justine Greening MP

Seated: Lord Avebury (Liberal Democrats Spokesman for Foreign Affairs), Rt. Hon. Hazel Blears MP (Secretary of State for Communities and Local Government); Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba]; Justine Greening MP (Shadow Treasury Minister); Gillian Merron MP (Foreign Office Minister); Councillor Louise Hyams (the Lord Mayor of Westminster). Standing: Jeremy Hunt MP (Shadow Culture Minister); Rafiq Hayat (National Amir AMA UK); Virendra Sharma MP, Rt. Hon. Malcolm Wicks MP (Former Minister at Department for Business, Enterprise and Regulatory Reform); Rob Marris MP, Simon Hughes MP (President of the Liberal Democrats Party); Martin Linton MP; Alan Keen MP.

परिचय

22 अक्तूबर 2008 को हाऊस ऑफ कामन्स (ब्रिटिश पार्लियामेंट) में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह पंचम, विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के प्रमुख का ऐतिहासिक भाषण।

यह स्वागत समारोह ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के सौ वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर अहमदिया मुस्लिम जमाअत के मुख्य कार्यालय मस्जिद फ़ज़ल के संसदीय क्षेत्र Putney के सांसद माननीय Justine Greening द्वारा आयोजित किया गया था।

इस समारोह में माननीय Gillian Merron MP, Rt Hon Hazel Blears MP, Alan Keen MP, Dominic Grieve MP, Simon Hughes MP, Lord Eric Avebury के अतिरिक्त कई प्रतिष्ठित पत्रकार, राजनीतिज्ञ तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के विशेषज्ञ उपस्थित हुए।

विश्व संकट पर इस्लाम का दृष्टिकोण

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

सर्वप्रथम मैं समस्त आदरणीय अतिथि सज्जनों, सांसदों का धन्यवाद करना चाहता हूं जिन्होंने एक धार्मिक संगठन के पेशवा को कुछ विचार प्रकट करने का अवसर प्रदान किया। मैं अपने बहुत ही आदरणीय संसद सदस्य जस्टिन ग्रीनिंग जो कि हमारे क्षेत्र से सांसद हैं का नितान्त आभारी हूं जिन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में रहने वाली कथित छोटी सी जमाअत के लिए शतवर्षीय जुबली के अवसर पर इस आयोजन को सफल बनाने में बहुत योगदान दिया है। उनका यह योगदान उनके निर्वाचन क्षेत्र के समस्त लोगों और समुदायों की भावनाओं के प्रति उनकी रुचि प्रदर्शित करता है तथा उनकी महानता और उदारता को प्रदर्शित करता है।

यद्यपि जमाअत अहमदिया एक छोटी सी जमाअत है तथापि यह इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का प्रतिनिधित्व करने वाली जमाअत है। मैं यह अवश्य कहना चाहता हूं कि प्रत्येक वह अहमदी जो ब्रिटेन में

रहता है वह इस देश का नितान्त वफ़ादार नागरिक है और इससे प्रेम करता है और यह हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं का ही परिणाम है जिन्होंने हमें यह शिक्षा दी है कि अपने देश से प्रेम करना ईमान का एक अनिवार्य अंग है जिसे पृथक नहीं किया जा सकता।☆

जमाअत अहमदिया के संस्थापक जिन्हें हम मसीह मौऊद और युग का अवतार एवं सुधारक समझते हैं ने इस्लामी शिक्षाओं को उनकी व्याख्या करते हुए उचित परिप्रेक्ष्य में विश्व के समक्ष बड़े ठोस रंग में प्रस्तुत किया है।

आपने अपने दावे की घोषणा करते हुए फ़रमाया कि परमेश्वर ने मुझ पर दो दायित्व अनिवार्य किए हैं -

(1) परमेश्वर के प्रति अधिकार

(2) उसकी सृष्टि के प्रति अधिकार

आपने इस संबंध में अतिरिक्त वर्णन करते हुए कहा कि इन दोनों अधिकारों में से सृष्टि के प्रति अधिकारों को पूर्ण करना अधिक कठिन एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है।☆☆

ख़िलाफ़त के संदर्भ में आपको यह भय होगा कि कभी ऐसा समय भी आ सकता है कि जब इतिहास दोहराया जाएगा तो इस प्रकार के नेतृत्व के कारण युद्ध आरंभ हो जाएगा। यह इस्लाम पर एक आरोप

☆ तफ़्सीर-ए-हक़्क़ी सूरह अलक़सस नं. 86 और फ़त्हुलबारी फ़ी शरहु सहीउल बुख़ारी, बाब क़ौलिल्लाह तआला व'तुल बुयूता... और तुहफ़तुल अहवादी, शरह जामिअतुत्तिरमिज़ी बाब मा यक़ुल

☆☆ मल्फ़ूज़ात जिल्द - 1, पृष्ठ - 326

लगाया गया है परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यदि ख़ुदा ने चाहा तो ख़िलाफत-ए-अहमदिया सदैव शान्ति और समन्वय का झण्डा ऊंचा करने वाली जानी जाएगी। इसी प्रकार यह हर उस देश की वफ़ादार रहेगी जिसमें इसके अनुयायी रह रहे होंगे। ख़िलाफत-ए-अहमदिया इस सन्दर्भ में मसीह-व-महदी के मिशन को ही हमेशा आगे बढ़ाने का प्रयास करती रहेगी। अतः ख़िलाफत से भयभीत होने की कदापि कोई आवश्यकता नहीं। यह ख़िलाफत जमाअत को उन दो कर्त्तव्यों को पूर्ण करने की ओर आकृष्ट करती है जिन्हें पूर्ण करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अवतरित हुए। यही कारण है कि यह जमाअत सम्पूर्ण विश्व में शान्ति और समन्वय स्थापित करने का प्रयास करती है।

समय की कमी को दृष्टिगत रखते हुए अपने मूल विषय की ओर आता हूं। यदि हम गत कुछ सदियों का निष्पक्ष विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात होगा कि तत्कालीन युद्ध वास्तव में धार्मिक युद्ध न थे अपितु विश्व-राजनीति से संबंधित युद्ध थे। यहां तक कि वर्तमान-लड़ाई-झगड़े तथा जातियों के मध्य शत्रुताओं से यह विदित होता है कि इन सब के परिप्रेक्ष्य में राजनैतिक, क्षेत्रीय एवं आर्थिक स्वार्थ होते हैं।

मुझे यह आशंका है कि विश्व के देशों की राजनैतिक, आर्थिक गतिविधियां और समस्त प्रेरक विश्व युद्ध की ओर ले जा सकते हैं। केवल विश्व के ग़रीब देश ही नहीं अपितु अमीर देश भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। अतः यह विश्व शक्तियों का कर्त्तव्य है कि वे बैठकर विचार करें तथा विनाश के कगार पर खड़ी मानवता को बचाएं।

ब्रिटेन भी उन देशों में से एक है जो विकसित और विकासशील देशों पर अपना दबाव अथवा प्रभाव डाल सकता है यदि आप चाहें तो

न्याय और समानता की मांगों को पूर्ण करते हुए विश्व का पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। यदि हम निकट अतीत को देखें तो हमें ज्ञात होता है कि ब्रिटेन ने बहुत से देशों पर राज्य किया और विशेष तौर पर उपमहाद्वीप भारत तथा पाकिस्तान पर तो अपने पीछे न्याय और धार्मिक स्वतंत्रता का एक उच्च आदर्श छोड़ा। जमाअत अहमदिया इसकी साक्षी है और जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने ब्रिटेन की सरकार की न्याय और धार्मिक स्वतंत्रता पर आधारित राजनीति की अत्यन्त प्रशंसा और सराहना की है। जब जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने आदरणीया महारानी विक्टोरिया को उनकी हीरक जयन्ती के अवसर पर मुबारकबाद प्रस्तुत की तथा उनको इस्लाम का सन्देश पहुंचाया तो आपने विशेष रूप से ब्रिटिश राज्य के न्याय और समानता की मांगों को पूरा करने को दृष्टिगत रखते हुए यह दुआ की कि परमेश्वर उस सरकार को उसकी इस सहृदयता का उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

अत: हमारा इतिहास बताता है कि जब भी ब्रिटेन ने यह न्याय का प्रदर्शन किया हमने उसकी सराहना की। हमें आशा है कि भविष्य में भी न केवल धार्मिक मामलों में अपितु प्रत्येक पहलू से न्याय ही ब्रिटेन की एक स्पष्ट विशेषता रहेगी और यह कि आप अतीत के अपने अच्छे गुणों को कभी नहीं भूलेंगे।

आज विश्व में नितान्त बेचैनी और उत्तेजना है। हम देख रहे हैं कि छोटी-छोटी लड़ाइयां प्रारंभ हो चुकी हैं जबकि कुछ स्थानों पर विश्व शक्तियां शान्ति स्थापित करने की दावेदार हैं। अत: यदि न्याय की मांगें पूर्ण न की गईं तो इन प्रादेशिक युद्धों की अग्नि और ज्वाला में तीव्रता

आ सकती है और सम्पूर्ण विश्व को युद्ध की चपेट में ले सकती है। अत: मेरा आपसे सविनय निवेदन है कि विश्व को विनाश से बचाएं।

अब मैं संक्षिप्त तौर पर वर्णन करूंगा कि विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए इस्लाम क्या शिक्षाएं प्रस्तुत करता है या यह कि उन शिक्षाओं के अनुसार विश्व में किस प्रकार शान्ति की स्थापना हो सकती है। मेरी यह दुआ है कि विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए अपने प्राथमिक संबोध्य अर्थात् मुसलमान इस पर अमल करने वाले हों तथा विश्व के समस्त देशों एवं महाशक्तियों तथा सरकारों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे भी इस का पालन करें।

वर्तमान युग में सम्पूर्ण विश्व एक अन्तर्राष्ट्रीय ग्राम के रूप में इस प्रकार बन चुका है कि इससे पूर्व इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। हमें मानव होने की दृष्टि से अपने कर्त्तव्यों को समझना चाहिए तथा मानवाधिकार संबंधी उन समस्याओं के समाधान की ओर ध्यान देना चाहिए जिससे विश्व शान्ति तथा अमन स्थापित हो सके। स्पष्ट है कि यह प्रयत्न न्यायसंगत हो तथा न्याय की मांगों को पूरा करने वाला हो।

वर्तमान समस्याओं में से एक ज्वलंत समस्या प्रत्यक्ष तौर पर या अप्रत्यक्ष तौर पर धर्म के कारण पैदा हुई है। इसमें कुछ मुसलमान गिरोह असंवैधानिक तौर पर न केवल ग़ैर मुस्लिम सैनिकों तथा निर्दोष नागरिकों की हत्या करने तथा हानि पहुंचाने के लिए मानव बमों तथा विस्फोटकों का प्रयोग करते हैं अपितु साथ ही निर्दोष मुसलमानों तथा बच्चों की निर्मम हत्या भी करते हैं। यह अत्याचारपूर्ण कार्य करने की इस्लाम कदापि अनुमति नहीं देता।

मुसलमानों के इस क्रूर आचरण के कारण ग़ैर मुस्लिम देशों में एक

गलत भावना ने जन्म ले लिया है। परिणामस्वरूप उस समाज का एक भाग खुल्लम-खुल्ला इस्लाम के विरुद्ध दुष्प्रचार करता है जबकि दूसरा यद्यपि सार्वजनिक तौर पर बातें नहीं करता परन्तु इस्लाम के बारे में वह भी हृदयों में एक अच्छी भावना नहीं रखता। इस बात ने पश्चिमी देशों की जनता के हृदयों में तथा ग़ैर मुस्लिम देशों में मुसलमानों के बारे में अविश्वास की भावना पैदा कर दी है। विडम्बना यह कि इन कुछ मुसलमानों के कथित आचरण के कारण परिस्थितियों में सुधार होने के स्थान पर ग़ैर मुस्लिमों की प्रतिक्रिया दिन-प्रतिदिन ख़राब होती जा रही है।

इस ग़लत प्रतिक्रिया का प्रथम स्पष्ट उदाहरण इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र और पवित्र क़ुर्आन जो कि मुसलमानों की पवित्र पुस्तक है, पर प्रहार है। इस परिप्रेक्ष्य में ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों चाहे उनका संबंध किसी भी पार्टी से हो तथा इसी प्रकार ब्रिटेन के बुद्धिजीवियों की विचारधारा कुछ अन्य देशों के राजनीतिज्ञों से विपरीत रही है जिसके लिए मैं आपका आभारी हूं। इस प्रकार भावनाओं को ठेस पहुंचाने से नफ़रत, घृणा और परस्पर नीचा दिखाने की भावना को बढ़ावा देने के अतिरिक्त और क्या लाभ हो सकता है। यह घृणा कुछ विशेष चरमपंथी मुसलमानों को ग़ैर इस्लामी कार्य करने पर उकसाती है जो कि बदले में कई ग़ैर मुस्लिमों को विरोध प्रकट करने का अवसर प्रदान करती है।

बहरहाल जो चरमपंथी नहीं हैं और जो इस्लाम के पैग़म्बर से बहुत प्रेम करते हैं उन्हें इन आक्रमणों से बहुत कष्ट पहुंचता है तथा इस संदर्भ में जमाअत अहमदिया अग्रसर है। हमारा प्रमुख और सर्वाधिक अनिवार्य कर्त्तव्य हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र जीवन

चरित्र और इस्लाम की सुन्दर और उत्तम शिक्षा को संसार के समक्ष प्रदर्शित करना है। हम जो विश्व के समस्त नबियों (अवतारों) का सम्मान करते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि वे सभी परमेश्वर की ओर से थे उनमें से किसी के बारे में भी अपमानजनक बातें नहीं कहते परन्तु जब हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में निराधार और झूठे आरोप सुनते हैं तो हमें बहुत कष्ट पहुंचता है।

वर्तमान युग में जबकि विश्व दो ब्लाकों में विभाजित हो रहा है, उग्रवाद में तीव्रता आ रही है और आर्थिक परिस्थितियां बहुत खराब हो रही हैं इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि हर प्रकार की घृणा को समाप्त किया जाए तथा शान्ति की नींव रखी जाए। यह तभी संभव हो सकता है जब परस्पर सभी की भावनाओं का आदर किया जाए। यदि यह कार्य उचित तौर पर पूर्ण ईमानदारी और सदभावनापूर्वक न किया गया तो यह परिस्थितियां उस सीमा तक भयानक हो जाएंगी जिन पर नियंत्रण पाना असंभव हो जाएगा। मैं इस बात की बहुत सराहना करता हूं कि आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ पश्चिमी देशों ने निर्धन और विकासशील देशों के लोगों को, जिनमें मुसलमान भी सम्मिलित हैं नितान्त उदारता के साथ अपने देशों में रहने की अनुमति दी।

वास्तविक न्याय इस बात की मांग करता है कि उन लोगों की भावनाओं और धार्मिक रीति-रिवाजों का भी आदर किया जाए। यही वह उपाय है जिससे लोगों की मानसिक शान्ति को क़ायम रखा जा सकता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जब किसी व्यक्ति की मानसिक शान्ति को भंग किया जाता है तो उस समाज की मानसिक शान्ति भी प्रभावित होती है।

जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूं कि मैं ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों एवं व्यवस्थापकों का न्याय की मांगों को पूरा करने तथा इस प्रकार का हस्तक्षेप न करने पर कृतज्ञ हूं।

वास्तव में यही इस्लामी शिक्षा है जो पवित्र क़ुर्आन हमें देता है। पवित्र क़ुर्आन यह घोषणा करता है कि -

धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं।

(सूरह बक़रह आयत - 257)

यह आदेश न केवल उस आरोप का खंडन करता है कि इस्लाम को तलवार के बल पर फैलाया गया अपितु यह शिक्षा मुसलमानों को यह भी बताती है कि किसी धर्म को स्वीकार करना मनुष्य और उसके परमेश्वर के मध्य का मामला है और तुम्हें किसी भी परिस्थिति में इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। प्रत्येक को यह अनुमति है कि वह अपनी आस्थानुसार जीवनयापन करे तथा अपने धार्मिक रीति रिवाजों का पालन करे। परन्तु धर्म के नाम पर यदि कोई ऐसी परम्पराएं हों जो दूसरों को हानि पहुंचाएं तथा राष्ट्रीय कानूनों के विपरीत हों तो ऐसी स्थिति में उस देश में कानून स्थापित करने वाले हरकत में आ सकते हैं क्योंकि यदि किसी धर्म में कोई अप्रिय परम्परा प्रचलित है तो यह परमेश्वर के किसी नबी की शिक्षा नहीं हो सकती।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति स्थापित करने के लिए यही मूल सिद्धान्त है।

इसके अतिरिक्त इस्लाम हमें यह शिक्षा देता है कि यदि तुम्हारे धर्मांतरण के कारण कोई समाज या कोई वर्ग अथवा कोई सरकार तुम्हारी धार्मिक परम्पराओं की अदायगी में हस्तक्षेप करने का प्रयास

करती है और तत्पश्चात् परिस्थितियां आपके अनुकूल हो जाएं तब भी सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि तुम फिर भी हृदय में कोई द्वेष, वैमनस्य और कपट नहीं रखोगे। तुम्हें प्रतिशोध लेने के बारे में नहीं सोचना चाहिए अपितु न्याय और समानता स्थापित करनी चाहिए। पवित्र क़ुर्आन का कथन है -

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में साक्षी बन जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात की ओर प्रेरित न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़्वा के सबसे अधिक निकट है और अल्लाह से डरो। जो तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है। (सूरह अलमाइदह आयत - 9)

समाज में शान्ति स्थापित रखने के लिए यही शिक्षा है कि अपने शत्रु से भी न्याय से काम लेना है और न्याय को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इस्लाम का प्रारंभिक इतिहास हमें यह बताता है कि इस शिक्षा का पालन करते हुए न्याय की समस्त मांगों को पूर्ण किया गया। मैं यहां इसके बहुत उदाहरण नहीं दे सकता, परन्तु इस वास्तविकता पर इतिहास साक्षी है कि मक्का-विजय के पश्चात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों से कोई प्रतिशोध नहीं लिया जिन्होंने आप[स.] को कठोर यातनाएं और कष्ट पहुंचाए अपितु उन्हें क्षमा कर दिया तथा उन्हें उनकी अपनी आस्थाओं पर रहने दिया। वर्तमान युग में शत्रु के प्रति न्याय की सम्पूर्ण अनिवार्यताओं को पूर्ण करने पर ही स्थायी रूप से शान्ति स्थापित हो सकती है। न केवल कट्टरवादियों के विरुद्ध युद्धों में अपितु अन्य सभी

युद्धों में। ऐसी शान्ति ही वास्तव में स्थायी हो सकती है।

गत शताब्दी में दो युद्ध हुए। उसके कारण जो भी थे, परन्तु यदि हम गहराई से विचार करें तो केवल एक ही कारण दृष्टिगोचर होता है और वह यह है कि प्रथम - न्याय को यथोचित स्थापित नहीं किया गया तथा प्रतिक्रिया स्वरूप जिसे एक बुझी गई अग्नि विचार किया गया वह गर्म राख में परिवर्तित हो गई जो कि धीरे-धीरे सुलगती रही और अन्त में उसने पुनः एक ज्वाला में परिवर्तित होकर एक विकराल रूप ले लिया तथा समस्त विश्व को अपनी लपेट में ले लिया।

आज अशान्ति बढ़ रही है तथा युद्ध एवं शान्ति को यथावत् रखने के लिए कार्यवाहियां एक अन्य विश्व-युद्ध का सूचक बनती जा रही हैं। इस प्रकार वर्तमान आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयां भी इस परिस्थिति को बढ़ावा देने का एक कारण होंगी।

पवित्र क़ुर्आन ने विश्व-शान्ति स्थापित करने के लिए बड़े ही सुनहरे सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं। यह एक स्पष्ट वास्तविकता है कि लालसा शत्रुता को जन्म देती है। कभी यह सीमाओं का अतिक्रमण करने के रूप में प्रकट होती या फिर प्राकृतिक सम्पदाओं पर अधिकार करने के रूप में अथवा दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए। और फिर यह शत्रुता अन्याय और अत्याचार की ओर ले जाती है। चाहे यह अत्याचार क्रूर निरंकुश शासकों की ओर से हो जो प्रजा के अधिकारों का हनन करते हैं तथा अपने व्यक्तिगत हितों के लिए अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं या फिर ये अत्याचार आक्रमणकारी सेना के द्वारा हों। प्रायः इन अत्याचारों के शिकार लोगों का चीत्कार और क्रोध बाह्य देशों को आवाज़ देता है।

बहरहाल इस्लाम के पैग़म्बर ने हमें निम्नलिखित सुनहरे सिद्धान्त

सिखाए हैं कि अत्याचारी और पीड़ित दोनों की सहायता करो।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी[रज़ि.] ने पूछा कि - अत्याचार से पीड़ित की सहायता करना तो समझ में आता है परन्तु एक अत्याचारी की सहायता वे किस प्रकार कर सकते हैं ? आप[स.] ने उत्तर दिया - उसके हाथ को अत्याचार से रोक कर। क्योंकि उसका अत्याचार में बढ़ जाना उसे परमेश्वर के अज़ाब का पात्र बनाएगा। (सही बुख़ारी, हदीस संख्या - 6952)

अत: उस पर दया करते हुए उसे बचाने का प्रयत्न करना है। यह सिद्धान्त समाज के सब से छोटे स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी व्याप्त है। इस सन्दर्भ में पवित्र क़ुर्आन की आयत है -

यदि मोमिनों के दो गिरोह आपस में झगड़ पड़ें तो उन दोनों में संधि करा दो फिर यदि संधि हो जाने के पश्चात् उन दोनों में से कोई एक दूसरे पर चढ़ाई करे तो सब मिल कर उस चढ़ाई करने वाले के विरुद्ध युद्ध करो यहां तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए फिर यदि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए तो न्याय के साथ (उन दोनों लड़ने वालों) में संधि करा दो तथा न्याय को दृष्टिगत रखो। अल्लाह न्याय करने वालों को बहुत पसन्द करता है।

(अलहुजुरात आयत - 10)

यद्यपि यह शिक्षा मुसलमानों से संबंधित है परन्तु फिर भी इस सिद्धान्त को अपनाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति की नींव रखी जा सकती है। शान्ति को स्थापित रखने के लिए जैसा कि आरंभ में यह वर्णन किया गया है कि शान्ति की प्राथमिक मांग न्याय है और न्याय के सिद्धान्त

को अपनाने के बावजूद भी यदि शान्ति-स्थापना के प्रयास विफल हो जाते हैं तब संयुक्त रूप से उस गिरोह के विरुद्ध युद्ध करो जिस ने अन्याय किया है और उस समय तक युद्ध करो जब तक कि वह अन्याय करने वाला गिरोह शान्ति स्थापित करने के लिए तैयार न हो जाए। न्याय की मांग यह है कि प्रतिशोध लेने का प्रयास न किया जाए, प्रतिबंध न लगाओ, हर प्रकार से अन्याय करने वाले पर दृष्टि रखो परन्तु साथ ही उसकी स्थिति को सुधारने और उत्तम बनाने का प्रयत्न करो।

इस बेचैनी को समाप्त करने के लिए जो कि आजकल विश्व के कुछ देशों में पाई जाती है और विशेष तौर पर दुर्भाग्य से कुछ मुस्लिम देशों में। अत: वे देश जो Veto करने का अधिकार रखते हैं उन्हें यह स्पष्ट करना चाहिए कि क्या न्याय को यथोचित कार्यान्वित किया गया अथवा नहीं। जब कभी सहायता की आवश्यकता पड़ी तो शक्तिशाली देशों की ओर हाथ बढ़ाए गए।

जैसा कि मैंने पहले वर्णन किया है कि हम इस वास्तविकता के साक्षी हैं कि ब्रिटेन सरकार का इतिहास रहा है कि हमेशा न्याय को क़ायम रखा है और इस बात ने मुझे प्रोत्साहन दिया है कि मैं आपका ध्यान उनमें से कुछ मामलों की ओर आकृष्ट करूं।

विश्व में शान्ति स्थापित करने का एक अन्य सिद्धान्त जिसकी हमें शिक्षा दी गई है वह यह है कि लालसाग्रस्त होकर दूसरों की धन-सम्पत्ति को न देखना।

पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है -

"और हमने उनमें से कुछ लोगों को सांसारिक जीवन के जो कुछ ऐश्वर्य के सामान अस्थायी तौर पर दे रखे हैं तू

उनकी ओर अपनी दोनों आंखों को फैला-फैला कर न देख (क्योंकि यह सामान उन्हें इसलिए दिया गया है) ताकि हम इसके द्वारा उनकी परीक्षा लें...... "

(ताहा आयत - 132)

दूसरों की धन-सम्पत्ति से डाह और लालसा भी संसार में बढ़ी हुई अशान्ति का एक कारण है। व्यक्तिगत तौर पर जैसा कि कहावत है कि 'पड़ोसियों से प्रतिस्पर्धा करने की होड़ ने कभी न समाप्त होने वाली लालसा को जन्म दिया है।' इस वस्तु का परिणाम समाप्त न होने वाली लालसा है जिसने सामाजिक शान्ति को नष्ट कर दिया है। राष्ट्रीय स्तर पर लालच पर आधारित प्रतिस्पर्धा आरंभ हुई जो कि विश्व को विनाश की ओर ले गई। इतिहास से यह सिद्ध है। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति अनुमान लगा सकता है कि दूसरों की धन-सम्पत्ति की इच्छा द्वेष, लालसा एवं हानि का कारण बनी।

इसीलिए परमेश्वर का कथन है कि प्रत्येक को अपने ही साधनों पर निर्भर रहना चाहिए तथा उन्हीं से लाभ उठाना चाहिए। सीमावर्ती अथवा दूसरे के अधिकार वाले क्षेत्र से लाभ प्राप्त करने का प्रयास करना तो किसी के स्वामित्व अथवा उसके अधिकृत क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पदाओं से लाभ प्राप्ति का प्रयास होता है।

देशों के गठबंधन एवं ब्लाक बनाने का उद्देश्य भी कुछ देशों के प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार करना होता है। इस सन्दर्भ में बहुत से लेखक जो इससे पूर्व कुछ सरकारों के एडवाइज़र (सलाहकार) रह चुके थे, उन्होंने ऐसी पुस्तकें लिखी हैं जिनमें इस बात का विवरण मौजूद है कि कुछ देश किस प्रकार दूसरे देशों की प्राकृतिक सम्पदाओं

पर अधिकार करने के प्रयास करते हैं। ये लेखक कहां तक सच्चे हैं यह तो उन्हें ही ज्ञात होगा और परमेश्वर सबसे अधिक जानता है, परन्तु इन लेखों का अध्ययन करके जो स्थिति उभर कर सामने आती है वह उन लोगों के हृदयों में अत्यन्त क्रोध का कारण बनती है जो अपने निर्धन देशों के प्रति वफ़ादार हैं। यह बात भी उग्रवाद का पोषण करने तथा विनाशकारी शस्त्र बनाने की प्रतिस्पर्धा का एक बड़ा कारण है।

वर्तमान संसार भूतकाल की तुलना में स्वयं को अधिक गंभीर, बुद्धिमान और शिक्षित समझता है, यहां तक कि निर्धन देशों में भी ऐसे बुद्धिमान लोग हैं जो अपने कार्य-क्षेत्र में उच्च शिक्षा-प्राप्त हैं। बहुत ही उच्च योग्यता रखने वाले विवेकशील लोग विश्व के प्रख्यात शोध संस्थानों (Research Centres) में इकट्ठे कार्य करते हैं। इस परिदृश्य में यह कल्पना की जानी चाहिए थी कि काश ये लोग इकट्ठे होते और संयुक्त तौर पर सोचने के गलत ढंगों एवं अतीत की मूर्खताओं को समाप्त करने का प्रयास करते, जो शत्रुताओं और भयानक युद्धों का कारण बनीं। ईश्वर-प्रदत्त विवेक और विज्ञान की प्रगति को मानव जाति के हित और कल्याण तथा दूसरों की प्राकृतिक सम्पदाओं से वैध और उचित ढंगों से लाभान्वित होने में लगाना चाहिए था।

परमेश्वर ने प्रत्येक देश को प्राकृतिक सम्पदाएं प्रदान की हैं जिन्हें विश्व को शान्ति का गढ़ बनाने के लिए पूर्ण रूप से प्रयोग करना चाहिए। परमेश्वर ने बहुत से देशों को विभिन्न फसलें उगाने के लिए एक नितान्त उत्तम जलवायु और वातावरण प्रदान किया है। यदि आधुनिक टैक्नालॉजी को उचित तौर पर योजनाबद्ध रूप से खेतीबाड़ी के लिए उपयोग किया जाता तो आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती तथा संसार

से भूख की समस्या को समाप्त किया जा सकता था।

वे देश जिन्हें खनिज सम्पदाओं से सम्पन्न किया गया है उन्हें उन्नति करने और उचित मूल्यों पर स्वतंत्र तौर पर व्यापार करने देना चाहिए तथा एक देश को दूसरे देश के खनिज-पदार्थों से लाभ प्राप्त करना चाहिए। अत: यही उचित मार्ग है जिसे परमेश्वर ने पसन्द किया है।

परमेश्वर अपने पैग़म्बरों को लोगों के पास इसलिए भेजता है ताकि उन्हें वे ऐसे मार्ग बताएं जो उन्हें परमेश्वर के निकट ले जाएं। इसके साथ ही परमेश्वर कहता है कि धर्म के संबंध में पूर्ण स्वतंत्रता है। हमारी यह आस्था है कि यद्यपि वास्तविक प्रतिफल या दण्ड मृत्योपरान्त मिलेगा परन्तु ईश्वर द्वारा स्थापित व्यवस्था के अन्तर्गत जब उसकी प्रजा पर अत्याचार किया जाता है तथा न्याय और सद्‌भावना की अवहेलना की जाती है तब प्रकृति के नियम के अनुसार इस संसार में भी उसके परिणाम और प्रभाव देखे जा सकते हैं। ऐसे अन्यायों पर बड़ी कठोर प्रतिक्रिया होती है तथा इस बात को कोई नहीं देखता कि वह प्रतिक्रिया उचित है या अनुचित।

संसार पर विजय प्राप्त करने का उचित मार्ग यह है कि निर्धन देशों को उनका उचित स्थान प्रदान करने के लिए पूर्ण रूप से प्रयत्न करना चाहिए।

वर्तमान युग की एक बड़ी समस्या आर्थिक संकट है जिसे पारिभाषिक तौर पर (Credit Crunch) कहा गया है। चाहे यह कितना ही विचित्र लगे परन्तु साक्ष्य एक वास्तविकता की ओर संकेत करती है। पवित्र क़ुर्आन यह कहते हुए हमारा मार्ग-दर्शन करता है कि ब्याज छोड़ दो क्योंकि ब्याज एक ऐसा अभिशाप है जो पारिवारिक,

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए एक ख़तरा है। हमें सतर्क किया गया है कि जो कोई ब्याज लेता है वह एक दिन अवश्य उस व्यक्ति के समान हो जाएगा जिसे शैतान ने पागलपन में ग्रस्त कर दिया हो। अत: हम मुसलमानों को सतर्क किया गया है कि ऐसी परिस्थिति से बचने के लिए ब्याज का व्यवसाय बन्द कर दिया जाए, क्योंकि ब्याज के तौर पर जो राशि ली जाती है वह तुम्हारे धन को बढ़ाती नहीं यद्यपि कि देखने में यही लगे कि यह बढ़ाती है, परन्तु एक ऐसा समय अवश्य आता है कि उसके वास्तविक प्रभाव प्रकट होते हैं। हमें अतिरिक्त तौर पर सावधान किया गया है कि हमें ब्याज के व्यवसाय में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं है इस चेतावनी के साथ कि यदि हम ऐसा करते हैं तो यह परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध करने के समान है। यह बात आजकल के Credit Crunch से बिल्कुल स्पष्ट है। प्रारंभ में ऐसे लोग थे जो सम्पत्ति (Property) खरीदने के लिए धन ऋण लेते थे परन्तु इससे पूर्व के वे उस सम्पत्ति के स्वामी बन सकें वे ऋण के बोझ तले दब कर मर जाते थे। परन्तु अब तो ऐसी सरकारें हैं जो स्वयं ऋणग्रस्त हैं जैसे उन पर पागलपन की मार पड़ गई है। बड़ी-बड़ी कम्पनियां दीवालिया हो चुकी हैं। कुछ बैंक और फाइनेंस कम्पनियां बन्द कर दी गईं या फिर उन्हें आर्थिक संकट से बचाया गया। यह परिस्थिति प्रत्येक देश में जारी है चाहे वह अमीर हो या ग़रीब। आप इस संकट के संबंध में मुझ से अधिक जानते हैं। धन जमा कराने वालों के धन बरबाद हो गए। अब यह बात सरकार पर निर्भर है कि वह उन्हें कैसे और किस सीमा तक बचाती है परन्तु इस समय विश्व के अधिकतर देशों में परिवारों, व्यापारियों तथा शासकों की मानसिक शान्ति नष्ट हो गई है।

क्या यह स्थिति हमें यह विचार करने पर विवश नहीं करती कि विश्व इस तर्कसंगत परिणाम पर पहुंच गया है जिस के बारे में हमें बहुत पहले सतर्क किया गया था ? परमेश्वर ही अधिक जानता है कि इस परिस्थिति के इसके अतिरिक्त और क्या परिणाम होंगे।

परमेश्वर ने कहा है कि शान्ति की ओर आओ। जिस का आश्वासन केवल इस अवस्था में दिया जा सकता है जब एक शुद्ध और सामान्य व्यापार हो तथा प्राकृतिक संसाधनों एवं सम्पदाओं का उचित प्रयोग हो।

अब मैं इस्लामी शिक्षाओं के इस संक्षिप्त वर्णन को यह स्मरण कराते हुए समाप्त करता हूं कि विश्व की वास्तविक शान्ति केवल परमेश्वर की ओर ध्यान लगाने में है। परमेश्वर विश्व को यह रहस्य समझने की सामर्थ्य दे। तभी वे दूसरों के अधिकारों का निर्वाहन करने के योग्य होंगे।

अन्त में आप सब के यहां पधारने और मेरी बातें सुनने पर मैं आपका पुन: आभारी हूं।

आपका बहुत बहुत धन्यवाद

देश-भक्ति एवं देश-प्रेम से सम्बन्धित इस्लामी शिक्षाएं

सेना मुख्यालय
कोब्लेन्ज़, जर्मनी, 2012

Brigadier General Alois Bach of
the German Federal Army
with Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]
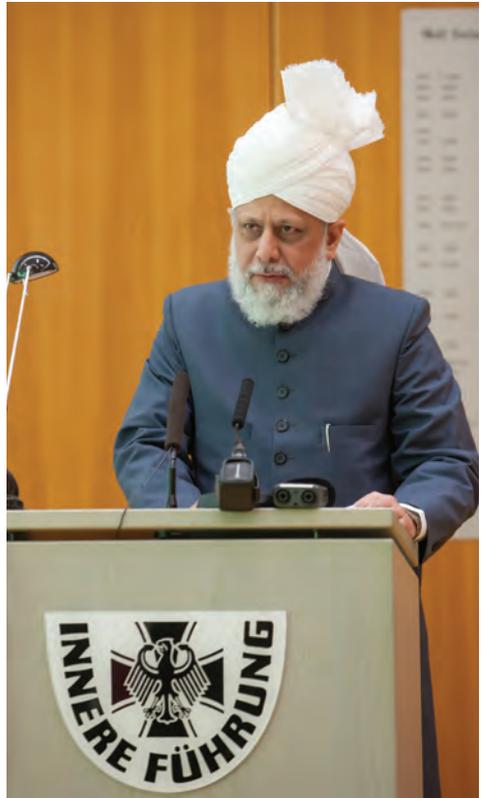
Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] addressing
the German Federal Army

1.

2.

3.

4.

1. Colonel Ulrich, 2. Brigadier General Bach, 3. Colonel Trautvetter, and 4. Colonel I.G. Janke, meeting Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

देश-भक्ति एवं देश-प्रेम के सम्बन्ध में इस्लामी शिक्षाएं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे वबरकातोहू

सर्वप्रथम मुझे आपकी ओर से अपने हैड क्वार्टर पर आमंत्रित करने और कुछ शब्द कहने का अवसर दिए जाने पर मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत का प्रमुख होने के नाते मैं आपके समक्ष इस्लामी शिक्षाओं के बारे में कुछ कहना चाहता हूं परन्तु यह तो बड़ा व्यापक विषय है कि एक सभा अथवा अल्प समय में इस पर पूर्ण रूप से प्रकाश डालना असंभव है। अत: यह आवश्यक है कि मैं इस्लामी शिक्षाओं के एक पहलू तक अपने आप को सीमित रखूं।

इस बात पर विचार करने के मध्य कि मुझे इस्लाम के किस पक्ष को आपके समक्ष रखना चाहिए तो मुझे जमाअत अहमदिया जर्मनी के नेशनल अमीर आदरणीय अब्दुल्लाह वागसहाउज़र का यह निवेदन प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने मुझ से कहा कि देश प्रेम और देश-भक्ति के बारे में इस्लामी शिक्षाओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए। इस बात ने मुझे निर्णय लेने में सहायता की। अत: अब मैं संक्षिप्त तौर पर इस सन्दर्भ में आपके समक्ष इस्लामी शिक्षाओं पर कुछ प्रकाश डालूंगा।

अपने देश से वफ़ादारी या प्रेम के शब्द केवल बोलना या सुनना बड़ा सरल है परन्तु वास्तव में इन शब्दों में ऐसे अर्थ निहित हैं जो बहुत गहरे और व्यापक हैं फिर उन शब्दों के अर्थों को पूर्ण रूप से परिधि में लेना और इस बात को समझना कि शब्दों के वास्तविक अर्थ क्या हैं और उनकी मांग क्या है एक कठिन कार्य है। बहरहाल जो भी समय उपलब्ध है उसमें मैं देश-प्रेम और देशभक्ति के संबंध में इस्लामी विचारधारा का वर्णन करने का प्रयत्न करूंगा।

सर्वप्रथम इस्लाम का एक मूल सिद्धान्त यह है कि एक व्यक्ति के शब्दों और कर्मों से किसी भी प्रकार की भिन्नता या विरोधाभास कदापि प्रकट नहीं होना चाहिए। वास्तविक वफ़ादारी एक ऐसे संबंध की मांग करती है जो निष्कपटता और सच्चाई पर आधारित हो। यह इस बात की मांग करती है कि प्रत्यक्षत: एक व्यक्ति जो प्रकट करता है वही उसके अन्त:करण में भी हो। राष्ट्रीयता के संदर्भ में इन सिद्धान्तों का बहुत महत्त्व है। अत: किसी भी देश के नागरिक के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि वह अपने देश से सच्ची वफ़ादारी के संबंध स्थापित करे। इस बात का कुछ महत्त्व नहीं है कि चाहे वह जन्मजात नागरिक हो अथवा उसने अपने जीवन में बाद में नागरिकता प्राप्त की हो, या प्रवास करके नागरिकता प्राप्त की हो या किसी अन्य माध्यम से।

वफ़ादारी एक उच्चकोटि की विशेषता है और वे लोग जिन्होंने इस विशेषता का उच्च स्तरीय प्रकटन किया वे ख़ुदा के पैग़म्बर हैं। ख़ुदा से उनका प्रेम और संबंध इतना दृढ़ था कि उन्होंने प्रत्येक परिस्थिति में उसके आदेशों को चाहे वे किसी भी प्रकार के हों दृष्टिगत रखा और उन्हें पूर्णरूप से लागू करने का प्रयास किया। यह बात उनके ख़ुदा के साथ की गई प्रतिज्ञा तथा उनकी उच्च कोटि की वफ़ादारी को प्रकट

करती है। अत: उनकी वफ़ादारी के इस मापदण्ड को हमें आदर्श के तौर पर अपनाना चाहिए। अत: आगे बढ़ने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि वफ़ादारी का वास्तविक अर्थ क्या है ?

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार वफ़ादारी की परिभाषा तथा उसका वास्तविक अर्थ किसी का असंदिग्ध तौर पर हर स्तर पर और हर परिस्थिति में कठिनाइयों से दृष्टि हटाते हुए चाहे कैसी भी कठिनाईपूर्ण दशा का सामना करना पड़े अपनी प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करना है। इस्लाम इसी वास्तविक वफ़ादारी की मांग करता है। पवित्र क़ुर्आन में विभिन्न स्थानों पर मुसलमानों को यह आदेश दिया गया है कि उन्हें अपनी प्रतिज्ञाओं और क़समों को अवश्य पूर्ण करना है, क्योंकि वे अपनी समस्त प्रतिज्ञाओं के प्रति जो उन्होंने की हैं ख़ुदा के समक्ष उत्तरदायी होंगे। मुसलमानों को यह निर्देश दिया है गया कि वे ख़ुदा और उसकी सृष्टि से की गई समस्त प्रतिज्ञाओं को उनके महत्त्व और प्राथमिकताओं के अनुसार पूरा करें।

इस सन्दर्भ में एक प्रश्न जो कि लोगों के मस्तिष्क में पैदा हो सकता है वह यह है कि चूंकि मुसलमान यह दावा करते हैं कि परमेश्वर और उसका धर्म उनके निकट अत्यधिक महत्त्व रखते हैं जिस से यह प्रकट होता है कि परमेश्वर के लिए वफ़ादारी उनकी प्रथम प्राथमिकता है और परमेश्वर से उनकी प्रतिज्ञा सर्वाधिक महत्त्व रखती है। वे इस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने का प्रयत्न करते हैं। अत: यह आस्था सामने आ सकती है कि एक मुसलमान की अपने देश के लिए वफ़ादारी तथा उसका अपने देश के कानूनों को पालन करने की प्रतिज्ञा उसके निकट अधिक प्राथमिकता नहीं रखती। अत: इस प्रकार वह विशेष अवसरों पर अपने देश के प्रति अपनी प्रतिज्ञा को क़ुर्बान करने के लिए तैयार हो जाएगा।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी है कि अपने देश से प्रेम ईमान का भाग है। अत: शुद्ध देश-प्रेम इस्लाम की मांग है। ख़ुदा और इस्लाम से सच्चा प्रेम अपने देश से प्रेम की मांग करता है। अत: यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इस स्थिति में एक व्यक्ति के ख़ुदा से प्रेम तथा अपने देश से प्रेम के संबंध में उसके हितों का कोई टकराव नहीं हो सकता जैसा कि अपने देश से प्रेम करने को ईमान का एक भाग बना दिया गया है। अत: यह बिल्कुल स्पष्ट है कि एक मुसलमान अपने संबंधित देश के लिए वफ़ादारी करने में सबसे उच्च स्तर पर पहुंचने का प्रयत्न करेगा, क्योंकि ख़ुदा तक पहुंचने और उसका सानिध्य प्राप्त करने का यह भी एक माध्यम है। अत: यह असंभव है कि ख़ुदा का वह प्रेम जो एक मुसलमान अपने अन्दर रखता है वह उसके लिए अपने देश से प्रेम और वफ़ादारी को प्रकट करने में एक रोक बन जाए। दुर्भाग्यवश हम यह देखते हैं कि कुछ विशेष देशों में धार्मिक अधिकारों को सीमित कर दिया जाता है या पूर्णतया हनन किया जाता है। अत: एक और प्रश्न उठता है कि क्या वे लोग जिनको स्वयं उनकी सरकार तंग करती है या अत्याचार करती है वे इस स्थिति में भी अपने देश के लिए वफ़ादारी और प्रेम का संबंध यथावत् रख सकते हैं। मैं बड़े खेद के साथ आपको बताता हूं कि ऐसी परिस्थितियां पाकिस्तान में विद्यमान हैं जहां सरकार ने वास्तव में हमारी जमाअत के विरुद्ध कानूनों का निर्माण किया है। यह अहमदियत विरोधी क़ानून व्यावहारिक तौर पर लागू किए जाते हैं। इस प्रकार से पाकिस्तान में समस्त अहमदी मुसलमान नियमित कानून द्वारा ग़ैर मुस्लिम ठहराए गए हैं। इस प्रकार वे स्वयं को मुसलमान कहलाने से रोक दिए गए हैं। पाकिस्तान में अहमदियों को मुसमलानों की भांति इबादत (उपासना) करने या इस्लामी परम्पराओं के

अनुसार जो उन्हें मुसलमान सिद्ध करें, का पालन करने से प्रतिबंध लगा दिया गया है। इस प्रकार से स्वयं पाकिस्तान की सरकार ने जमाअत के लोगों को उपासना के मूल अधिकार से वंचित कर दिया है।

इन परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए इस बात से अनिवार्य तौर पर आश्चर्य होगा कि इन परिस्थितियों में अहमदी मुसलमान किस प्रकार देश के क़ानूनों का पालन करें ? वे देश के लिए अपनी वफ़ादारी को किस प्रकार प्रकट कर सकते हैं ? यहां मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूं कि जहां ऐसी विकट परिस्थितियां हों तो फिर क़ानून और देश के प्रति वफ़ादारी के दो अलग-अलग मामले बन जाते हैं। हम अहमदी मुसलमानों का विश्वास है कि धर्म प्रत्येक व्यक्ति का एक व्यक्तिगत मामला है कि वह अपने लिए जो भी निर्णय करे धर्म के मामले में कोई भी ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए। अत: जहां कानून इस अधिकार में हस्तक्षेप करता है इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह बड़े अत्याचार और अन्याय का काम है। नि:संदेह सरकार के नेतृत्व और समर्थन से होने वाले इस प्रकार के अत्याचार और अन्याय जो हर युग में होते रहे हैं बहुमत इनकी निन्दा करता आया है।

यदि हम यूरोप के इतिहास पर एक दृष्टि डालें तो हमें यह ज्ञात होता है कि इस महाद्वीप में भी लोग धार्मिक अत्याचारों का शिकार हुए हैं। परिणामस्वरूप हज़ारों लोगों को एक देश से दूसरे देश में प्रवास (हिजरत) करना पड़ा। समस्त निष्पक्ष इतिहासकारों, सरकारों और लोगों ने इसे यातनाएं पहुंचाना तथा घोर अत्याचार और क्रूरता की संज्ञा दी है। ऐसी परिस्थितियों में इस्लाम इस बात का समर्थक है कि जहां अत्याचार अपनी समस्त सीमाओं को पार कर जाए और असहनीय हो जाए तब ऐसे समय में एक व्यक्ति को उस शहर या देश से किसी अन्य स्थान पर प्रवास कर

जाना चाहिए जहां वह अमन के साथ स्वतंत्रतापूर्वक अपने धर्म का पालन कर सके। बहरहाल इस मार्ग-दर्शन के साथ-साथ इस्लाम यह भी शिक्षा देता है कि किसी भी स्थिति में किसी व्यक्ति को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए और न ही अपने देश के विरुद्ध किसी भी योजना या षडयंत्र में भाग लेना चाहिए। यह एक बिल्कुल स्पष्ट और असंदिग्ध आदेश है जो इस्लाम ने दिया है।

नितान्त यातनाओं और अत्याचार का सामना करने के बावजूद लाखों अहमदी पाकिस्तान में निवास करते हैं। अपने जीवन के हर क्षेत्र में ऐसे दुर्व्यवहार और अत्याचार सहन करने के बावजूद वे उस देश से पूर्ण वफ़ादारी और सच्ची आज्ञाकारिता का संबंध यथावत रखे हुए हैं। वे जिस क्षेत्र में भी कार्य करते हैं अथवा वे जहां भी रहते हैं वे निरन्तर उस देश की उन्नति और सफलता के लिए प्रयासों में व्यस्त रहते हैं। कई दशकों से अहमदियत के विरोधियों ने यह आरोप लगाने का प्रयास किया है कि अहमदी पाकिस्तान के वफ़ादार नहीं, परन्तु वे कभी भी इस आरोप को सिद्ध नहीं कर सके। इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि जब भी पाकिस्तान के लिए या अपने देश के लिए कोई क़ुरबानी देने की आवश्यकता हुई है तो अहमदी मुसलमान सदैव प्रथम पंक्ति में खड़े हुए हैं तथा हर समय उस देश के लिए हर क़ुरबानी करने के लिए तैयार हैं।

इस कानून का शिकार होने के बावजूद यह अहमदी मुसलमान ही हैं जो किसी भी दूसरे व्यक्ति से अधिक कानून का पालन करते और उसका ध्यान रखते हैं। वफ़ादारी के संदर्भ में पवित्र क़ुर्आन ने एक और शिक्षा दी है वह यह है कि लोगों को उन समस्त बातों से दूर रहना चाहिए जो अशिष्ट, अप्रिय और किसी भी प्रकार के विद्रोह की शिक्षा देती हों। यह इस्लाम की वह अभूतपूर्व सुन्दर और विशेष शिक्षा है जो न केवल

अन्तिम परिणाम की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है जहां ये परिणाम बहुत ख़तरनाक होते हैं अपितु यह हमें उन छोटे-छोटे मामलों से भी अवगत कराती है जो मनुष्य को खतरों से भरे मार्ग पर अग्रसर करने के लिए सीढ़ियों का कार्य करते हैं। अत: यदि इस्लामी पथ-प्रदर्शन को उचित रंग में अपनाया जाए तो किसी भी मामले को इस से पूर्व कि परिस्थितियां नियंत्रण से बाहर हो जाएं प्रथम पग पर ही सुलझाया जा सकता है। उदाहरणतया एक मामला जो एक देश को बहुत अधिक हानि पहुंचा सकता है वह लोगों का धन-सम्पत्ति का लोभ है। अधिकांश लोग इन भौतिक इच्छाओं में मुग्ध हो जाते हैं जो नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं और ऐसी इच्छाएं अन्तत: लोगों को बेवफ़ाई की ओर ले जाती हैं। इस प्रकार से ऐसी इच्छाएं अन्तत: अपने देश के विरुद्ध किसी के देशद्रोह का कारण बनती हैं। मैं इसका कुछ स्पष्टीकरण करता हूं। अरबी भाषा में एक शब्द 'बग़ा' उन लोगों या उन कार्यों को वर्णन करने के लिए प्रयोग होता है जो अपने देश को हानि पहुंचाते हैं, जो ग़लत कार्यों में भाग लेते हैं या दूसरों को हानि पहुंचाते हैं। इसमें वे लोग भी सम्मिलित हैं जो धोखा करते हैं और इस प्रकार से विभिन्न वस्तुओं को अवैध ढंगों से प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। यह उन लोगों पर भी चरितार्थ होता है जो समस्त सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं और हानि पहुंचाते हैं। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि जो लोग इस प्रकार के कार्य करते हैं उनसे वफ़ादारी की आशा नहीं की जा सकती, क्योंकि वफ़ादारी उच्च नैतिक मूल्यों से सम्बद्ध है और उच्च नैतिक मूल्यों के अभाव में वफ़ादारी का अस्तित्व नहीं रह सकता। यह भी वास्तविकता है कि विभिन्न लोगों के उच्च नैतिक मापदण्ड के संबंध में भिन्न-भिन्न विचारधाराएं हो सकती हैं फिर भी इस्लाम चारों ओर से ख़ुदा की प्रसन्नता पाने के लिए प्रेरित करता है और मुसलमानों को

यह निर्देश दिया गया है कि वे ऐसा कार्य करें कि जिससे ख़ुदा प्रसन्न हो। संक्षिप्त तौर पर यह कि इस्लामी शिक्षा के अनुसार ख़ुदा ने हर प्रकार के विद्रोह या ग़द्दारी को निषिद्ध ठहरा दिया है चाहे वह अपने देश या अपनी सरकार के विरुद्ध हो। क्योंकि विद्रोह या सरकार के विरुद्ध कार्य, देश की सुरक्षा और शान्ति के लिए एक ख़तरा है। यह वास्तविकता है कि जहां आन्तरिक विद्रोह अथवा शत्रुता प्रकट होती है तो यह बाह्य विरोध की अग्नि को भी हवा देती है तथा बाहरी संसार को प्रोत्साहित करती है कि वह आन्तरिक विद्रोह से लाभ प्राप्त करे। इस प्रकार अपने देश से बेवफ़ाई के परिणाम दूरगामी और ख़तरनाक हो सकते हैं। अत: जो भी बात किसी देश को हानि पहुंचाए वह बग़ा की परिभाषा में सम्मिलित है जिसका मैंने वर्णन किया है। इन समस्त बातों को ध्यान में रखते हुए अपने देश के प्रति वफ़ादारी, एक व्यक्ति से यह मांग करती है कि वह धैर्य का प्रदर्शन करे और अपने सदाचार दिखाते हुए राष्ट्रीय कानूनों का सम्मान करे।

समान्यतया कहने को तो वर्तमान युग में अधिकतर सरकारें प्रजातंत्रीय प्रणाली पर चलती हैं। इसलिए यदि कोई व्यक्ति या गिरोह सरकार को परिवर्तित करने की इच्छा करता है तो वह उचित प्रजातंत्रीय पद्धति को अपनाते हुए ऐसा कर सकता है। मत-पेटियों में अपना वोट डालकर उन्हें अपनी बात पहुंचानी चाहिए। व्यक्तिगत प्राथमिकताओं या व्यक्तिगत हितों के आधार पर वोट नहीं डालने चाहिएं, परन्तु वास्तव में इस्लाम यह शिक्षा देता है कि किसी भी व्यक्ति के वोट का प्रयोग अपने देश से वफ़ादारी और प्रेम की समझ के साथ होना चाहिए तथा किसी भी व्यक्ति के वोट का प्रयोग देश की भलाई को दृष्टिगत रखते हुए होना चाहिए। अत: किसी भी व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को नहीं देखना चाहिए और यह भी नहीं देखना चाहिए कि किस प्रत्याशी या पार्टी से वह

व्यक्तिगत लाभ प्राप्त कर सकता है अपितु एक व्यक्ति को संतुलित ढंग से यह निर्णय करना चाहिए और जिसका वह अनुमान भी लगा सकता है कि कौन सा प्रत्याशी या पार्टी पूरे देश की उन्नति में सहायता देगी। सरकार की कुंजियां एक बड़ी अमानत होती हैं जिसे उस पार्टी के सुपुर्द किया जाना चाहिए जिसके बारे में वोटर ईमानदारी से यह विश्वास करें कि वह सब से अधिक उचित और सब से अधिक योग्य है। यह सच्चा इस्लाम है और यही सच्ची वफ़ादारी है।

वास्तव में पवित्र क़ुर्आन की सूरः संख्या 4 की आयत संख्या 59 में ख़ुदा ने यह आदेश दिया है कि अमानत केवल उस व्यक्ति के सुपुर्द करनी चाहिए जो उस का पात्र हो और लोगों के मध्य निर्णय करते समय उसे न्याय और ईमानदारी से निर्णय करने चाहिएं। अतः अपने देश के प्रति वफ़ादारी यह मांग करती है कि सरकार की शक्ति उन्हें दी जानी चाहिए जो वास्तव में उसके पात्र हों ताकि उनका देश उन्नति कर सके और विश्व के अन्य देशों की तुलना में सबसे आगे हो।

विश्व के बहुत से देशों में हम देखते हैं कि प्रजा सरकार की नीतियों के विरुद्ध हड़तालों और प्रदर्शनों में भाग लेती है। इससे भी बढ़कर तीसरी दुनिया के देशों में प्रदर्शनकारी तोड़-फोड़ करते हैं या उन सम्पत्तियों और जायदादों को हानि पहुंचाते हैं जो या तो सरकार से संबंध रखती हैं या सामान्य नागरिकों की होती हैं। यद्यपि उनका यह दावा होता है कि उनकी यह प्रतिक्रिया देश प्रेम से प्रेरित है, परन्तु वास्तविकता यह है कि ऐसे कार्यों का वफ़ादारी या देश-प्रेम के साथ दूर का भी संबंध नहीं। यह स्मरण रखना चाहिए कि जहां प्रदर्शन और हड़तालें शान्तिपूर्ण ढंग से भी की जाती हैं या अपराध, हानि एवं कठोरता के बिना की जाती हैं फिर भी उनका एक नकारात्मक प्रभाव हो सकता है। इसका कारण यह है कि

शान्तिपूर्ण प्रदर्शन भी प्राय: देश की आर्थिक स्थिति की करोड़ों की हानि का कारण बनते हैं। ऐसे कृत्यों को किसी भी दशा में देश से वफ़ादारी का उदाहरण नहीं ठहराया जा सकता। एक सुनहरा सिद्धान्त जिसकी जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक ने शिक्षा दी थी वह यह था कि हमें समस्त परिस्थितियों में ख़ुदा, उसके अवतारों तथा अपने देश के शासकों के प्रति वफादार रहना चाहिए। यही शिक्षा पवित्र क़ुर्आन में दी गई है। अत: उस देश में भी जहां हड़ताल और रोष-प्रदर्शन करने की अनुमति है, वहां इन का संचालन उसी सीमा तक होना चाहिए जिस से देश अथवा देश की आर्थिक स्थिति को कोई हानि न पहुंचे।

एक अन्य प्रश्न प्राय: उठाया जाता है कि क्या मुसलमान पश्चिमी देशों की सेना में भर्ती हो सकते हैं ? यदि उन्हें यह अनुमति है तो क्या वे मुस्लिम देशों के विरुद्ध आक्रमणों में भाग ले सकते हैं ? इस्लाम का एक मूल सिद्धान्त यह है कि किसी भी व्यक्ति को अत्याचारपूर्ण कार्यों में सहायता नहीं करनी चाहिए। यह मूल आदेश प्रत्येक मुसलमान के मस्तिष्क में सदैव सर्वोपरि रहना चाहिए। यदि किसी मुस्लिम देश पर इसलिए आक्रमण किया जाता है क्योंकि उसने स्वयं अनुचित और अन्यायपूर्ण ढंग से आक्रमण करने में पहल की, तो ऐसी परिस्थिति में पवित्र क़ुर्आन का मुस्लिम सरकारों को यह आदेश है कि वे अत्याचारी को अत्याचार करने से रोकें। अभिप्राय यह कि वे अत्याचार का अन्त कर के शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करें। अत: ऐसी परिस्थितियों में अत्याचार का अन्त करने हेतु सैन्य कार्यवाही करने की अनुमति है। परन्तु यदि वे देश जिसने अतिक्रमण किया स्वयं को सुधार लेता है और शान्ति को अपना लेता है, उस स्थिति में झूठे बहानों की आड़ में उस देश और उसकी प्रजा को अधीन करके अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए। अपितु उन्हें सामान्यत:

स्वतन्त्रता प्रदान कर देनी चाहिए। सारांश यह कि सैन्य कार्यवाही का उद्‌देश्य शान्ति-स्थापना होना चाहिए न कि निहित स्वार्थों की सिद्धि।

इसी प्रकार इस्लाम सभी देशों को, चाहे वे मुस्लिम हों अथवा ग़ैर-मुस्लिम, अत्याचार और निर्दयता को रोकने का अधिकार प्रदान करता है। यदि आवश्यकता पड़े तो ग़ैर-मुस्लिम देश वैध उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए मुस्लिम देशों पर आक्रमण कर सकते हैं। ऐसे ग़ैर-मुस्लिम देशों के मुस्लिम नागरिक वहां की सेना में भर्ती होकर अन्य देश को अत्याचार करने से रोक सकते हैं। वास्तव में जहां ऐसी परिस्थितियां विद्यमान हों तो मुस्लिम सैनिकों को चाहे वे किसी भी पश्चिमी देश की सेना से सम्बन्ध रखते हों, का कर्त्तव्य है कि वे शान्ति-स्थापना हेतु आदेशों का पालन करते हुए युद्ध करें। परन्तु यदि किसी देश की सेना अन्यायपूर्ण ढंग से किसी अन्य देश पर आक्रमण करने का निर्णय लेती है तो एक मुसलमान को यह विकल्प प्राप्त है कि वे सेना को छोड़ दे अन्यथा वह अत्याचारी का सहायक बन जाएगा। इस निर्णय का यह अर्थ नहीं कि वह अपने देश के प्रति बेवफ़ाई कर रहा है।

वास्तव में ऐसी परिस्थिति में देशभक्ति की भावना यह मांग करती है कि वह ऐसा कदम उठाए और अपनी सरकार को यह परामर्श दे कि वह अन्यायपूर्ण ढंग से व्यवहार करने वाले देश और सरकारों का अनुसरण करके स्वयं को इतना नीचा न गिराए। यदि फिर भी सेना में भर्ती होना अनिवार्य है और छोड़ने का कोई विकल्प नहीं, और उसकी अन्तरात्मा सन्तुष्ट नहीं तो फिर एक मुसलमान को चाहिए कि वह देश छोड़ कर चला जाए, परन्तु उसे देश के कानून के विरुद्ध आवाज़ उठाने की अनुमति नहीं। ऐसी स्थिति में एक मुसलमान को देश छोड़ देना चाहिए क्योंकि उस देश के एक नागरिक के रूप में रहने की अनुमति नहीं और

साथ ही उसे देश के विरुद्ध कार्य करने या शत्रु का समर्थन करने की भी अनुमति नहीं है।

अत: इस्लामी शिक्षाओं के ये कुछ दृष्टिकोण हैं जो देशप्रेम और देशभक्ति की वास्तविक मांगों के सम्बन्ध में मुसलमानों का मार्गदर्शन करते हैं। उपलब्ध समय में मैं केवल संक्षिप्त रूप से ही इनका वर्णन कर सका हूं।

अन्त में मैं यह कहना चाहता हूं कि आज समूचा विश्व एक वैश्विक ग्राम बन चुका है। मनुष्य एक दूसरे के बहुत निकट आ गए हैं। समस्त देशों में प्रत्येक जाति, धर्म और सभ्यताओं के लोग पाए जाते हैं। यह स्थिति मांग करती है कि प्रत्येक देश के राजनीतिज्ञ उनकी भावनाओं और अहसासों को दृष्टिगत रखें और उनका सम्मान करें। शासकों और उनकी सरकारों को ऐसे कानून बनाने का प्रयास करना चाहिए जो सत्य की भावना तथा न्याय के वातावरण को बढ़ावा देने वाले हों। ऐसे कानून न बनाएं जो कि लोगों को निरुत्साहित करने और अशान्ति फैलाने का कारण बनें। अन्याय और अत्याचार समाप्त करके हमें वास्तविक न्याय के लिए प्रयास करने चाहिएं। इसका सर्वोत्तम उपाय यह है कि संसार को अपने स्रष्टा को पहचानना चाहिए। प्रत्येक प्रकार की वफ़ादारी का संबंध ख़ुदा से वफ़ादारी होना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो हम अपनी आंखों से देखेंगे कि समस्त देशों के लोगों में एक सर्वोच्च स्तर वाली वफ़ादारी जन्म लेगी और सम्पूर्ण विश्व में नवीन मार्ग प्रशस्त होंगे जो हमें शान्ति और सुरक्षा की ओर ले जाएंगे।

अपना भाषण समाप्त करने से पूर्व मैं एक बार पुन: अपने आमंत्रित किए जाने तथा मेरी बातें सुनने के लिए आभार प्रकट करना चाहता हूं। परमेश्वर आप सब को प्रसन्न रखे और जर्मनी को भी अपना आशीष प्रदान करे।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

एक एटमी युद्ध के भयानक परिणाम तथा पूर्ण न्याय की अत्यन्त आवश्यकता

नौवां वार्षिक शान्ति समारोह

लन्दन, यू.के., आयोजित 2012 ई.

Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba] addressing the 9th Annual Peace Symposium

Mayor of London Boris Johnson presenting His Holiness with a London bus souvenir

Dame Mary Richardson DBE, UK President of SOS Children's Villages, accepting the 'Ahmadiyya Muslim Prize for the Advancement of Peace' from His Holiness

Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba]
talking to the overseas Pakistani press regarding world affairs

परिचय

24 मार्च 2012 ई. को मार्डन में यूरोप की सबसे बड़ी मस्जिद "बैतुल फ़ुतूह" में शान्ति पर वार्तालाप के लिए वार्षिक गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस गोष्ठी का प्रबंध जमाअत अहमदिया यू.के. ने किया। इस आयोजन में एक हज़ार से अधिक श्रोता सम्मिलित हुए जिसमें सरकार के मंत्रीगण, विभिन्न देशों के राजदूत, हाउस आफ लॉर्डस और हाऊस ऑफ़ कॉमन्स के सदस्य, लन्दन के मेयर, विभिन्न आदरणीय लोग, विभिन्न प्रकाण्ड विद्वान, आस-पास के तथा जीवन के प्रत्येक विभाग से सम्बद्ध लोग सम्मिलित थे। इस वर्ष की गोष्ठी का विषय "विश्व-शान्ति" था। शान्ति को बढ़ावा देने के लिए तृतीय अहमदिया मुस्लिम पुरस्कार "Ahmadiyya Muslim Prize for Advancement of Peace" हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब इमाम जमाअत अहमदिया ने "SOS Children's Village U.K." विभाग को जो निरन्तर विश्व के अनाथ और निराश्रय बच्चों के कष्टों को कम करने और उसके हर बच्चे के लिए एक प्रेमपूर्ण

घर प्राप्त होने का उनका स्वप्न पूर्ण हो और सहानुभूतिपूर्ण वातावरण पैदा करने की सराहना करते हुए दिया।

श्रोताओं में निम्नलिखित अतिथि सिम्मिलित थे :

- Rt Hon Justine Greening—MP, Secretary of State for Transport
- Jane Ellison—MP (Battersea)
- Seema Malhotra—MP (Feltham and Heston)
- Tom Brake—MP (Carlshalton and Wallington)
- Virendra Sharma—MP (Ealing and Southall)
- Lord Tariq Ahmad—of Wimbledon
- HE Wesley Momo Johnson—the Ambassador of Liberia
- HE Abdullah Al-Radhi—the Ambassador of Yemen
- HE Miguel Solano-Lopez—the Ambassador of Paraguay
- Commodore Martin Atherton—Naval Regional Commander
- Councillor Jane Cooper—the Worshipful Mayor of Wandsworth
- Councillor Milton McKenzie MBE—the Worshipful Mayor of Barking and Dagenham
- Councillor Amrit Mann—the Worshipful Mayor of Hounslow
- Siobhan Benita—independent Mayoral candidate for London
- Diplomats from several other countries including India, Canada, Indonesia and Guinea

एक एटमी युद्ध के भयानक परिणाम तथा पूर्ण न्याय की अत्यन्त आवश्यकता

तशह्हुद, तअव्वुज़ और ख़ुदा के नाम के साथ जमाअत अहमदिया के वर्तमान और पंचम ख़लीफ़ा ने समस्त आदरणीय अतिथियों को अस्सलामो अलैकुम का उपहार प्रस्तुत करते हुए कहा -

आज एक वर्ष के पश्चात् मुझे अपने समस्त अतिथि सज्जनों का इस आयोजन में अभिनन्दन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मैं आप सब का नितान्त आभारी और कृतज्ञ हूं कि आप सभी सज्जनों ने इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए अपना समय दिया है।

नि:सन्देह आप लोगों में से अधिकतर इस आयोजन से जो शान्ति

के लिए गोष्ठी (Peace Symposium) के नाम से नामित है भली-भांति परिचित हैं। जमाअत अहमदिया इस गोष्ठी का प्रतिवर्ष आयोजन करती है और यह विश्व में शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से हमारी बहुत सी हार्दिक अभिलाषाओं को पूरा करने के प्रयासों में से यह भी एक प्रयास है।

आज की गोष्ठी में कुछ नए मित्र भी हैं जो कि इस आयोजन में प्रथम बार भाग ले रहे हैं जबकि अन्य हमारे वे मित्र हैं जो कई वर्षों से हमारे प्रयासों की सराहना करते चले आ रहे हैं। कुछ भी हो जबकि आप सब उच्च शिक्षा प्राप्त लोग हैं और विश्व में शान्ति की स्थापना हेतु हमारी अभिलाषा के भागीदार हैं तथा इसी इच्छा के फलस्वरूप आप इस आयोजन में भाग ले रहे हैं।

आप सब आज यहां इस हार्दिक अभिलाषा के साथ उपस्थित हैं कि समस्त विश्व, प्रेम, सहानुभूति, मित्रता और भ्रातृभाव से परिपूर्ण हो जाए और विश्व की अधिकांश जनता इसी विचारधारा और इन्हीं मूल्यों की अभिलाषी है और उसे इसी की आवश्यकता है। इसके अनुसार आप सब जिनका संबंध विभिन्न विभागों, जातियों, देशों और धर्मों से है आज मेरे सामने विराजमान हैं और जैसा कि मैंने कहा कि हम प्रतिवर्ष यह कान्फ्रेंस आयोजित करते हैं और प्रत्येक अवसर पर हम सब इसी भावना और आशा को प्रकट करते हैं जो यह है कि हमारी इन आंखों के सामने विश्व में शान्ति स्थापित हो जाए और इसीलिए मैं प्रतिवर्ष आप से यह निवेदन करता हूं कि आप को जहां कहीं भी अवसर प्राप्त हो और जिस से भी आपका संबंध हो शान्ति को बढ़ावा देने का प्रयास करें। इसके अतिरिक्त मैं उन समस्त सज्जनों से निवेदन करता हूं

जिनका संबंध राजनीतिक पार्टियों अथवा सरकार से हो उन्हें भी अपने अधिकार-क्षेत्र में शान्ति के इस सन्देश को पहुंचाना चाहिए। प्रत्येक को इससे अवगत कराने की आवश्यकता है कि विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए पहले से अधिक उच्च सिद्धान्तों पर आधारित नैतिक मूल्यों की नितान्त आवश्यकता है।

जहां तक जमाअत अहमदिया का संबंध है जहां कहीं भी जब कभी भी ऐसा अवसर प्राप्त होता है हम खुल्लम-खुल्ला अपनी इस विचारधारा को प्रकट करते हैं कि विश्व को इस विनाश और बरबादी से जिसकी ओर वह अग्रसर है बचाने का अब केवल एक ही मार्ग है और वह यह है कि हम सब प्रेम और सहानुभूति और एकता की भावना को प्रसारित करने का प्रयास करें तथा सर्वाधिक आवश्यक यह है कि विश्व अपने स्रष्टा को पहचाने कि एक ही परमेश्वर है। यह इस कारण कि स्रष्टा की पहचान ही है जो हमें उसकी सृष्टि से प्रेम और सहानुभूति की ओर ले जाती है और जब यह हमारे चरित्र का भाग बन जाती है तो उस समय हम परमेश्वर से प्रेम प्राप्त करने वाले बन जाते हैं।

हम विश्व को निरन्तर शान्ति की ओर आमंत्रित करने के लिए पुकारते हैं और हम यह दु:ख और कष्ट जो अपने हृदयों में महसूस करते हैं वहीं हमें मानवता के कष्टों को कम करने और विश्व को रहने के लिए एक उत्तम स्थान बनाने के प्रयत्न करने के लिए प्रेरित करता है। बहरहाल यह आयोजन इस उद्देश्य की प्राप्ति के बहुत से प्रयासों में से एक प्रयास है।

जैसा कि मैंने पहले कहा है कि आप सब की यही शुभ कामनाएं हैं। इसके अतिरिक्त मैंने राजनीतिज्ञों तथा धर्मिक-नेताओं को विश्व-

शान्ति के उद्देश्य से आमंत्रित किया है फिर भी इन प्रयासों के बावजूद हम यह जानते हैं कि सम्पूर्ण विश्व में अशान्ति और उथल-पुथल निरन्तर फैल रही है और बढ़ रही है।

आजकल विश्व में हम अत्यधिक लड़ाई-झगड़े, अशान्ति और असंतोष देखते हैं। कुछ देशों में जनता के प्रतिनिधि आपस में लड़ रहे हैं और एक-दूसरे पर प्रहार कर रहे हैं। कुछ देशों में प्रजा सरकार के विरुद्ध लड़ रही है या इसके विपरीत शासक अपनी प्रजा पर अत्याचार कर रहे हैं। उग्रवादी दल अपने व्यक्तिगत हितों को पूरा करने के लिए अशान्ति और असंतोष की अग्नि को और अधिक हवा दे रहे हैं। इस प्रकार वे मासूम स्त्रियों, बच्चों और वृद्धों का अंधा-धुंध वध कर रहे हैं। कुछ देशों में राजनीतिक दल अपने हितों की पूर्ति के लिए आपस में लड़ाई कर रहे हैं। वे अपने लोगों की भलाई के लिए एकमत हो जाने के स्थान पर, हम देखते हैं कि कुछ सरकारें और देश निरन्तर दूसरे देशों के प्राकृतिक संसाधनों की ओर द्वेष और डाह से दृष्टि लगाए हुए हैं। विश्व की महा शक्तियां भी अपनी श्रेष्ठता को क़ायम रखने के लिए प्रयासरत हैं और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी।

ये सारी बातें दृष्टिगत रखते हुए हम देखते हैं कि न ही जमाअत अहमदिया और न ही आप में से अधिकांश जो कि जन-प्रतिनिधि हैं यह शक्ति या अधिकार रखते हैं कि सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए ऐसी नीतियां बनाएं। इसका कारण यह है कि हमारे पास कोई सरकारी शक्ति या विभाग नहीं है। वास्तव में मैं तो यहां तक कहता हूं कि वे राजनीतिज्ञ जिनके साथ हमारे मित्रतापूर्ण संबंध हैं और जो हमारे आयोजनों में

हमेशा हमारे साथ सहमत होते हैं वे भी बोल नहीं सकते। इसके विपरीत उनके स्वर भी दबा दिए जाते हैं और उन्हें अपनी विचारधाराएं प्रस्तुत करने से रोक दिया जाता है। यह या तो इसलिए होता है कि उन्हें अपनी पार्टी की कूटनीति अपनाने पर विवश किया जाता है या फिर कदाचित् अन्य विश्व शक्तियों या राजनीतिक गठबंधनों के बाहरी दबाव के कारण ऐसा होता है जो कि उन्हें कम आंक रहे होते हैं।

इसके बावजूद हम प्रतिवर्ष इस शान्ति गोष्ठी (Peace Symposium) में भाग लेते हैं और निःसन्देह हम अपनी विचारधाराओं और भावनाओं को प्रकट करते हैं। समस्त धर्म, समस्त देश, समस्त नस्लों और समस्त लोगों के मध्य प्रेम, सहानुभूति और भ्रातृ-भाव स्थापित होना चाहिए। दुर्भाग्यवश यद्यपि कि हम वास्तव में इस विचारधारा को व्यावहारिक रूप देने में विवश हैं। इस परिणाम की प्राप्ति के लिए जिसके हम अभिलाषी हैं हमारे पास कोई साधन या अधिकार नहीं है।

मुझे स्मरण है कि लगभग दो वर्ष पूर्व इसी हाल (Hall) में हमारी शान्ति गोष्ठी के मध्य मैंने विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए विभिन्न उपायों और साधनों पर आधारित एक भाषण दिया था और मैंने यह भी बताया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O) को किस प्रकार की कार्यवाही करनी चाहिए। तत्पश्चात् हमारे बहुत ही प्रिय और आदरणीय मित्र लार्ड एरिक एवबरी (Lord Eric Avebury) ने यह समीक्षा की कि यह भाषण वास्तव में संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O) में होना चाहिए था। बहरहाल यह तो उनके उच्च चरित्र का प्रकटन था कि वह अपनी समीक्षा में इतने हमदर्द और उदार थे। बहरहाल मैं यह कहना चाहता हूं कि केवल किसी भाषण का देना या सुनना पर्याप्त नहीं और केवल

इससे शान्ति की स्थापना नहीं होगी अपितु इस मूल उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए पूर्ण न्याय और समस्त मामलों में इन्साफ़ और ईमानदारी की अत्यन्त आवश्यकता है। पवित्र क़ुर्आन ने सूरह अन्निसा आयत - 136 में हमें एक सुनहरी सिद्धान्त और शिक्षा दी है जो हमारा इस सन्दर्भ में मार्ग-दर्शन करती है। वह बताती है कि न्याय की मांगों को पूरा करने के लिए यदि आप को स्वयं अपने-अपने माता-पिता, निकट संबंधियों और मित्रों के विरुद्ध भी गवाही देनी पड़े तो तुम्हें अवश्य देनी चाहिए। यही वास्तविक न्याय है जहां प्रत्येक व्यक्तिगत हित को जनहित के लिए एक ओर रख दिया गया है।

यदि हम सामूहिक तौर पर इस सिद्धान्त के बारे में विचार करें तो हमें यह महसूस होगा कि अवैध हथकंडे जिनका आधार धन तथा प्रभाव एवं प्रतिष्ठा पर है, उनका परित्याग कर देना चाहिए। इस के विपरीत यह जन-प्रतिनिधि और राजदूतों को शुद्ध नीयत, न्याय एवं समानता के सिद्धान्तों के समर्थन की इच्छा के साथ सामने आना चाहिए। हमें प्रत्येक प्रकार के पक्षपात और भेदभाव को समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि यही वह माध्यम है जो शान्ति लाता है। यदि हम संयुक्त राष्ट संघ की जनरल असैंबली अथवा विश्व सुरक्षा परिषद को देखें तो प्राय: हम देखते हैं कि वहां जो भाषण या बयान दिए जाते हैं उनकी बड़ी प्रशंसा और प्रसिद्धि होती है, परन्तु ऐसी प्रशंसा निरर्थक है क्योंकि वास्तविक निर्णय पहले ही किए जा चुके होते हैं।

अत: जहां निर्णय महाशक्तियों के दबाव के अन्तर्गत किए जाएं जो सच्ची एवं न्यायसंगत प्रजातंत्रीय प्रणाली के विरुद्ध हों तो ऐसे भाषण खोखले और निरर्थक विचारों को प्रदर्शित करते हैं तथा बाह्य संसार को

धोखा देने के लिए केवल एक बहाने का काम करते हैं तथापि इस का यह अर्थ नहीं कि हम निराश हो जाएं और अपने समस्त प्रयास त्याग दें अपितु इसकी बजाए हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि विशेष तौर पर राष्ट्रीय कानूनों की परिधि में रहते हुए सरकार को निरन्तर समय की आवश्यकता को स्मरण कराते रहें। हमें उन गिरोहों को भी उचित तौर पर नसीहत करना चाहिए जिनके अपने व्यक्तिगत हित हैं ताकि विश्व स्तर पर न्याय जारी हो सके। केवल इसी प्रकार विश्व अमन और एकता का गढ़ बन सकता है जिसके हम सब अभिलाषी हैं।

इसलिए हम अपने प्रयासों को कदापि त्याग नहीं सकते। यदि हम अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाना बन्द करते हैं तो हम भी उन लोगों में से हो जाएंगे जिनके पास कोई भी नैतिक मूल्य अथवा मानक नहीं हैं। यह प्रश्न व्यर्थ है कि चाहे हमारी आवाज़ें सुनी जाएं या उनका कोई प्रभाव हो। शान्ति के लिए हमें निरन्तर दूसरों से परामर्श करना है। मैं अत्यन्त प्रसन्न होता हूं जब मैं यह देखता हूं कि धर्म और जाति के मतभेदों के बावजूद मानव मूल्यों को जीवित रखने के लिए असंख्य लोग इस आयोजन को सुनने सीखने और विश्व में शान्ति और प्रेम स्थापित करने के उपायों के बारे में अपने विचार प्रकट करने के लिए आते हैं। अत: मैं आप सब से निवेदन करता हूं कि अपनी उत्तम योग्यताओं के अनुसार शान्ति के लिए प्रयास करें ताकि हम आशाओं के इस दीपक को प्रकाशित रख सकें कि एक समय अवश्य आएगा कि जब वास्तविक शान्ति और न्याय विश्व के समस्त देशों में स्थापित हो जाएगा।

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जब मानव प्रयास विफल हो जाते

हैं तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर मानव जाति के भाग्य को निश्चित करने के लिए अपने निर्णय को जारी करता है। इससे पूर्व कि परमेश्वर का निर्णय जारी हो और वह लोगों को उसकी ओर जाने तथा मानव जाति के अधिकारों को अदा करने पर विवश करे यह उचित होगा कि विश्व के लोग स्वयं इन महत्त्वपूर्ण मामलों की ओर ध्यान दें, क्योंकि परमेश्वर को कार्यवाही करने पर विवश किया जाता है तब उस का क्रोध वास्तव में मनुष्य को एक कठोर और भयानक ढंग से पकड़ता है।

वर्तमान संसार में परमेश्वर के निर्णय का एक भयानक प्रकटन एक अन्य विश्व-युद्ध के रूप में हो सकता है। इसमें कदापि सन्देह नहीं कि ऐसे युद्ध के प्रभाव तथा उस के द्वारा विनाश केवल उस युद्ध तक या केवल वर्तमान पीढ़ी तक सीमित नहीं होंगे अपितु उसके भयानक परिणाम कई भावी पीढ़ियों तक प्रभावी होंगे। ऐसे युद्ध के इन भयानक परिणामों में से एक यह है कि इन युद्धों का प्रभाव नवजात शिशुओं पर तथा भविष्य में जन्म लेने वाले बच्चों पर भी पड़ेगा। आधुनिक शस्त्र इतने विनाशकारी हैं कि भविष्य में जन्म लेने वाली कई पीढ़ियों पर उनके भयानक आनुवांशिक और शारीरिक प्रभाव पड़ेंगे।

जापान ही एक ऐसा देश है जिसने एटमी युद्ध के नितान्त भयानक परिणाम देखे हैं उस पर द्वितीय विश्व-युद्ध के मध्य एटम बम से आक्रमण किया गया। आज भी यदि आप जापान जाएं और वहां के लोगों से मिलें तो आप उस युद्ध का एक पूर्ण भय और उसकी घृणा उनकी आंखों में देखेंगे और जो कुछ वे कहते हैं उससे भी प्रकट होता है। हालांकि वे एटम बम जो उस समय प्रयोग किए गए तथा जिन्होंने बहुत अधिक विनाश किया वे आज के परमाणु शस्त्रों की अपेक्षा जो

कि आज छोटे-छोटे देशों के पास भी हैं, बहुत कम शक्ति वाले थे।

कहा जाता है कि जापान में यद्यपि कि सात दशक गुज़र चुके हैं तथापि एटम बम के प्रभाव नवजात शिशुओं पर अब भी प्रकट हो रहे हैं। यदि किसी व्यक्ति को गोली मारी गई हो तब भी प्राय: उपचार के द्वारा उसका बच जाना संभव होता है परन्तु यदि रासायनिक युद्ध आरंभ हो जाता है तो जो भी उसकी लपेट में आएंगे उनका ऐसा भाग्य नहीं होगा। इसके विपरीत हम देखेंगे कि लोग अचानक मरेंगे और मूर्तिवत हो जाएंगे तथा उनकी खालें पिघलने लगेंगी, पीने का पानी, भोजन और सब्ज़ियां दूषित हो जाएंगी और विकिरण (Radiation) से प्रभावित होंगी। हम केवल इस बात की कल्पना ही कर सकते हैं कि ऐसा प्रदूषण किस प्रकार के रोगों का कारण बनेगा। वे स्थान जहां पर सीधे तौर पर आक्रमण न हो और जहां इस विकिरण (Radiation) के प्रभाव कुछ कम होंगे वहां पर भी रोगों का ख़तरा बहुत अधिक होगा और भावी नस्लों को बड़े ख़तरों से गुज़रना होगा।

अत: जैसा कि मैंने कहा है कि ऐसे युद्ध के विनाशकारी और भयानक प्रभाव केवल युद्ध या उसके बाद तक ही सीमित न होंगे अपितु भविष्य की अनेकों पीढ़ियों तक चलते चले जाएंगे। यह ऐसे युद्ध के वास्तविक परिणाम हैं। हालांकि इसके बावजूद आज स्वार्थी और मूर्ख लोग विद्यमान हैं जिन्हें अपने इन आविष्कारों पर बड़ा गर्व है और उन्होंने विश्व-विनाश के लिए जो कुछ विकसित किया है उसको वे उपहार के रूप में वर्णन करते हैं। वास्तविकता यह है कि रासायनिक शक्ति और टैक्नालॉजी का नाममात्र लाभप्रद पक्ष भी असावधानी या दुर्घटनाओं के कारण बहुत भयानक हो सकता है तथा महाविनाश की

ओर ले जा सकता है। हम इससे पूर्व इस प्रकार की आकस्मिक आपदाओं को देख चुके हैं। इसी प्रकार की एक घटना 1986 ई. में चेरनोबिल (Chernobyl) अर्थात यूक्रेन में हुई और गत वर्ष ही जापान में भूकम्प और सुनामी के पश्चात् घटना हुई। यह भी बहुत भयानक थी इसने पूरे देश को भयभीत कर दिया। जब ऐसी घटनाएं प्रकट होती हैं तो फिर घटनाग्रस्त क्षेत्रों का पुर्ननिर्माण एवं पुनर्वास भी बहुत कठिन कार्य होता है। अपने एकमात्र और भयानक एवं दुखदायी अनुभवों के कारण जापानी अत्यधिक सतर्क हो गए हैं और नि:सन्देह उनके भय का अहसास यथोचित है।

यह एक स्पष्ट बात है कि लोग युद्धों में मरते हैं और जापान भी द्वितीय विश्व-युद्ध में सम्मिलित हुआ तो उसकी सरकार और उसके लोग इस बात से भली-भांति परिचित थे कि कुछ लोग मारे जाएंगे। कहा जाता है कि जापान में लगभग तीन मिलियन (तीस लाख) लोग मारे गए। यह देश की कुल जनसंख्या का चार प्रतिशत (4%) बनता था, यद्यपि कि मरने वालों की कुल संख्या की दृष्टि से बहुत से अन्य देश भी बहुत प्रभावित हुए, तथापि युद्ध के प्रति जो नफ़रत और घृणा हम जापानी लोगों में देखते हैं वह अन्य की अपेक्षा बहुत अधिक होती है। निश्चय ही इसका कारण वे दो परमाणु बम हैं जो द्वितीय विश्व-युद्ध के समय जापान पर गिराए गए जिसके परिणाम वे आज भी देख रहे हैं और वे आज तक उन परिणामों को सहन कर रहे हैं। जापान ने बहुत शीघ्र अपने शहरों की पुनर्स्थापना करके अपनी श्रेष्ठता और शोक से उभरने की भावना और शक्ति को सिद्ध कर दिया है परन्तु यह स्पष्ट रहे कि यदि आज पुन: परमाणु शस्त्र प्रयोग किए गए तो बहुत संभव

है कि कुछ विशेष देशों के भाग पूर्ण रूप से विश्व-मानचित्र से समाप्त हो जाएं और उनका अस्तित्व ही शेष न रहे।

द्वितीय विश्व-युद्ध में मरने वालों की संख्या एक अनुमान के अनुसार लगभग बासठ मिलियन है और यह बताया जाता है कि मारे गए लोगों में चालीस मिलियन सामान्य नागरिक थे। इस प्रकार सेना की अपेक्षा जन सामान्य अधिक मारे गए। यह विनाश इस वास्तविकता के बावजूद हुआ कि जापान के अतिरिक्त यह युद्ध अन्य स्थानों पर पारंपरिक शस्त्रों के साथ हुआ था।

U.K. (यू.के) को लगभग पांच लाख लोगों की हानि झेलनी पड़ी। यद्यपि यह उस समय उपनिवेशवादी शक्ति था और उसके उपनिवेशों ने भी उसके समर्थन में युद्ध किया। यदि हम उनकी हानियों को भी सम्मिलित कर लें तो मरने वालों की संख्या कई मिलियन तक पहुंच जाती है।

केवल भारत में सोलह लाख लोग मृत्यु का शिकार हुए।

बहरहाल आज वह स्थिति परिवर्तित हो चुकी है और वे देश जो ब्रिटेन के नवीन उपनिवेश थे जो ब्रिटेन साम्राज्य के लिए लड़े। अत: यदि आज युद्ध होता है तो वे बर्तानिया के विरुद्ध भी लड़ सकते हैं और फिर जैसा कि मैंने इससे पूर्व वर्णन किया है कि कुछ छोटे देशों ने भी परमाणु शस्त्र प्राप्त कर लिए हैं। जो बात अत्यधिक भय का कारण है वह यह जानकारी है कि ऐसे परमाणु हथियार ऐसे लोगों के हाथों में आ सकते हैं जिनके पास या तो योग्यता नहीं है या फिर अपने कार्यों के परिणामों के संबंध में कल्पना ही नहीं कर सकते। वास्तव में ऐसे लोग परिणामों के बारे में विचार करने की परवाह ही नहीं करते या फिर

छोटी-छोटी बातों पर बन्दूकें तान लेते हैं।

अत: यदि महा शक्तियां न्याय से काम नहीं लेतीं तथा छोटे देशों की निराशा को समाप्त नहीं करतीं और उचित और नीतिसंगत कार्यवाहियां नहीं करतीं तो परिस्थिति हमारे अधिकार से बाहर हो जाएगी तत्पश्चात् जो विनाश आएगा वह हमारी कल्पना से भी दूर होगा, यहां तक कि विश्व के अधिकांश देश जो शान्ति के अभिलाषी हैं उन को भी यह विनाश अपनी परिधि में ले लेगा।

अत: मेरी हार्दिक अभिलाषा और आशा है कि समस्त बड़े देशों के नेता इस भयावह वास्तविकता को समझेंगे और अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आक्रामक नीतियों को अपनाने तथा शक्ति का प्रयोग करने की बजाए वे ऐसी नीतियों से काम लें जो न्याय को बढ़ावा दें और उसकी रक्षा करने वाली हों।

अभी कुछ समय पूर्व ही रूस के एक वरिष्ठ सैनिक कमांडर ने रासायनिक युद्ध के संभावित खतरे के बारे में एक कड़ी चेतावनी जारी की है। उसका दृष्टिकोण है कि ऐसा युद्ध एशिया अथवा किसी दूसरे स्थान पर नहीं किया जाएगा अपितु यूरोपीय सीमाओं पर किया जाएगा और यह ख़तरा पूर्वी यूरोपीय देशों से आरंभ हो सकता है और युद्ध की ज्वाला भड़क सकती है। यद्यपि कि कुछ लोग यह भी कहेंगे कि यह मात्र उसका व्यक्तिगत विचार था परन्तु मैं स्वयं इस विचार को असंभव नहीं समझता अपितु इसके अतिरिक्त मैं यह भी विश्वास करता हूं कि यदि यह युद्ध आरंभ हो जाता है तो इस बात की बहुत संभावना है कि एशिया के देश भी इस युद्ध में कूद पड़ेंगे।

एक अन्य सूचना जिसे इन्हीं दिनों बड़े व्यापक रूप से मीडिया

द्वारा प्रसारित किया गया। वर्तमान समय में ही इस्राईल की जासूसी एजेन्सी मोसाद के भूतपूर्व चीफ़ के विचार थे। प्रसिद्ध अमरीकन टी.वी. चैनल CBS के साथ एक साक्षात्कार के मध्य उन्होंने कहा कि यह प्रकट हो रहा है कि इस्राईल की सरकार ईरान के साथ युद्ध छेड़ना चाहती है। उन्होंने बताया कि यदि ऐसा आक्रमण होता है तो यह जानना असंभव हो जाएगा कि ऐसा युद्ध कहां और कैसे समाप्त होगा। अतः उसने बड़े शक्तिशाली ढंग से इस युद्ध के विरुद्ध नसीहत की।

इस दृष्टि से मेरे विचार में ऐसा युद्ध एटमी विनाश के साथ ही समाप्त होगा।

इन्हीं दिनों में मेरी दृष्टि से एक लेख गुज़रा जिसमें लेखक ने यह वर्णन किया है कि आज विश्व की आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से वही स्थिति है जैसी 1932 ई. में थी। उसने लिखा कि कुछ विशेष देशों में जनता को राजनीतिज्ञों या केवल नाममात्र प्रजातंत्र पर कोई विश्वास नहीं रहा। उसने यह भी कहा कि कई और भी समानताएं हैं जो मिलकर आज भी वही चित्र प्रदर्शित करती हैं जो कि द्वितीय विश्व-युद्ध से ठीक पहले देखा गया था।

कुछ लोग इस विश्लेषण से सहमत नहीं होंगे, परन्तु इस के विपरीत मैं इससे सहमत हूं और यही कारण है कि मेरा यह विश्वास है कि विश्व की सरकारों को वर्तमान परिस्थितियों पर अत्यन्त चिन्तित होना चाहिए। इसी प्रकार कुछ मुस्लिम देशों के अन्यायी शासक जिनका एकमात्र उद्देश्य किसी भी प्रकार तथा किसी भी मूल्य पर अपनी शक्ति को क़ायम रखना है, उन्हें भी होश में आना चाहिए अन्यथा उनके कार्य और उनकी मूर्खताएं उनके अन्त का कारण होंगी तथा वे अपने-अपने

देशों को नितान्त भयंकर परिस्थितियों की ओर ले जाएंगी।

हम जो जमाअत अहमदिया के सदस्य हैं विश्व और मानवता को विनाश से बचाने के लिए अपना भरसक प्रयत्न करते हैं। यह इसलिए कि हमने वर्तमान युग के इमाम को माना है जिसे परमेश्वर ने मसीह मौऊद बनाकर भेजा और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं मानवता पर उपकार करने वाला बनाकर भेजा था, का एक दास बनकर आया।

क्योंकि हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा का पालन करते हैं, इसलिए हम विश्व की स्थिति पर अपने हृदयों में अत्यन्त दु:ख महसूस करते हैं। यह वही दु:ख है जो हमें मानवता को विनाश और संकटों से सुरक्षित रखने के प्रति प्रयासरत रहने की ओर अग्रसर करता है। इसलिए मैं और अन्य सभी अहमदी मुसलमान विश्व में शान्ति के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपने दायित्वों को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं।

एक उपाय जिसके द्वारा मैंने विश्व में शान्ति को बढ़ावा देने का प्रयत्न किया है वह पत्रों का सिलसिला है जो मैंने विश्व के कुछ शासकों और राजनेताओं को लिखे हैं। कुछ माह पूर्व पोप बेनीडिक्ट को एक पत्र भेजा जिसे मेरे एक अहमदी प्रतिनिधि ने स्वयं उन्हें पहुंचाया। उस पत्र में मैंने उन्हें लिखा कि चूंकि वह विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक जमाअत के लीडर हैं इसलिए उन्हें विश्व-शान्ति को स्थापित करने का अवश्य प्रयत्न करना चाहिए।

इसी सन्दर्भ में इन्हीं दिनों में ईरान और इस्राईल की आपसी शत्रुताओं को देखते हुए जो एक नितान्त भयंकर स्तर पर भड़क रही हैं

मैंने इस्राईली प्रधानमंत्री बैंजामिन नितिनयाहू और ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदीनिजाद दोनों को एक पत्र भेजा जिसमें मैंने उन्हें मानव जाति को दृष्टिगत रखते हुए निर्णय करते समय हर प्रकार की शीघ्रता और असावधानी को त्यागने का आग्रह किया।

मैंने इन्हीं दिनों अमरीका के राष्ट्रपति बराक ओबामा तथा कनाडा के प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर को भी पत्र लिखे हैं जिनमें दोनों को विश्व की शान्ति और एकता को सुदृढ़ करने के लिए अपनी भूमिका अदा करने तथा अपने दायित्वों को पूरा करने का आग्रह किया।

निकट भविष्य में अन्य देशों के शासकों को भी ऐसे ही पत्र लिखने का मेरा इरादा है।

मैं नहीं जानता कि मैंने जिन शासकों को पत्र लिखे हैं वे मेरे पत्रों को कोई महत्त्व देंगे या नहीं। उनकी प्रतिक्रिया जो भी हो, मैंने विश्व भर में रहने वाले लाखों अहमदियों के ख़लीफ़ा और आध्यात्मिक पेशवा होने के तौर पर विश्व की भयावह एवं संकटपूर्ण स्थिति के संबंध में उनकी भावनाओं और अहसास को उन तक पहुंचाने के लिए यह एक प्रयास किया है।

यह स्पष्ट रहे कि मैंने इन भावनाओं का प्रकटन किसी व्यक्तिगत भय के कारण नहीं किया अपितु इसके विपरीत केवल मानवता के प्रति प्रेम ने मुझे इसके लिए प्रेरित किया।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] जिन्हें जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूं समस्त मानवजाति के लिए एक उपकारी और हमदर्द बनाकर भेजा गया है की शिक्षाओं ने समस्त सच्चे मुसलमानों के हृदयों में मानवता से प्रेम को अंकित कर दिया है और उसे उन्नति प्रदान की है।

बहुत संभव है कि आप आश्चर्य करें या आप सुनकर स्तब्ध रह जाएं कि मानवता के लिए हमारा प्रेम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं ही का परिणाम है। अतः यह प्रश्न पैदा हो सकता है कि फिर यहां ऐसे उग्रवादी गिरोह क्यों मौजूद हैं जो निर्दोष लोगों का वध करते हैं ? या फिर क्यों ऐसी मुसलमान सरकारें मौजूद हैं जो अपने शासन की कुर्सियों को सुरक्षित रखने के लिए अपनी ही प्रजा को मारने का आदेश देती हैं ?

यह स्पष्ट रहे कि वास्तव में इस प्रकार के अनुचित और कुकर्म इस्लामी शिक्षा के बिल्कुल विपरीत हैं। पवित्र क़ुर्आन किसी भी परिस्थिति में कट्टरवाद और उग्रवाद की अनुमति नहीं देता।

हमारी आस्थानुसार इस युग में परमेश्वर ने जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण दासता में मसीह मौऊद और इमाम महदी बना कर भेजा है। मसीह मौऊद को इस्लाम और पवित्र क़ुर्आन की वास्तविक शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए भेजा गया था। आपको मनुष्य और परमेश्वर के मध्य एक संबंध स्थापित करने के लिए अवतरित किया गया था, आपको इसलिए भेजा गया था कि मनुष्य एक दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्यों को पहचानें, आपको हर प्रकार के धार्मिक युद्धों को समाप्त करने के लिए भेजा गया था, आप को प्रत्येक धर्म के पेशवा और पैग़म्बर के सम्मान, शान और स्थान को स्थापित करने के लिए भेजा गया था, आपको उच्च नैतिक मूल्यों की प्राप्ति की ओर संसार का ध्यान आकृष्ट और समस्त विश्व में शान्ति, प्रेम, सहानुभूति एवं भ्रातृत्व को क़ायम करने के लिए भेजा गया था।

यदि आप विश्व के किसी भी देश में जाएं तो आप देखेंगे कि ये विशेषताएं समस्त सच्चे अहमदियों में विद्यमान हैं। हमारे लिए न उग्रवादी और न ही चरमपंथी आदर्श हैं और न ही अत्याचारी मुसलमान शासक और न ही पश्चिमी शक्तियां हमारे लिए नमूना हैं। वह आदर्श जिसका हम अनुसरण करते हैं वह इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श है और हमारे पथ-प्रदर्शक निर्देश पवित्र क़ुर्आन में हैं।

अत: मैं इस अमन कान्फ्रेन्स (Peace Symposium) से समस्त विश्व को यह सन्देश देता हूं कि इस्लाम का सन्देश और शिक्षाएं, प्रेम, सहानुभूति, अमन और शान्ति पर आधारित हैं।

दुर्भाग्य से हम देखते हैं कि मुसलमानों का एक अल्पसंख्यक वर्ग इस्लाम का एक पूर्णतया विकृत रूप प्रस्तुत करता है और पथ-भ्रष्ट करने वाली आस्थाओं का पालन करता है। मैं आप सब से कहता हूं कि उसको वास्तविक इस्लाम न समझें और उन अन्यायपूर्ण कार्यों को शान्तिप्रिय मुसलमानों की बहुसंख्या की भावनाओं को ठेस पहुंचाने और उन्हें अत्याचार का लक्ष्य बनाने के लिए एक लाइसेंस के तौर पर प्रयोग न करें।

पवित्र क़ुर्आन समस्त मुसलमानों की सबसे अधिक मुबारक और पवित्र पुस्तक है, इसलिए उसके बारे में अपवित्र और अशिष्ट भाषा का प्रयोग करने या उसे जलाने से निश्चय ही मुसलमानों की भावनाएं आहत होंगी। हमने देखा है कि जब भी ऐसी घटना होती है तो कट्टरपंथी मुसलमानों को एक बिल्कुल ग़लत और अनुचित प्रतिक्रिया की ओर ले जाती है।

हमने अभी अफ़ग़ानिस्तान में दो घटनाओं के संबंध में सुना जहां अमरीका के सैनिकों ने पवित्र क़ुर्आन का अपमान किया और निर्दोष

स्त्रियों और बच्चों को उनके घरों में मारा। इसी प्रकार एक अत्याचारी व्यक्ति ने दक्षिणी फ्रांस में कुछ फ्रान्सीसी सिपाहियों को अकारण गोलियों से मार डाला और फिर कुछ ही दिनों के पश्चात् उसने एक स्कूल में प्रवेश किया और तीन निर्दोष यहूदी बच्चों और उनके एक शिक्षक की भी हत्या कर दी।

हम देखते हैं कि यह आचरण बिल्कुल ग़लत है जो कभी शान्ति नहीं ला सकता। हम यह भी देखते हैं कि ऐसे अत्याचार पाकिस्तान में निरन्तर होते हैं और अन्य स्थानों में भी। इस प्रकार ये समस्त गतिविधियां इस्लाम के विरोधियों को अपनी नफ़रत को हवा देने के लिए ईंधन उपलब्ध कर रही हैं तथा अपने उद्देश्यों की उच्च स्तर पर प्राप्ति के लिए बहाना उपलब्ध करा रही हैं। एक छोटे स्तर पर ऐसी अत्याचारपूर्ण कार्यवाहियां किसी व्यक्तिगत शत्रुता या द्वेष के कारण नहीं की जातीं अपितु वास्तव में ये उन अन्यायपूर्ण नीतियों का परिणाम हैं जिन्हें कुछ विशेष सरकारें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनाए हुए हैं।

अत: विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि न्याय के उचित मापदण्डों को प्रत्येक स्तर पर और प्रत्येक देश में विकसित किया जाए। पवित्र क़ुर्आन ने अकारण किसी निर्दोष व्यक्ति के वध को समस्त मानवता का वध ठहराया है।

अत: एक मुसलमान होने के नाते मैं पुन: यह पूर्ण रूप से स्पष्ट करूंगा कि इस्लाम अत्याचार और बर्बरता के किसी भी रूप, प्रकार की कदापि अनुमति नहीं देता। यह एक स्पष्ट आदेश है जिसमें कोई अपवाद नहीं। पवित्र क़ुर्आन इसके अतिरिक्त कहता है - यदि कोई देश या जाति तुम्हारे साथ शत्रुता भी रखती हो तब भी उनके साथ व्यवहार

करते हुए शत्रुता तुम्हें न्याय करने से कदापि न रोके। ऐसा नहीं होना चाहिए कि शत्रुताएं और वैर तुम्हें प्रतिशोध लेने या अनुचित कार्यवाही करने की ओर ले जाएं। एक और महत्त्वपूर्ण आदेश जो हमें पवित्र क़ुर्आन ने दिया है कि दूसरों के धन और संसाधनों को ईर्ष्या तथा द्वेष और लालच भरी दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

मैंने केवल कुछ बातों का वर्णन किया है परन्तु ये ऐसी बातें हैं जो नितान्त आवश्यक हैं क्योंकि यही बातें समाज और फिर विशाल संसार में शान्ति और न्याय की नींव रखने वाली हैं। मैं दुआ करता हूं कि विश्व इन मूल समस्याओं की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करे ताकि हम विश्व के उस विनाश से बचाए जाएं जिसकी ओर हमें अत्याचारी और बेईमान लोग ले जा रहे हैं।

मैं क्षमा चाहता हूं कि मैंने आपका काफ़ी समय लिया है परन्तु वास्तविकता यह है कि विश्व में शान्ति स्थापित करने का विषय अत्यन्त महत्त्व का विषय है।

समय हाथों से निकलता जा रहा है और इससे पूर्व के बहुत देर हो जाए हम सब को समय की आवश्यकता की ओर बहुत ध्यान देना चाहिए।

इससे पूर्व कि मैं अपने इस भाषण को समाप्त करूं एक आवश्यक बात के संबंध में बताना चाहता हूं - जैसा कि हम सब जानते हैं कि आजकल अति आदरणीय महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय की हीरक जयन्ती मनाई जा रही है, यदि हम समय को 115 वर्ष पूर्व 1897 ई. तक ले जाएं उस समय भी महारानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती मनाई जा रही थी। उस समय जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक ने महारानी विक्टोरिया

को मुबारकबाद का एक सन्देश भेजा था।

आप अलैहिस्सलाम ने उस सन्देश को इस्लामी शिक्षाओं का पैग़ाम पहुंचाते हुए ब्रिटेन की सरकार के लिए दुआ और महारानी की दीर्घ आयु के लिए कामना की थी। उस सन्देश में आप अलैहिस्सलाम ने लिखा कि महारानी की सरकार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी सरकार में समस्त लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता दी जाती है।

आज के संसार में ब्रिटेन की सरकार भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन नहीं करती तथापि धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धान्त ब्रिटेन के समाज की और उसके कानूनों में गहराई के साथ संलग्न हैं जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गई है।

नि:सन्देह इस स्वतंत्रता का बहुत ही सुन्दर नमूना यहां पर आज रात को देखा जा रहा है जहां पर विभिन्न आस्थाओं, धर्मों और विचारों के मानने वाले एक सामूहिक उद्देश्य अर्थात विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए एक स्थान पर एकत्र हुए हैं। इसलिए वही शब्द और वही दुआएं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लाम ने की थीं उन्हीं का प्रयोग करते हुए मैं इस अवसर पर महारानी ऐलिज़ाबेथ को हार्दिक गहराइयों से मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूं जैसा कि आपने फ़रमाया कि

> **"परमेश्वर करे कि हमारी प्रसन्नतापूर्ण मुबारकबाद और कृतज्ञता की भावनाएं हमारी हमदर्द महारानी को पहुंचें और ईश्वर करे कि आदर्णीय महारानी सदैव प्रसन्न और सन्तुष्ट रहें।"**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने महारानी विक्टोरिया के लिए इसके अतिरिक्त दुआएं कीं। अत: मैं महारानी के लिए दुआएं

करने के लिए पुन: आप ही के शब्द प्रयोग करता हूं -

"हे शक्तिशाली और सामर्थ्यवान परमेश्वर ! अपनी कृपा और बरकतों से सदैव हमारी आदरणीय महारानी को इसी प्रकार प्रसन्न रखना जिस प्रकार हम उसकी सहानुभूति और दया के फलस्वरूप प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं उस से प्रेम और दया का व्यवहार करना, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हम शान्ति और समृद्धि से सहृदयता एवं संयमयुक्त आचरण वाली सरकार के अधीन रह रहे हैं।"

अत: यह कृतज्ञतापूर्ण भावनाएं हैं जो हर अहमदी मुसलमान के हृदय में हैं जो ब्रिटेन का नागरिक है। अत: मैं एक बार पुन: आप सब का हार्दिक गहराइयों के साथ धन्यवाद करना चाहता हूं, जिन्होंने यहां पधार कर अपने प्रेम, सहानुभूति एवं भ्रातृ-भावना को प्रकट किया है।

आपका अति धन्यवाद

शान्ति-पथ —
राष्ट्रों के मध्य न्यायपूर्ण संबंध

कैपिटल हिल,

वाशिंगटन डी. सी. 2012 ई.

The first Muslim Congressman, Keith Ellison meeting Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

Brad Sherman (Democratic member of the United States House of Representatives) presenting American flag to Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba] delivers his keynote address at U.S. Capitol Hill

Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba] leading silent prayer at U.S. Capitol Hill

Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] during his official tour of U.S. Capitol Hill

Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] in U.S. Capitol Hill after his historic address to the US Statesmen and Bureaucrats

भूमिका

27 जून 2012 को कैपिटल हिल वाशिंगटन में एक ऐतिहासिक घटना घटित हुई कि जमाअत अहमदिया के वर्तमान और पंचम ख़लीफ़ा ने अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों में सेनेटर्स, राजदूतों, व्हाइट हाउस और स्टेट डिपार्टमेन्ट स्टाफ़, एन.जी.ओज़ के अधिकारियों, धार्मिक नेताओं, प्रोफेसरों, नीति सलाहकारों, सरकारी अधिकारियों, डिप्लोमेटिक कोर (Corps) के सदस्यों, विचारकों, पेन्टागन के प्रतिनिधियों एवं मीडिया के संपादकों को सम्बोधित किया। यह कान्फ्रेन्स जो अपने प्रकार की प्रथम कान्फ्रेन्स थी। इस ने संयुक्त राज्य अमरीका (U.S.A) के कुछ बहुत ही प्रतिष्ठित नेताओं को जिनमें नेन्सी पेलोसी जो कि हाउस आफ़

रिप्रेज़ेन्टेटिव्ज़ (House of Representatives) में डेमोक्रेटिक पार्टी की नेता हैं सम्मिलित थे, को सीधे तौर पर विश्व-शान्ति के विषय पर इस्लाम का सन्देश सुनने का अवसर उपलब्ध कराया। इस आयोजन के पश्चात् हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को कैपिटल हिल का भ्रमण कराया गया। तत्पश्चात् हाउस आफ़ रिप्रिज़ेन्टेटिव्ज़ में Escort दिए जाने से पूर्व आप के संयुक्त राज्य में आगमन की ख़ुशी में सम्मान के तौर पर एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

उस प्रस्ताव की भूमिका यह है -

> आदरणीय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के आध्यात्मिक और व्यवस्थागत पेशवा को वाशिंगटन डी.सी. में सुस्वागतम तथा विश्व-शान्ति, न्याय, उदारता, मानवाधिकारों, धार्मिक स्वतंत्रता एवं प्रजातंत्र के लिए आपके प्रयासों की सराहना करते हैं।

कैपिटल हिल में उपस्थित सज्जनों की सूची निम्नलिखित है -

- U.S. Senator Robert Casey, Sr. (Democrat Pennsylvania)
- U.S. Senator John Cornyn (Republican Texas)
- Democratic Leader Nancy Pelosi (Democrat California)
- U.S. Congressman Keith Ellison (Democrat Minnesota)
- U.S. Congressman Bradley Sherman (Democrat California)
- U.S. Congressman Frank Wolf (Republican Virginia)
- U.S. Congressman Michael Honda (Democrat California)
- U.S. Congressman Timothy Murphy (Republican

Pennsylvania)

- U.S. Congresswoman Jeannette Schmidt (Republican Ohio)
- U.S. Congresswoman Janice Hahn (Democrat California)
- U.S. Congresswoman Janice Schakowsky (Democrat Illinois)
- U.S. Congresswoman Jackie Speier (Democrat California)
- U.S. Congresswoman Zoe Lofgren (Democrat California)
- U.S. Congresswoman Sheila Jackson Lee (Democrat Texas)
- U.S. Congressman Gary Peters (Democrat Michigan)
- U.S. Congressman Thomas Petri (Republican Wisconsin)
- U.S. Congressman Adam Schiff (Democrat California)
- U.S. Congressman Michael Capuano (Democrat Massachusetts)
- U.S. Congressman Howard Berman (Democrat California)
- U.S. Congresswoman Judy Chu (Democrat California)
- U.S. Congressman André Carson (Democrat Indiana)
- U.S. Congresswoman Laura Richardson (Democrat California
- U.S. Congressman Lloyd Poe (Republican Texas)
- U.S. Congressman Barney Frank (Democrat Massachusetts)
- U.S. Congressman. Bruce Braley (Democrat Iowa)
- U.S. Congressman Dennis Kucinich (Democrat Ohio)

- U.S. Congressman Trent Franks (Republican Arizona)
- U.S. Congressman Chris Murphy (Democrat Connecticut)
- U.S. Congressman Hank Johnson (Democrat Georgia)
- U.S. Congressman James Clyburn (Democrat South Carolina)
- His Excellency Bockari Kortu Stevens, Ambassador of Sierra Leone to the United States
- Dr. Katrina Lantos Swett, Chairwoman, United States Commission on Inteternational Religious Freedom
- Hon. Tim Kaine, Former Governor of Virginia
- Amb. Susan Burk, Special Representative of President Barack Obama for Nuclear Nonproliferation
- Amb. Suzan Johnson Cook, U.S. Ambassador at Large for International Religious Freedom
- Hon. Khaled Aljalahma, Deputy Chief of Mission, Embassy of the Kingdom of Bahrain to the United States
- Rev. Monsignor Jean-Francois Lantheaume, First Counselor (Deputy Chief of Mission), The Apostolic Nunciature of the Holy See to the United States
- Ms. Sara Al-Ojaili, Public Affairs/Liaison Officer, Embassy of the Sultanate of Oman to the United States
- Mr. Salim Al Kindie, First Secretary, Embassy of the Sultanate of Oman to the United States
- Ms. Fozia Fayyaz, Embassy of Pakistan to the United States
- Hon. Saida Zaid, Counselor, Embassy of Morocco to the United States

- Hon. Nabeel Munir, Minister-IV (Security Council), Pakistan Permanent Mission to the United Nations
- Hon. Josef Renggli, Minister-Counselor, Embassy of Switzerland to the United States
- Hon. Alyssa Ayres, Deputy Assistant Secretary for South and Central Asia, U.S. Department of State
- Amb. Karl Inderfurth, Senior Adviser and Wadhwani Chair in U.S.-India Policy Studies, Center for Strategic and International Studies
- Hon. Donald A. Camp, Senior Associate, Center for Strategic and International Studies
- Amb. Jackie Wolcott, Executive Director, U.S. Commission on International Religious Freedom
- Dr. Azizah al-Hibri, Commissioner, U.S. Commission on International Religious Freedom
- Mr. Isaiah Leggett, County Executive, Montgomery Count, Maryland
- Ms. Victoria Alvarado, Director, Office of International Religious Freedom, U.S. Department of State
- Dr. Imad Dean Ahmad, Director, Minaret of Freedom Institute
- Dr. Zainab Alwani, Assistant Professor of Islamic Studies, Howard University School of Divinity
- Ms. Deborah L. Benedict, Associate Counsel, U.S. Citizenship and Immigration Services, Department of Homeland Security
- Ms. Lora Berg, Senior Adviser to Special Representative to Muslim Communities, U.S. Department of State

- Dr. Charles Butterworth, Professor (Emeritus) of Government and Politics, University of Maryland, College Park
- Father John Crossin, Executive Director for Secretariat for Ecumenical and Interreligious Affairs, United States Conference of Catholic Bishops
- Major (Ret.) Franz Gayl, Senior Science Adviser, U.S. Marine Corps.
- Dr. Sue Gurawadena-Vaughn, Director of International Religious Freedom and South East Asia Programs, Freedom House
- Mr. Frank Jannuzi, Head of Washington Office, Amnesty International USA
- Mr. T. Kumar, International Advocacy Director, Amnesty International USA
- George Leventhal, Member of the Montgomery County Council
- Mr. Amer Latif, Visiting Fellow, Wadhwani Chair in U.S.-India Policy Studies, Center for Strategic and International Studies
- Mr. Tim Lenderking, Director of Pakistan Desk Office, U.S. State Department
- Mr. Jalal Malik, International Affairs Officer, U.S. Army National Guard
- Mr. Naveed Malik, Foreign Service Officer, U.S. Department of State
- Ms. Dalia Mogahed, Senior Analyst and Executive Director, Gallup Center for Muslim Studies

- Mr. Paul Monteiro, Associate Director, White House Office of Public Engagement
- Major General David Quantock, United States Army Provost General
- Ms. Tina Ramirez, Director of International and Government Relations, The Becket Fund
- Rabbi David Saperstein, Director and Counsel, Religious Action Center for Reform Judaism
- Chaplain, Brigadier General Alphonse Stephenson, Director of the National Guard Bureau Office of the Chaplain
- Mr. Knox Thames, Director of Policy and Research, U.S. Commission on International Religious Freedom
- Mr. Eric Treene, Special Counsel for Religious Discrimination, Civil Rights Division, U.S. Department of Justice
- Dr. Hassan Abbas, Professor, Regional and Analytical Studies Department, National Defense University
- Mr. Malik Siraj Akbar, Reagan-Fascell Fellow, National Endowment of Democracy
- Mr. Matthew K. Asada, Congressional Fellow to Rep. Gary Peters
- Ms. Stacy Burdett, Director of Government and National Affairs, Anti-Defamation League
- Ms. Elizabeth Cassidy, Deputy Director for Policy and Research, U.S. Commission on International Religious Freedom
- Ms. Aimee Chiu, Director of Media, Communication, and Public Relations, American Islamic Congress

- Mr. Cornelius Cremin, Department of State, Bureau of Democracy, Human Rights and Labor, Acting Deputy Director and Foreign Affairs Officer for Pakistan
- Mr. Sadanand Dhume, Resident Fellow, American Enterprise Institute
- Dr. Richard Gathro, Dean of Nyack College, Washington D.C.
- Mr. Joe Grieboski, Chairman, The Institute on Religion and Public Policy
- Ms. Sarah Grieboski, The Institute on Religion and Public Policy
- Dr. Max Gross, Adjunct Professor, Prince Alwaleed Bin Talal Center for Muslim-Christian Understanding, Georgetown University
- Dr. Riaz Haider, Clinical Professor of Medicine, George Washington University
- Ms. Huma Haque, Assistant Director, South Asia Center, Atlantic Council
- Mr. Jay Kansara, Associate Director, Hindu American Foundation
- Mr. Hamid Khan, Senior Program Officer, Rule of Law Center, U.S. Institute for Peace
- Ms. Valerie Kirkpatrick, Associate for Refugees and U.S. Advocacy, Human Rights Watch
- Mr. Alex Kronemer, Unity Productions
- Mr. Paul Liben, Executive Writer, U.S. Commission on International Religious Freedom
- Ms. Amy Lillis, Foreign Affairs Officer, U.S. Department

of State

- Mr. Graham Mason, Legislative Assistant to Rep. Allyson Schwartz
- Ms. Lauren Markoe, Religion News Service
- Mr. Dan Merica, CNN.com
- Mr. Joseph V. Montville, Senior Associate, Merrimack College Center for the Study of Jewish-Christian-Muslim Relations
- Mr. Aaron Myers, Program Officer, Freedom House
- Ms. Attia Nasar, Regional Coordinating Officer, U.S. Department of State
- Ms. Melanie Nezer, Senior Director, US Policy and Advocacy, HIAS
- Dr. Elliott Parris, Bowie State University
- Mr. John Pinna, Director of Government and International Relations, American Islamic Congress
- Mr. Arif Rafiq, Adjunct Scholar, Middle East Institute
- Ms. Maya Rajaratnam, Amnesty International
- Ms. Rachel Sauer, Foreign Affairs Officer, U.S. Department of State
- Dr. Jerome Schiele, Dean of College of Professional Studies, Bowie State University
- Ms. Samantha Schnitzer, Staff, United States Commission on International Religious Freedom
- Dr. Mary Hope Schwoebel, Senior Program Officer, Academy for International Conflict Management and

Peacebuilding, U.S. Institute for Peace

- Ms. Sarah Schlesinger, International and Government Relations Associate, The Becket Fund
- Dr. Frank Sellin, Kyrgystan Desk Officer, U.S. Department of State
- Ms. Anna-Lee Stangl, Christian Solidarity Worldwide
- Ms. Kalinda Stephenson, Professional Staff, Tom Lantos Human Rights Commission
- Mr. Jordan Tama, Lead Democratic Staffer, Tom Lantos Human Rights Commission
- Mr. Shaun Tandon, AFP
- Dr. Wilhelmus Valkenberg, Professor of Religion and Culture, The Catholic University of America
- Mr. Anthony Vance, Director of External Affairs, Baha'is of the United States
- Mr. Jihad Saleh Williams, Government Affairs Representative, Islamic Relief USA
- Ms. Amelia Wang, Chief of Staff to Congresswoman Judy Chu
- Ms. Moh Sharma, Legislative Fellow to Congresswoman Judy Chu

यू.एस. कांग्रेस — हाउस प्रस्ताव संख्या 709

112TH CONGRESS
2D SESSION

H. RES. 709

Welcoming His Holiness, Hadhrat Mirza Masroor Ahmad, the worldwide spiritual and administrative head of the Ahmadiyya Muslim Community, to Washington, DC, and recognizing his commitment to world peace, justice, nonviolence, human rights, religious freedom, and democracy.

IN THE HOUSE OF REPRESENTATIVES

JUNE 27, 2012

Ms. ZOE LOFGREN of California (for herself, Mr. SHERMAN, Mr. CONNOLLY of Virginia, Mr. HINCHEY, Ms. ESHOO, Ms. SPEIER, Ms. RICHARDSON, Mr. SCHIFF, Ms. SCHAKOWSKY, Mr. HONDA, Mr. WOLF, Mr. PETERS, Mr. DENT, Ms. CHU, Mr. BERMAN, Mr. FRANKS of Arizona, Ms. JACKSON LEE of Texas, Ms. SCHWARTZ, Mr. BRALEY of Iowa, and Mr. MCGOVERN) submitted the following resolution; which was referred to the Committee on Foreign Affairs

---

RESOLUTION

Welcoming His Holiness, Hadhrat Mirza Masroor Ahmad, the worldwide spiritual and administrative head of the Ahmadiyya Muslim Community, to Washington, DC, and recognizing his commitment to world peace, justice, nonviolence, human rights, religious freedom, and democracy.

Whereas, from June 16, 2012, to July 2, 2012, His Holiness, Hadhrat Mirza Masroor Ahmad, the worldwide spiritual and administrative head of the Ahmadiyya Muslim Community, an international religious organization with mil-

lions of members across the globe, is making a historic visit to the United States;

Whereas His Holiness was elected to become fifth Khalifa to Mirza Ghulam Ahmad, a lifelong position, on April 22, 2003;

Whereas His Holiness is a leading Muslim figure promoting peace, who in his sermons, lectures, books, and personal meetings has continually advocated the Ahmadiyya values of service to humanity, universal human rights, and a peaceful and just society;

Whereas the Ahmadiyya Muslim Community has suffered repeated hardships, including discrimination, persecution, and violence;

Whereas, on May 28, 2010, 86 Ahmadi Muslims were killed in Lahore, Pakistan, when two mosques belonging to the Ahmadiyya Muslim Community were attacked by anti-Ahmadiyya terrorists;

Whereas despite the continued sectarian persecution that Ahmadi Muslims are subjected to, His Holiness continues to forbid violence;

Whereas His Holiness has traveled globally to promote and facilitate service to humanity, meeting with presidents, prime ministers, parliamentarians, and ambassadors of state;

Whereas during his visit to the United States, His Holiness will meet thousands of American Muslims in addition to significant United States Government leaders in order to strengthen relationships and find means of establishing peace and justice for all people; and

Whereas, on the morning of June 27, 2012, His Holiness will deliver the keynote address at a special bipartisan recep-

tion at the Rayburn House Office Building on Capitol Hill, "The Path to Peace: Just Relations Between Nations": Now, therefore, be it

1 *Resolved,* That the House of Representatives—
2 (1) welcomes His Holiness, Mirza Masroor
3 Ahmad to Washington, DC;
4 (2) commends His Holiness for promoting indi-
5 vidual and world peace, as well as individual and
6 world justice; and
7 (3) commends His Holiness for his perseverance
8 in counseling Ahmadi Muslims to eschew any form
9 of violence, even in the face of severe persecution.

○

112 वां कांग्रेस, दूसरा सेशन

प्रस्ताव संख्या 709

आदरणीय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के आध्यात्मिक और व्यवस्थागत पेशवा को वाशिंगटन डी.सी. में सुस्वागतम तथा विश्व-शान्ति, न्याय, उदारता, मानवाधिकारों, धार्मिक स्वतंत्रता एवं प्रजातंत्र के लिए आपके प्रयासों की सराहना करते हैं।

प्रतिनिधि कक्ष (House of Representatives)

27 जून 2012

श्रीमती ज़ू लॉफ़ग्रेन आफ़ कैलीफ़ोर्निया ने (स्वयं की ओर से तथा Mr. Sherman, Mr. Connolly of Virginia, Mr. Hinchey, Ms. Eshoo, Ms. Speier, Ms. Richardson, Mr. Schiff, Ms. Schakowsky, Mr. Honda, Mr. Wolp, Mr. Peters, Mr. Dent, Ms. Chu, Mr. Berman, Mr. Franks of Arizona, Ms. Jackson Lee of Texas, Ms. Schwartz, Mr. Braley of Iowa, और Mr. McGovern की ओर से) ने निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो कि विदेशी मामलों (Foreign Affairs) की कमेटी को भेजा गया।

प्रस्ताव

हम आदरणीय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के आध्यात्मिक एवं व्यवस्थागत पेशवा का वाशिंगटन डी.सी. में अभिनन्दन करते हैं और हम आपकी विश्व-शान्ति, न्याय, अहिंसा, मानवाधिकारों, धार्मिक स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के प्रति कटिबद्धता की सराहना करते हैं।

16 जून 2012 ई. से 2 जुलाई 2012 तक आदरणीय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अहमदिया मुस्लिम जमाअत जो एक अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक संगठन है जिसके सम्पूर्ण विश्व में लाखों सदस्य हैं के, विश्वव्यापी एवं व्यवस्थागत पेशवा संयुक्त राज्य अमरीका का ऐतिहासिक दौरा कर रहे हैं।

आप 22 अप्रैल 2003 ई. को हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के पंचम ख़लीफ़ा (जो कि एक आजीवन पद है) निर्वाचित हुए। आप शान्ति को बढ़ावा देने वाले प्रमुख मुस्लिम पेशवा हैं जिन्होंने अपने प्रवचनों, भाषणों, रचनाओं एवं व्यक्तिगत भेटों के माध्यम से मानव सेवा, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार, शान्ति एवं न्याय पर आधारित समाज के संबंध में जमाअत अहमदिया के मूल्यों का सदैव प्रचार एवं समर्थन किया है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत निरन्तर यातनाओं का शिकार रही। इन यातनाओं में भेदभाव, कष्ट एवं अत्याचार और हिंसा भी सम्मिलित हैं।

28 मई 2010 ई. को लाहौर पाकिस्तान में जब जमाअत अहमदिया की दो मस्जिदों पर जमाअत अहमदिया के विरोधी उग्रवादियों ने आक्रमण किया तो उसमें 86 अहमदी मुसलमान मारे गए। आप साम्प्रदायिक

यातनाओं के बावजूद अहमदियों को प्रतिशोधात्मक एवं हिंसात्मक प्रतिक्रियाओं से निरन्तर मना करते हैं। आपने मानवता की सेवा को बढ़ावा देने और उसे आसान बनाने के लिए सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण किया तथा इस संबंध में आपने प्रेज़ीडेण्टस, प्राइममिनिस्टर्ज़, सांसदों और विभिन्न देशों के राजदूतों से भेंट की।

संयुक्त राज्य अमरीका के अपने भ्रमण के मध्य आप संयुक्त राज्य के प्रमुख राजनेताओं से भेंट करने के अतिरिक्त संबंधों को सुदृढ़ बनाने तथा समस्त लोगों में शान्ति और न्याय के माध्यमों की स्थापना के लिए हज़ारों अमरीकी मुसलमानों से भी मिलेंगे।

27 जून 2012 ई. को आप रेबर्न हाऊस आफ़िस बिल्डिंग कैपिटल हिल के विशेष द्विपक्षीय अभिनन्दन समारोह के अवसर पर "शान्ति-पथ - राष्ट्रों के मध्य न्यायपूर्ण संबंध" शीर्षक के अन्तर्गत मुख्य भाषण देंगे। यह प्रस्ताव पारित हुआ कि हाउस आफ रिप्रिज़ेन्टेटिव्ज़

1. आदरणीय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद का वाशिंगटन डी. सी. में अभिनन्दन करता है।

2. आप का प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत शान्ति एवं न्याय तथा विश्व की सामूहिक शान्ति एवं न्याय को बढ़ावा देने पर सराहना करता है।

3. हम आपकी स्थायी तौर पर मुसलमानों को कठोर से कठोर यातनाएं देने के बावजूद भी हिंसात्मक कार्यवाहियां करने से बचने के परामर्श देने पर सराहना करते हैं।

शान्ति-पथ —
राष्ट्रों के मध्य न्यायपूर्ण संबंध

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम -

आदरणीय अतिथि गण ! *अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बरकातोहू* -

कुछ वर्णन करने से पूर्व मैं इस अवसर पर आप सब का मेरे भाषण को सुनने के लिए समय निकालने पर आभार प्रकट करना चाहता हूं। मुझ से एक ऐसे अवसर पर जिस विषय पर बोलने के लिए निवेदन किया गया है वह बहुत विशाल है तथा विस्तार चाहता है। उसके बहुत से पक्ष हैं। अत: इस अल्प समय में उन सब का वर्णन कर पाना मेरे लिए संभव नहीं। जिस विषय पर भाषण देने के लिए कहा गया है वह विश्व-शान्ति की स्थापना है। निश्चय ही यह नितान्त महत्त्वपूर्ण एवं त्वरित ध्यान देने का मामला है जिसका आज विश्व को सामना है। बहरहाल इस सीमित समय में मैं संक्षिप्त तौर पर राष्ट्रों के

मध्य न्यायपूर्ण तथा संबंधों की समानता के द्वारा शान्ति-स्थापना के बारे में इस्लामी विचारधारा को आपके समक्ष रखूंगा।

वास्तविकता यह है कि शान्ति और न्याय परस्पर अनिवार्य हैं। आप इन में से एक के अभाव में दूसरे को नहीं देख सकते। निश्चय ही यह ऐसा सिद्धान्त है जिसे समस्त बुद्धिमान लोग समझते हैं। जो लोग विश्व में अशान्ति फैलाने पर कटिबद्ध हैं उन्हें एक ओर रखते हुए कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि किसी समाज और देश यहां तक कि सम्पूर्ण विश्व में जहां न्याय होता हो वहां अव्यवस्था एवं शान्ति का अभाव हो सकता है तथापि हम देखते हैं कि विश्व के कई देशों में अशान्ति फैली हुई है। यह अशान्ति दोनों प्रकार से अर्थात देशों के आन्तरिक और बाह्य तौर पर भी विभिन्न राष्ट्रों के मध्य संबंधों की दृष्टि से दिखाई देती है। ऐसी अव्यवस्था और टकराव विद्यमान है चाहे समस्त सरकारें ऐसी नीतियां बनाने की दावेदार हों जो न्याय पर आधारित हों। सारे देश ही दावे करते हैं कि शान्ति स्थापित करना ही उनका मूल उद्‌देश्य है। फिर भी इस बात में कोई सन्देह नहीं कि विश्व में अशान्ति और परेशानी बढ़ रही है। यह बात स्पष्ट तौर पर सिद्ध करती है कि कहीं न कहीं न्याय की मांगें पूरी नहीं की जा रही हैं। अतः प्रयास करने तथा समानता का जहां कहीं, जब भी अभाव हो उसे समाप्त करने की नितान्त आवश्यकता है। अतः विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया का पेशवा होने के नाते मैं न्याय पर आधारित शान्ति की प्राप्ति के माध्यमों एवं आवश्यकताओं के संबंध में कुछ बातें प्रस्तुत करना चाहता हूं।

जमाअत अहमदिया एक शुद्ध धार्मिक समुदाय है हमारा दृढ़ विश्वास है कि मसीह और सुधारक जिसका इस युग में आना निश्चित

था और विश्व को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराना था वह नि:सन्देह आ चुका है। हमारा ईमान है कि हमारे समुदाय के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम वही मसीह मौऊद और सुधारक हैं और इसीलिए हमने उन्हें माना है। आप ने अपने अनुयायियों से दृढ़तापूर्वक कहा कि वह इस्लाम की वास्तविक और मूल शिक्षाएं जो पवित्र क़ुर्आन पर आधारित हैं स्वयं भी पालन करें और उसका प्रचार करें। अत: शान्ति-स्थापना एवं न्यायपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संबंध पैदा करने के संबंध में जो भी कहूंगा वह क़ुर्आनी शिक्षाओं पर आधारित होगा।

विश्व-शान्ति की प्राप्ति हेतु आप सब निरन्तर अपनी विचारधाराओं को प्रकट करते हैं और नि:सन्देह प्रयास भी करते हैं। आपके रचनात्मक और विवेकशील मस्तिष्क आपको महान विचारों, योजनाओं और शान्ति का विवेक प्रस्तुत करने की प्रेरणा देते हैं।

अत: इस समस्या पर मुझे सांसारिक अथवा राजनीतिक दृष्टि से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं अपितु इसके विपरीत मेरा सम्पूर्ण ध्यान इस बात पर निर्भर होगा कि धर्म पर आधारित शान्ति की स्थापना कैसे हो सकती है। इस उद्देश्य के लिए जैसा कि मैंने पहले वर्णन किया है मैं पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाओं पर आधारित कुछ अत्यन्त आवश्यक निर्देश प्रस्तुत करूंगा।

हमेशा यह स्मरण रखना आवश्यक है कि मानव ज्ञान और बुद्धि पूर्ण नहीं है अपितु वास्तव में सीमित है। अत: निर्णय करते समय अथवा विचार करते समय कुछ विशेष बातें मानव मस्तिष्क में प्रवेश कर जाती हैं जो निर्णय को धूमिल कर सकती हैं तथा एक व्यक्ति को अपने ही

अधिकारों को पूर्ण करने के प्रयास की ओर अग्रसर करती हैं। अन्ततः यही बात एक अन्यायपूर्ण परिणाम की ओर ले जा सकती है और फिर फैसला किया जाता है। परमेश्वर का कानून बहरहाल पूर्ण है तथा कोई व्यक्तिगत हित अथवा अन्यायपूर्ण नियम विद्यमान नहीं है, क्योंकि परमेश्वर अपनी सृष्टि के लिए केवल अच्छाई और भलाई चाहता है। इसलिए उसका कानून पूर्ण रूप से न्याय पर आधारित है। जिस दिन विश्व के लोग इस महत्त्वपूर्ण रहस्य को समझने लगेंगे उस दिन वास्तविक और स्थायी शान्ति की नींव रख दी जाएगी, अन्यथा हम यह ज्ञात करने का प्रयत्न करते रहेंगे कि यद्यपि कि विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अत्यन्त प्रयत्न किए गए, परन्तु वे कोई महत्त्वपूर्ण परिणाम उपलब्ध कराने में असफल रहे।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् कुछ राष्ट्रों के शासकों ने भविष्य में समस्त देशों के मध्य अच्छे और शान्तिपूर्ण संबंधों की इच्छा की तो विश्व-शान्ति की प्राप्ति के लिए लीग ऑफ़ नेशन्स (Leage of Nations) बनाई गई। उसका मुख्य उद्देश्य विश्व-शान्ति को यथावत् रखना था तथा भविष्य में युद्धों को रोकना था। दुर्भाग्यवश इस लीग के सिद्धान्त और जो प्रस्ताव पारित किए गए उनमें कुछ कमियां और दोष थे। इसलिए उन्होंने समस्त लोगों और समस्त देशों के अधिकारों की यथोचित रक्षा न की। परिणामस्वरूप जो असमानता पैदा हुई तो स्थायी शान्ति जारी न रह सकी। लीग के प्रयास विफल हो गए यह बात सीधे तौर पर द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बनी।

जो भयंकर विनाश और बरबादी हुई उससे हम सब परिचित हैं जिसमें सम्पूर्ण विश्व के लगभग पचहत्तर मिलियन लोगों के प्राण नष्ट

हुए जिनमें अधिकांश निर्दोष जनता थी। यह युद्ध विश्व की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त होना चाहिए था। यह उन बुद्धिमत्तापूर्ण नीतियों को उन्नति देने का माध्यम होना चाहिए था जो कि समस्त दलों को न्याय पर आधारित उनके अनिवार्य अधिकार प्रदान करता। इस प्रकार विश्व में शान्ति स्थापित करने का माध्यम सिद्ध होता। उस समय विश्व की सरकारों ने किसी सीमा तक शान्ति क़ायम करने का प्रयत्न किया और संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) की स्थापना की गई परन्तु यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के महान और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पूरे नहीं किए जा सके और आज कुछ विशेष सरकारें स्पष्ट तौर पर ऐसे बयान देती हैं जिन से उनकी असफलता सिद्ध होती है।

न्याय पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय संबंध जो शान्ति स्थापित करने का एक माध्यम हों उनके संबंध में इस्लाम क्या कहता है ? पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया है कि यद्यपि हमारी जातियां और जातीय परिदृश्य हमारी पहचान का एक माध्यम हैं परन्तु वह किसी प्रकार की श्रेष्ठता के औचित्य का माध्यम नहीं हैं।

अत: पवित्र क़ुर्आन यह स्पष्ट करता है कि समस्त लोग समान हैं। इसके अतिरिक्त वह अन्तिम ख़ुत्बा (भाषण) जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया, उसमें आप[स.] ने समस्त मुसलमानों को नसीहत की कि सदैव स्मरण रखो कि किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर और न ही किसी ग़ैर अरबी को किसी अरबी पर कोई श्रेष्ठता है। आप[स.] ने यह शिक्षा दी कि एक गोरे को काले पर और न ही किसी काले को गोरे पर श्रेष्ठता है। अत: इस्लाम की यह एक स्पष्ट शिक्षा है कि समस्त जातियों और नस्लों के लोग बराबर

हैं। यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि समस्त लोगों को बिना किसी भेदभाव अथवा द्वेष के समान अधिकार दिए जाने चाहिएं। यह एक बुनियादी और सुनहरी सिद्धान्त है जो विभिन्न गिरोहों और देशों के मध्य एकता और शान्ति की नींव डालता है।

बहरहाल आज हम देखते हैं कि शक्तिशाली और निर्बल देशों के मध्य एक फूट और खाई है। उदाहरणतया संयुक्त राष्ट्र संघ में हम देखते हैं कि विभिन्न देशों के मध्य अन्तर किया जाता है और इसी प्रकार विश्व सुरक्षा परिषद में कुछ स्थायी और कुछ अस्थायी सदस्य हैं। यह विभाजन फूट और अशान्ति का एक आन्तरिक माध्यम सिद्ध हुआ है। अत: हम निरन्तर इस असमानता के विरुद्ध प्रदर्शनों पर आधारित विभिन्न देशों की रिपोर्ट सुनते रहते हैं। इस्लाम समस्त मामलों में पूर्ण न्याय और समानता का पाठ पढ़ाता है और इस प्रकार हम पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह आयत - 3 में एक और निर्देश पाते हैं। इस आयत में पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि न्याय की मांगों को पूर्णतया पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि उन लोगों से भी जिन्होंने घृणा और शत्रुता की समस्त सीमाओं को पार कर लिया हो न्याय और समानता का व्यवहार किया जाए। पवित्र क़ुर्आन यह शिक्षा देता है कि जहां कहीं भी और जो कोई भी तुम्हें अच्छाई और नेकी की ओर बुलाता हो तुम्हें उसकी आवाज़ पर लब्बैक (मैं उपस्थित हूं) कहना चाहिए और जहां भी जो कोई भी तुम्हें बुराई और अन्यायपूर्ण व्यवहार की ओर बुलाता हो तुम्हें उसके निमंत्रण को अस्वीकार कर देना चाहिए।

एक प्रश्न जो स्वाभाविक तौर पर पैदा होता है वह यह है कि इस्लाम किस प्रकार के न्याय की मांग करता है। सूरह अन्निसा आयत - 126 में

पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि यदि तुम्हें अपने स्वयं के विरुद्ध या अपने माता-पिता या अपने प्रियजनों के विरुद्ध भी गवाही देनी पड़े तो न्याय और सच्चाई को क़ायम रखने के लिए तुम्हें अवश्य ऐसा करना चाहिए। शक्तिशाली और समृद्धिशाली देशों को अपने अधिकारों की रक्षा करने के प्रयास में निर्धन और शक्तिहीन देशों के अधिकार को हड़प नहीं करना चाहिए। दूसरी ओर निर्धन और शक्तिहीन देशों को अवसर मिलने पर शक्तिशाली अथवा समृद्धिशाली देशों को हानि पहुंचाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इसके स्थान पर दोनों पक्षों को न्याय के सिद्धान्तों का पूर्णरूपेण पालन करना चाहिए। वास्तव में विभिन्न देशों के मध्य शान्तिपूर्ण संबंधों को क़ायम रखने के लिए यह समस्या बहुत गंभीर है।

न्याय पर आधारित देशों के मध्य शान्ति की एक अन्य मांग की चर्चा पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलहिज्र आयत - 89 में है जहां पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है कि किसी भी गिरोह को दूसरों के संसाधनों तथा धन-सम्पत्तियों को कभी भी ईर्ष्यापूर्ण निगाहों से नहीं देखना चाहिए। इसी प्रकार किसी भी देश को किसी अन्य देश की प्राकृतिक सम्पदाओं पर उनकी सहायता अथवा समर्थन के बहाने अधिकार करने का औचित्य तलाश नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार तकनीकी महारत उपलब्ध कराने के आधार पर सरकारों को अन्यायपूर्ण व्यापारिक समझौते या ठेके लेते हुए दूसरे देशों से अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए। इसी प्रकार तकनीकी योग्यताएं उपलब्ध कराने या सहायता करने के बहाने सरकारों को विकासशील देशों के प्राकृतिक सम्पदाओं या सम्पत्तियों पर अधिकार प्राप्त करने के प्रयत्न नहीं करने चाहिएं। जहां अल्प शिक्षित लोग हों

या सरकारों को सिखाने की आवश्यकता हो कि उन्हें अपने प्राकृतिक संसाधनों (सम्पदाओं) को कैसे काम में लाना है तो फिर ऐसा किया जा सकता है।

अत: देशों और सरकारों को निर्बल देशों की सेवा और सहायता करने के सदैव अवसर खोजने चाहिए परन्तु किसी भी परिस्थिति में ऐसी सेवा को राष्ट्रीय अथवा राजनीतिक लाभ प्राप्त करने का या अपने हितों को पूर्ण करने का उद्देश्य नहीं बनाना चाहिए। हम देखते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने गत छ: या सात दशकों में निर्धन देशों की सहायता करने और उन्हें विकसित करने के उद्देश्य से कई कार्यक्रम बनाए हैं। इस प्रयास में उन्होंने कई देशों के प्राकृतिक संसाधनों की खोज की है, परन्तु इन प्रयासों के बावजूद निर्धन देशों में से कोई भी देश विकसित देशों के स्तर तक नहीं पहुंच सका। इस का एक कारण निश्चय ही उन विकासशील देशों की बहुत सी सरकारों में विशाल स्तर पर रिश्वत खाने का प्रचलन है। मैं खेद के साथ कहता हूं कि इसके बावजूद विकसित देश अपने हितों को पूरा करने के लिए निरन्तर ऐसी सरकारों के साथ व्यापार करते हैं। व्यापारिक समझौते, अन्तर्राष्ट्रीय सहायता और व्यवसायिक ठेके निरन्तर जारी हैं। फलस्वरूप निर्धन और निराश जनता की परेशानी एवं अशान्ति निरन्तर बढ़ रही है। यह बात अधिकांश देशों में विद्रोह और आन्तरिक अशान्ति का कारण बन गई है। विकासशील देशों के निर्धन लोग इतने बेचैन हो गए हैं कि वे अपने ही नेताओं के विरुद्ध हो गए हैं अपितु महा शक्तियों के लोग भी। इससे उग्रवादी संगठनों का उद्देश्य पूरा हुआ है और उन्होंने इस अशान्ति का लाभ उठाया है। इस प्रकार वे ऐसे लोगों को अपने दलों में सम्मिलित करने

के लिए प्रोत्साहन भी देते आ रहे हैं और अपनी घृणित विचारधारा को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसका अन्तिम परिणाम यह निकला है कि विश्व-शान्ति का विनाश हो गया है।

अत: इस्लाम ने शान्ति के लिए विभिन्न माध्यम अपनाने की ओर हमारा ध्यान फेर दिया है। इस्लाम पूर्ण न्याय की मांग करता है। वह इस बात की मांग करता है कि सदैव सच्ची गवाही दी जाए, वह इस बात की मांग करता है कि ईर्ष्या से हमारी दृष्टि दूसरों की धन-सम्पत्तियों पर न पड़े, वह इस बात की मांग करता है कि विकसित देश अपने व्यक्तिगत हितों को एक ओर रखें और इसके विपरीत विकासशील और निर्धन देशों की नि:स्वार्थ भावना के साथ सहायता और सेवा करें। यदि ये समस्त बातें दृष्टिगत रखी जाएं तभी सच्ची शान्ति क़ायम होगी।

यदि उपरोक्त समस्त उपायों के बावजूद कोई देश सीमा का उल्लंघन करते हुए दूसरे देश पर आक्रमण करता है और उसके प्राकृतिक संसाधनों को अन्यायपूर्ण ढंग से अपने अधिकार में लेने की खोज में है तो ऐसी स्थिति में दूसरे देशों को ऐसा अत्याचार रोकने के लिए निश्चय ही उपाय करने चाहिएं, परन्तु उनको भी ऐसा करते समय न्याय से काम लेना चाहिए।

कार्यवाही करने के लिए परिस्थितियां जो कि क़ुर्आनी शिक्षाओं पर आधारित हैं, पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलहुजुरात आयत - 10 में विस्तारपूर्वक वर्णन हुई हैं जो यह शिक्षा देती हैं कि जब दो देशों का आपस में विवाद हो और यह विवाद युद्ध का रूप धारण कर ले तो दूसरी सरकारों को कठोरता के साथ उन्हें वार्तालाप की सलाह देनी चाहिए ताकि वह वार्तालाप के द्वारा एक समझौते और मैत्री की ओर

आ सकें और यदि दोनों सदस्यों में से कोई समझौते की शर्तों को नहीं मानता और युद्ध छेड़ देता है तो दूसरे देशों को संयुक्त होकर अत्याचार करने वाले से लड़ना चाहिए और जब अत्याचार करने वाली जाति पराजित हो जाए और ऐसे वार्तालाप करने पर सहमत हो जाए तो समस्त पार्टियों को एक ऐसे समझौते का प्रयास करना चाहिए जो स्थायी शान्ति और सुलह का कारण हो। ऐसी कठोर और अन्यायपूर्ण शर्तों को किसी देश पर न थोपा जाए जो किसी देश के हाथों को बांध दें, क्योंकि भविष्य में वह ऐसी अशान्ति का कारण बनेंगी जो भड़केगी और फैलेगी। ऐसी अशान्ति के फलस्वरूप और अधिक अशान्ति उत्पन्न होगी।

ऐसी परिस्थितियों में जहां एक मध्यस्थ सरकार दोनों पक्षों के मध्य संधि कराना चाहती है तो उसे शुद्ध नीयत और बिल्कुल निष्पक्षता से काम करना चाहिए और यह निष्पक्षता इस स्थिति में यथावत् रहनी चाहिए चाहे कोई पक्ष इस के विरुद्ध भी बोलता हो। अत: ऐसी परिस्थितियों में भी मध्यस्थ को क्रोध प्रकट नहीं करना चाहिए। उसे बदला लेने की ताक में नहीं रहना चाहिए और न ही उसे अन्यायपूर्ण ढंग से यह कार्य करना चाहिए। समस्त पक्षों को उनके उचित अधिकार दिए जाने चाहिएं।

अत: न्याय की मांगों को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि वे देश जो संधि करा रहे हों वे अपने व्यक्तिगत हितों को पूरा करने की टोह में न हों और न ही दोनों में से किसी देश से अनुचित लाभ प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हों। उन्हें अन्यायपूर्ण हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए अथवा दोनों पक्षों में से किसी एक पर अनुचित दबाव नहीं डालना चाहिए तथा किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित लाभ

नहीं उठाना चाहिए। ऐसे देशों पर अनावश्यक और अनुचित प्रतिबंध नहीं लगाने चाहिएं क्योंकि न तो यह न्याय है और न ही यह देशों के मध्य संबंधों को सुधारने का साधन सिद्ध हो सकता है।

समय का ध्यान रखते हुए मैंने ये बातें बड़े संक्षेप में वर्णन की हैं। सारांश यह कि यदि हम संसार में शान्ति स्थापित करने के इच्छुक हैं तो हमें अपने व्यक्तिगत हितों को एक ओर छोड़ना होगा और उसके स्थान पर राष्ट्रीय हितों की एक बड़ी भलाई के लिए हमें ऐसे परस्पर संबंध क़ायम करने होंगे जो पूर्णतया न्याय पर आधारित हों अन्यथा आप में से कुछ मुझ से सहमत होंगे कि राजनीतिक गठबंधनों के कारण भविष्य में ब्लाक बन सकते हैं और मैं तो कहता हूं कि वह बनना आरंभ हो गए हैं और फिर यह दूर नहीं कि विश्व में अशान्ति फैलती चली जाए जो अन्तत: एक बड़ी तबाही और विनाश का कारण बन जाए। ऐसे विनाश और युद्ध के प्रभाव निश्चय ही कई पीढ़ियों पर व्याप्त होंगे। अत: अमरीका को विश्व की सबसे बड़ी शक्ति होने की दृष्टि से वास्तविक न्याय को काम में लाते हुए सद्भावना के साथ जैसा कि मैंने वर्णन किया है अपनी भूमिका निभानी चाहिए। यदि अमरीका ऐसा करता है तो विश्व हमेशा उसके महान प्रयासों को बड़ी प्रशंसा के साथ स्मरण रखेगा। मेरी यह दुआ है कि यह बात वास्तविकता बन जाए।

आप सब का बहुत-बहुत धन्यवाद।

हमारा यह नियम है कि हम किसी आयोजन के समापन पर समान्यतया खामोशी के साथ दुआ करते हैं। अत: मैं दुआ कराऊंगा और अहमदी भी मेरे अनुसरण में दुआ करेंगे। आप सब हमारे अतिथि अपनी पद्धति के अनुसार यह दुआ कर सकते हैं।

शान्ति की कुन्जी — विश्व-एकता

यूरोपियन पार्लियामेंट

बरस्सेल्ज़, बेल्जियम, 2012

Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] being welcomed by Martin Schulz, President of European Parliament

His Holiness leading silent prayer at conclusion of the European Parliament event.
Seated to his right: Dr. Charles Tannock (MEP-UK), left: Rafiq Hayat (National Amir AMA UK)
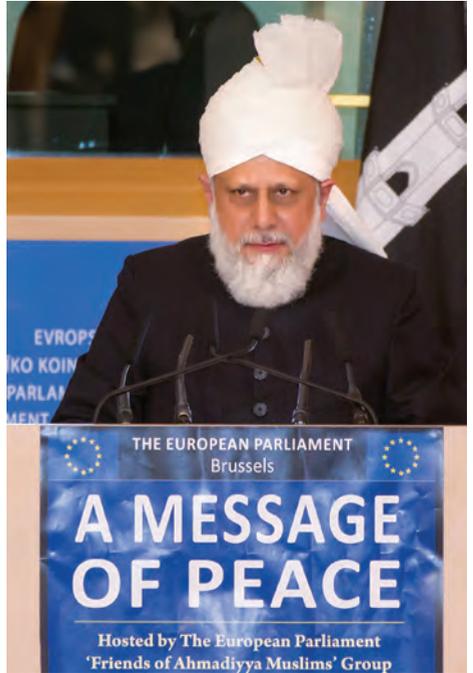
Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba] delivers the keynote address at the European Parliament event

Press Conference with Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] at European Parliament. Seated with His Holiness is Dr. Charles Tannock (MEP-UK and Chair of European Parliament Friends of Ahmadiyya Muslims Group)

Tunne Kelam (MEP Estonia & Vice-Chair of European Parliament Friends of Ahmadiyya Muslims Group) meeting with His Holiness

Phil Bennion (MEP West Midlands and member of European Parliament's South Asia Delegation) meeting with His Holiness

परिचय

दिनांक 3 तथा 4 दिसम्बर 2012 को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पांचवें उत्तराधिकारी तथा विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के प्रमुख हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अल्लाह तआला आपकी सहायता करे) ने ब्रसल्ज़ में यूरोपीयन पार्लियामेंट के अपने प्रथम दौरे के अन्तर्गत 30 देशों का प्रतिनिधित्व कर रहे 350 से अधिक गणमान्य अतिथियों से भरी सभा में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक भाषण दिया। इस सभा का आयोजन 'फ्रैंड्स ऑफ़ अहमदिया मुस्लिम्स' जो कि यूरोपियन पार्लियामेंट ग्रुप का एक नव-निर्मित संघ है के अध्यक्ष डा. चार्ल्स टैनक (MEP UK) द्वारा किया गया था। यह यूरोपियन पार्लियामेंट के सदस्यों का एक अखिल यूरोपीय तथा अखिल पार्टीय संघ का जिसका गठन यूरोपियन पार्लियामेंट में अहमदिया मुस्लिम जमाअत का विकास करने तथा यूरोप एवं विश्व के अन्य भागों में इस जमाअत के हितों के स्तर ऊंचा करने के उद्देश्य से किया गया है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब (अल्लाह आपकी सहायता करे) ने अपने दौरे के अन्तर्गत कई पार्लियामेंट के सदस्यों और उच्च पदाधिकारियों से कई भेंटे कीं। जिन से आपने भेंट की उनमें निम्नलिखित हस्तियां भी सम्मिलित हैं :-

Dr. Charles Tannock (MEP-UK)—Member of the European Parliament Foreign Affairs Committee, Member of the Sub-Committee on Human Rights, Vice-Chair of the Parliamentary Delegation for relations with the NATO Parliamentary Assembly and Chair of the European Parliament Friends of Ahmadiyya Muslims Group.

Tunne Kelam (MEP-Estonia)—Member of the European Parliament's Foreign Affairs Committee, the Sub-Committee on Security and Defence and Vice-Chair of the European Parliament Friends of Ahmadiyya Muslims Group.

Claude Moraes (MEP-UK)—Vice-Chair of the Delegation for Relations with the Arab Peninsula, Member of the Committee on Civil Liberties, Justice and Home Affairs, Deputy Leader of the European Parliamentary Labour Party and Vice-Chair of the European Parliament Friends of Ahmadiyya Muslims Group.

Barbara Lochbihler (MEP-Germany)—Chair of the European Parliament Sub-Committee on Human Rights.

Jean Lambert (MEP-UK)—Chair of the European Parliament South Asia Delegation.

Phil Bennion (MEP-UK)—Member of the European Parliament South Asia Delegation and Chairman of the LibDem European Group.

दिनांक 4 दिसम्बर 2012 को मुख्य आयोजन एवं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम के मुख्य भाषण से पूर्व यूरोपियन पार्लियामेंट के प्रेस कक्ष में एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया। चालीस मिनट की इस प्रेस कान्फ्रेंस जिसमें ब्रिटेन, स्पेन, फ्रांस बेल्जियम, पाकिस्तान एवं अन्य देशों के पत्रकार एवं मीडिया प्रतिनिधि सम्मिलित थे, में हुज़ूर ने विभिन्न पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर दिया। बी.बी.सी. के प्रतिनिधि के एक प्रश्न कि 'विश्व में इस्लाम की भूमिका क्या है' के उत्तर में हुज़ूर ने कहा, "इस्लाम का, शान्ति का संदेश विश्वव्यापी है। इसी लिए हमारा आदर्श वाक्य यही है 'प्रेम सब के लिए, घृणा किसी से नहीं'। स्पेन के एक पत्रकार के एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर ने कहा कि सभी प्रमुख धर्मों ने मूलत: शान्ति का संदेश ही दिया था अत: सच्चे मुसलमान सभी अवतारों पर ईमान लाते हैं। प्रत्येक अवतार ने यही संदेश दिया कि परमात्मा एक है। माल्टा के पत्रकार के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए हुज़ूर ने कहा कि अहमदी मुसलमानों का यह कर्त्तव्य है कि वे मानवता को परमात्मा के समीप लाएं और विश्व की जनता को एक दूसरे के अधिकारों का सम्मान एवं रक्षा हेतु उनके कर्त्तव्य के प्रति जागृत करें।

मुख्य सभा के आयोजन के समय सभा-स्थल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। 'यूरोपियन पार्लियामेंट फ्रैंड्स ऑफ अहमदिया मुस्लिम ग्रुप के अध्यक्ष तथा सभी उप-अध्यक्ष विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का स्वागत

करने के लिए स्टेज तक आए। मार्टिन शुल्ज़ MEP एवं यूरोपियन पार्लियामेंट के अध्यक्ष विशेष रूप से भेंट करने के लिए पधारे। हुज़ूर के मुख्य भाषण से पूर्व यूरोपियन पार्लियामेंट के विभिन्न सदस्यों ने सभा को सम्बोधित करते हुए अहमदिया मुस्लिम जमाअत द्वारा प्रतिपादित शान्तिपूर्ण इस्लाम के सम्बन्ध में अपनी ओर से प्रशंसा व्यक्त की। डा. चार्ल्स टैनक MEP एवं यूरोपियन पार्लियामेंट फ्रैंडस ऑफ़ अहमदिया मुस्लिम ग्रुप के अध्यक्ष ने कहा : "अहमदी मुसलमान विश्व में सहनशीलता का एक हर्षदायक एवं अभिनन्दीय उदाहरण हैं।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब, ख़लीफ़तुल मसीह एवं प्रमुख विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत का ऐतिहासिक भाषण पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

शान्ति की कुन्जी — विश्व-एकता

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रारंभ करता हूं अल्लाह के नाम से जो अनन्त कृपालु तथा दयालु है

सभी प्रतिष्ठित अतिथियो !

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

सर्वप्रथम मैं इस सभा के आयोजकों के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे यूरोपियन पार्लियामेंट में आप सब को सम्बोधित करने का अवसर प्रदान किया। मैं विभिन्न देशों के सभी प्रतिनिधि मण्डलों तथा अन्य अतिथियों का भी धन्यवाद करना चाहता हूं जो अत्यन्त प्रयास करके इस सभा में पधारे हैं।

जो लोग अहमदिया मुस्लिम जमाअत से भली भांति परिचित हैं अथवा जो इस जमाअत से पूर्णतया परिचित नहीं तथा जिनके व्यक्तिगत स्तर पर अहमदियों से सम्बन्ध हैं, वे सभी इस बात से पूर्णतया अवगत हैं कि हम एक जमाअत के रूप में शान्ति एवं सुरक्षा की स्थापना के लिए निरन्तर विश्व का ध्यानाकर्षण कराते रहते हैं। निस्संदेह हम इन उद्देश्यों की पूर्ति

के लिए अपने उपलब्ध साधनों के द्वारा भरसक प्रयत्न भी करते हैं।

अहमदिया जमाअत के प्रमुख होने के नाते मैं, जब भी अवसर प्राप्त होता है नियमित रूप से इन समस्याओं के सम्बन्ध में, बात करता हूं। शान्ति और परस्पर प्रेम की आवश्यकता के सम्बन्ध में बात करने का कारण यह नहीं है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत कोई नवीन शिक्षा प्रस्तुत कर रही है। निस्सन्देह अहमदिया जमाअत के संस्थापक के आगमन का एक प्रमुख उद्देश्य शान्ति और सौहार्द की स्थापना था, परन्तु वास्तविकता यह है कि हमारे सभी कर्म और कार्य उन शिक्षाओं के अनुरूप हैं जो इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी थीं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग के 1400 वर्ष उपरान्त दुर्भाग्यवश अधिकतर मुसलमानों ने आपकी लाई हुई पवित्र शिक्षाओं को भुला दिया। अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार परमात्मा ने इस्लाम को पुनः जीवित करने हेतु हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत को भेजा। मेरा आप से अनुरोध है कि जब मैं शान्ति और समन्वय एवं एकता के प्रोत्साहन के सम्बन्ध में इस्लामी शिक्षाओं का वर्णन करूंगा तो आप इस बात को अपने सम्मुख रखें।

मैं यह भी वर्णन करना चाहता हूं कि 'शान्ति' और 'सुरक्षा' के विभिन्न रूप एवं पक्ष हैं। प्रत्येक रूप अथवा पक्ष अपनी परिधि में महत्त्वपूर्ण है, परन्तु इसके साथ साथ एक रूप का दूसरे रूप से अन्तर्सम्बन्ध उससे भी अधिक महत्त्व रखता है। उदाहरणतया, समाज में शान्ति का मूल आधार एक परिवार की आन्तरिक शान्ति और सौहार्द

है। एक परिवार की आन्तरिक स्थिति केवल उसी परिवार तक सीमित नहीं रहती, परन्तु इसका प्रभाव उस क्षेत्र विशेष की शान्ति पर भी पड़ता है और फलस्वरूप यह स्थिति पूरे शहर की शान्ति को भी प्रभावित करती है। यदि परिवार में अव्यवस्था होगी तो स्थानीय क्षेत्र पर इस का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और अन्ततः इस का दुष्प्रभाव पूरे कस्बे अथवा शहर पर भी पड़ेगा। इसी प्रकार एक कस्बे अथवा शहर की परिस्थिति समूचे देश की शान्ति को प्रभावित करती है और अन्ततः समूचे विश्व की शान्ति और एकता को भी प्रभावित करती है। अतः यह स्पष्ट है कि यदि आप शान्ति के एक पक्ष अथवा रूप पर भी चर्चा करना चाहें तो आपको ज्ञात हो जाएगा कि इसकी परिधि सीमित नहीं रखी जा सकती, अपितु इस का क्षेत्र विस्तृत होता जाता है। इसी प्रकार हम देखते हैं कि जहां भी शान्ति का अभाव होता है तो उस समस्या का समाधान करने के लिए वर्तमान परिस्थितियों तथा शान्ति और सुरक्षा के उन पक्षों का जिन का उल्लंघन किया गया है को दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न प्रकार के उपाय करने पड़ते हैं। यदि हम इन बातों को सम्मुख रखेंगे तो स्पष्ट है कि इस पर पूर्ण चर्चा करने और इन समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए जो समय उपलब्ध है उससे भी कहीं अधिक समय की आवश्यकता है। फिर भी मैं इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं के कुछ पक्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न करूंगा।

आधुनिक युग में हम देखते हैं कि इस्लाम पर कई आरोप लगाए जाते हैं और मुख्य रूप से धर्म को अशान्ति और कलह का उत्तरदायी ठहराया जाता है। जबकि 'इस्लाम' शब्द का अर्थ ही शान्ति और सुरक्षा है और इस्लाम वह धर्म है जिसने शान्ति की स्थापना के सम्बन्ध में

विशेष मार्गदर्शन किया है और उस उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए कुछ नियम निर्दिष्ट किए हैं फिर भी इस्लाम पर ऐसे आरोप लगाए जाते हैं। इस्लाम की वास्तविक और शान्तिपूर्ण शिक्षाओं का रूप आपके सम्मुख रखने से पूर्व मैं विश्व की वर्तमान स्थिति पर एक संक्षिप्त दृष्टि डालना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि आप पहले ही इन परिस्थितियों से भली भांति परिचित होंगे, फिर भी मैं उनका वर्णन करना चाहता हूं ताकि जब मैं शान्ति और एकता के सम्बन्ध में इस्लाम की शिक्षाओं का वर्णन करूं तो आप इन को दृष्टिगत रख सकें। हम सभी इस बात को जानते हैं और स्वीकार करते हैं कि आज संसार एक विश्व-ग्राम का रूप धारण कर चुका है। हम सभी विभिन्न साधनों द्वारा, चाहे वे यातायात के आधुनिक साधन हों, चाहे प्रचार एवं प्रसार के साधन तथा इन्टरनैट हो अथवा अन्य साधन हों, परस्पर जुड़े हुए हैं। इन सब साधनों के फलस्वरूप विश्व के देश पहले से कहीं अधिक परस्पर निकट आ गए हैं। हम यह भी देखते हैं विश्व के प्रमुख देशों में प्रत्येक जाति धर्म और विभिन्न नागरिकता रखने वाले लोग बस गए हैं और परस्पर मिल कर रहते हैं। निस्सन्देह बहुत से देशों में विदेशी प्रवासियों की एक बहुत बड़ी संख्या है। ये प्रवासी अब उन देशों में इतनी सुदृढ़ता से वहां के समाज का अंग बन चुके हैं वहां की सरकार अथवा स्थानीय निवासियों के लिए उन्हें विस्थापित करना अत्यन्त कठिन ही नहीं अपितु असम्भव प्रतीत होता है। यद्यपि विदेशी प्रवासियों के आगमन को रोकने के लिए प्रयास किए गए हैं और कुछ प्रतिबंध भी लागू किए गए हैं, तथापि अब भी ऐसे विभिन्न मार्ग हैं जिन के द्वारा एक देश का नागरिक किसी अन्य देश में प्रवेश कर सकता है। यदि अवैध प्रवास को एक ओर रख दें

तो निस्संदेह कुछ ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय नियम मौजूद हैं जिन के अन्तर्गत उन लोगों को सहायता प्रदान की जाती है जो उचित कारणों से अपना देश छोड़ने पर विवश हो जाते हैं।

हम यह भी देखते हैं कि इस विशाल स्तर पर लोगों के प्रवास के फलस्वरूप कुछ देशों में चिन्ता और बेचैनी फैल रही है। इस का उत्तरदायित्व दोनों पक्षों, प्रवासियों तथा स्थानीय नागरिकों पर है। एक ओर कुछ प्रवासी स्थानीय लोगों को उत्तेजित करते हैं, तो दूसरी ओर कुछ स्थानीय निवासी असहनशीलता और अनुदारता का प्रदर्शन करते हैं। कभी-कभी घृणा की यह ज्वाला भयंकर रूप धारण कर लेती है। विशेषकर कुछ प्रवासी मुसलमानों के प्रतिकूल व्यवहार की प्रतिक्रिया में पश्चिमी देशों के स्थानीय नागरिकों की ओर से विशेष रूप से इस्लाम के विरुद्ध घृणा और वैमनस्य की भावना का प्रदर्शन किया जाता है। यह रोष और प्रतिक्रिया केवल सीमित स्तर पर नहीं होती अपितु यह अपनी चरम सीमा तक पहुँच सकती है और पहुंचती भी है। इसीलिए पश्चिमी देशों के नेता नियमित रूप से इन समस्याओं के सम्बन्ध में चर्चा करते रहते हैं।

इसी लिए कभी-कभी हम देखते हैं कि जर्मनी के चान्सलर मुसलमानों को जर्मनी का अभिन्न अंग बताते हैं, यू.के. के प्रधानमंत्री इस बात की आवश्यकता पर बल देते हैं कि मुसलमानों को समाज का अभिन्न अंग बनना चाहिए, और कुछ देशों के नेताओं ने तो मुसलमानों को चेतावनी तक दे दी है।

आन्तरिक कलह और विवाद की स्थिति यदि और अधिक बिगड़ नहीं रही, फिर भी निश्चित रूप से यह चिन्ता का विषय बन चुकी है।

ये समस्यायें बिगड़ कर शान्ति के विनाश का कारण बन सकती हैं। इस में कोई सन्देह नहीं रहना चाहिए कि इन विवादों का दुष्प्रभाव केवल पश्चिमी देशों तक सीमित रहेगा अपितु इससे समूचा विश्व और विशेषकर मुस्लिम देश इससे प्रभावित होंगे। अतः स्थिति में सुधार पैदा करने तथा शान्ति को बढ़ावा देने के लिए आवश्यकता है कि सभी वर्ग एकजुट हो कर कार्य करें। सरकारों को ऐसी नीतियां बनानी चाहिएं जिनसे शान्ति की स्थापना हो और जिनके द्वारा प्रत्येक के सम्मान की सुरक्षा हो और दूसरों की भावनाओं को आहत करने अथवा उन्हें किसी प्रकार की हानि पहुंचाने जैसी गतिविधियों को ग़ैर-क़ानूनी घोषित किया जाना चाहिए।

प्रवासी नागरिकों के संबंध में यह कहना चाहता हूं कि वे स्थानीय समाज और लोगों का अभिन्न अंग बनने की इच्छा से किसी देश में प्रवेश करें और स्थानीय लोगों को चाहिए कि वे उदारता और सहनशीलता का प्रदर्शन करें। इस के अतिरिक्त यह बात भी है कि केवल मुसलमानों पर कुछ प्रतिबंध लगाने से शान्ति स्थापित नहीं हो सकती क्योंकि केवल इन के द्वारा लोगों के विचारों में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। यह केवल मुसलमानों के लिए ही विशेष नहीं अपितु किसी भी व्यक्ति पर यदि उसके धर्म और आस्था के आधार पर प्रतिबंध लगाया जाए तो इसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप गंभीर रूप से शान्ति भंग होगी। जैसे कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूं कि कुछ देशों में विवाद बढ़ रहे हैं विशेषकर प्रवासी और स्थानीय नागरिकों के मध्य। यह स्पष्ट है कि दोनों पक्षों में सहनशीलता का अभाव पैदा हो रहा है। यूरोपीय नेतृत्व को इस वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिए और समझना चाहिए

कि धार्मिक सम्मान और परस्पर सहनशीलता की स्थापना उनका कर्त्तव्य है। प्रत्येक यूरोपीय देश में आन्तरिक रूप से और यूरोपियन तथा मुस्लिम देशों के मध्य सौहार्द के वातावरण को प्रोत्साहित करने के लिए यह अति आवश्यक है ताकि विश्व की शान्ति भंग न हो।

मैं यह स्वीकार करता हूं इन विवादों और मतभेदों का कारण केवल धर्म या आस्थाएं नहीं हैं और न ही यह पश्चिमी एवं मुस्लिम देशों के मध्य मतभेदों का प्रश्न है। वस्तुतः इस अशान्ति का मुख्य और मूल कारण अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संकट है। जब आर्थिक संकट नहीं था तो किसी को प्रवासियों के आगमन की चिन्ता नहीं थी। परन्तु अब स्थिति बदल चुकी है जो इस वर्तमान विवाद का कारण है। इसके यूरोपीय देशों के परस्पर सम्बन्धों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और फलस्वरूप कुछ यूरोपीय देशों के लोगों में परस्पर रोष एवं क्रोध की भावना निरन्तर बढ़ रही है। यह परिस्थिति प्रत्येक स्थान पर देखी जा सकती है।

यूरोपी संघ का गठन यूरोपीय देशों की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है क्योंकि यह इस महाद्वीप की एकता का एक साधन है। अतः आप सभी के परस्पर अधिकारों का सम्मान करके इस एकता की सुरक्षा के लिए भरसक प्रयास करना चाहिए। सामान्य जनता में जो चिन्ता अथवा भय है उसका निवारण करना चाहिए। एक दूसरे के समाज के लिए आपको परस्पर एक दूसरे से उचित और वास्तविक मांगों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। निस्सन्देह यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक देश की जनता की मांगें उचित और न्याय पर आधारित हों।

स्मरण रहे कि एकता में और संगठित रहने में यूरोप की शक्ति

निहित है। यह एकता आपको न केवल यूरोप में लाभकारी सिद्ध होगी अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस महाद्वीप को अपनी शक्ति और प्रभाव स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी। सत्य तो यह है कि यदि इस्लामी दृष्टिकोण से देखा जाए तो हमें समूचे विश्व की एकता के लिए संघर्ष और प्रयास करना चाहिए। पूरे विश्व में मुद्रा Currency एक समान होनी चाहिए। व्यापार और वाणिज्य की दृष्टि से विश्व को एक होना चाहिए और प्रवास और स्वतंत्र स्थानांतरण के सम्बन्ध में समानता और एकता पर आधारित व्यावहारिक नीतियां बनानी चाहिएं जिस के द्वारा समूचा विश्व एक हो जाए। सारांश यह कि सभी देशों को परस्पर सहयोग करना चाहिए ताकि अनेकता के स्थान पर एकता हो। यदि ये नीतियां अपनाई जाएं तो शीघ्र ही वर्तमान विवादों का अन्त हो जाएगा और शान्ति और परस्पर सम्मान की भावना स्थापित हो जाएगी। परन्तु शर्त यह है कि प्रत्येक देश वास्तविक न्याय के मार्ग पर चलते हुए अपने कर्त्तव्य को समझे। मुझे बड़े खेद से यह कहना पड़ रहा है यद्यपि यह एक इस्लामी शिक्षा है फिर भी स्वयं मुस्लिम देश परस्पर एकत्रित होने में विफल रहे हैं। यदि मुस्लिम देश एक हो कर परस्पर सहयोग करते तो उन्हें अपनी आन्तरिक समस्याओं के समाधान और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदैव पश्चिमी देशों से सहायता न लेनी पड़ती।

इस के पश्चात् अब मैं विश्व में चिरस्थायी शान्ति की स्थापना के संबंध में वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं का वर्णन करूंगा। सर्वप्रथम यह कि इस्लाम की यह मूल और आधारभूत शिक्षा है कि सच्चा मुसलमान वह है जिसकी ज़ुबान और हाथ से अन्य सभी शान्तिप्रिय लोग सुरक्षित रहें। यह है एक मुसलमान की परिभाषा जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने वर्णन की है। इस मूल और सुन्दर सिद्धान्त को सुनने के पश्चात् क्या इस्लाम पर कोई आरोप लगाया जा सकता है ! कदापि नहीं। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि केवल वे लोग दण्डनीय हैं जो अपनी ज़ुबान और हाथों से अन्याय और घृणा फैलाते हैं। अतः स्थानीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यदि सभी वर्ग इस स्वर्णिम सिद्धान्त की सीमा का उल्लंघन न करते तो कभी भी धार्मिक अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न न होती, कभी भी राजनीतिक विवाद न होता न ही शक्ति प्राप्त करने की इच्छा और लालच के कारण उत्पन्न होने वाली अव्यवस्था होती। यदि इन इस्लामी सिद्धान्तों का अनुसरण किया जाए तो राष्ट्रीय स्तर पर सामान्य जनता एक दूसरे के अधिकारों की रक्षा और भावनाओं का सम्मान करेगी और सरकारें अपने स्तर पर सभी नागरिकों की सुरक्षा करने के अपने कर्त्तव्य को पूरा करेंगी। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक देश दूसरे देश के साथ सच्ची सहानुभूति और दया की भावना से सहयोग करेगा।

एक अन्य मुख्य सिद्धान्त जो इस्लाम हमें सिखाता है वह यह है कि सभी वर्गों के लिए अनिवार्य है कि शान्ति को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों से वे कदाचित् किसी प्रकार का गर्व अथवा अभिमान का प्रदर्शन न करें। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूर्ण रूप से यह स्पष्ट कर दिया है कि न किसी काले को गोरे पर और न ही किसी गोरे को काले पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त है। न ही किसी यूरोपवासी को किसी अन्य देश के नागरिक पर और न ही अफ्रीका, एशिया अथवा विश्व के किसी अन्य भाग के नागरिक को किसी यूरोपवासी पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त है। राष्ट्रीयता, रंग अथवा जाति का अन्तर केवल पहचान के लिए है।

वास्तविकता यह है कि वर्तमान युग में हम सभी एक दूसरे पर

निर्भर हैं। आज यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी महाशक्तियां भी दूसरों से पूर्णतया अलग थलग रह कर जीवित नहीं रह सकतीं। अफ्रीकी देश पृथक रह कर समृद्ध बनने की आशा नहीं कर सकते और इसी प्रकार एशियाई देश अथवा विश्व के किसी अन्य भाग के निवासी शेष संसार से अलग रह कर समृद्ध नहीं बन सकते। उदाहरण के रूप में यदि आप अपनी आर्थिक स्थिति को विकसित और उन्नत करने के अभिलाषी हैं तो आपको अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। वर्तमान संसार किस प्रकार आन्तरिक रूप से परस्पर जुड़ा हुआ है, यह तथ्य इस उदाहरण से भली भान्ति स्पष्ट हो जाता है कि गत कुछ वर्षों में उत्पन्न यूरोपीय अथवा विश्व आर्थिक संकट का प्रतिकूल प्रभाव प्रत्येक देश पर किसी न किसी रूप से पड़ा है। इसी प्रकार विज्ञान तथा अन्य क्षेत्रों में उन्नति और कौशल प्राप्त करने के लिए प्रत्येक देश को एक दूसरे से अनिवार्य रूप से सहयोग करना पड़ता है।

हमें यह स्मरण रखना चाहिए, सर्वशक्तिमान परमात्मा ने संसार के सभी लोगों, चाहे वे अफ्रीका के हों या यूरोप या एशिया अथवा किसी अन्य स्थान के हों, को महान बौद्धिक शक्तियां तथा योग्यताएं प्रदान की हैं। यदि सभी वर्ग अपनी ईश्वर-प्रदत्त योग्यताओं को मानवता की भलाई के लिए यथा-सम्भव उपयोग करें तो यह विश्व शान्ति का केन्द्र बन सकता है। यदि विकसित देश विकासशील अथवा अल्प विकसित देशों की उन्नति एवं प्रगति को अवरोधित करने का प्रयास करेंगे और उनके देशों के प्रतिभाशाली और योग्य लोगों को उचित अवसर उपलब्ध नहीं कराएंगे तो निस्सन्देह शंका और चिंता बढ़ेगी और इसके फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अशान्ति अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा का विनाश कर देगी।

शान्ति के विकास के लिए इस्लाम ने दूसरा सिद्धान्त यह प्रस्तुत किया है कि हमें दूसरों के प्रति अन्याय को सहन नहीं करना चाहिए। जैसा कि हम अपने अधिकारों का भी हनन नहीं होने देते ठीक इसी प्रकार हमें दूसरों के अधिकारों के हनन को भी सहन नहीं करना चाहिए। इस्लाम की यह शिक्षा है, यदि कहीं प्रतिशोध लेना अनिवार्य हो तो वह किए गए अत्याचार के समानुपाती होना चाहिए। परन्तु यदि क्षमा करने से सुधार सम्भव हो तो विकल्प को अपनाना चाहिए। सुधार, सुलह और चिरस्थाई शान्ति की स्थापना ही वास्तविक एवं मुख्य उद्देश्य होने चाहिएं। परन्तु वास्तव में वर्तमान युग में हो क्या रहा है ? यदि कोई अपराध या अन्याय करता है तो पीड़ित व्यक्ति इस रूप में प्रतिशोध लेना चाहता है जो कि उस पर किए गए मूल अन्याय अथवा अत्याचार की तुलना में कहीं अधिक हो और पूर्णतया अनुपात में उससे कहीं बढ़ कर हो।

यथावत यही स्थिति इस्राईल और फिलस्तीन के विवाद में आजकल हम देख रहे हैं। विश्व की महाशक्तियों ने, प्रत्यक्ष रूप से सीरिया, लीबिया और मिस्र की परिस्थितियों पर अपना रोष और चिन्ता प्रकट की है जबकि यह कहा जा सकता है कि मूल रूप में ये उनके देश के आन्तरिक मामले हैं। परन्तु यह महाशक्तियां, ऐसा प्रतीत होता है कि फिलस्तीन की जनता के प्रति लेशमात्र भी चिन्तित नहीं हैं अथवा इतने चिंतित नहीं हैं जितना होना चाहिए। इन दोहरे मापदण्डों के कारण मुस्लिम देशों की प्रजा में विश्व की महाशक्तियों के प्रति द्वेष और रोष की भावना में वृद्धि हो रही है। यह रोष और शत्रुता अत्यधिक हानिकारक है और किसी भी समय यह अपनी चरम सीमा तक पहुंच कर विध्वंस का कारण बन सकती है। इसका परिणाम क्या होगा ? विकासशील

देशों को इससे कितनी हानि होगी ? क्या वे जीवित रहने के योग्य भी होंगे ? विकसित देशों पर इसका किस सीमा तक प्रभाव पड़ेगा ? केवल परमात्मा ही इन प्रश्नों के उत्तर जानता है। न मैं इन प्रश्नों का उत्तर दे सकता हूं और न ही कोई अन्य। एक बात जो निश्चित है वह यह है कि विश्व-शान्ति का विनाश हो जाएगा।

स्पष्ट रहे कि मैं किसी देश विशेष का समर्थन नहीं कर रहा। मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि अत्याचार के प्रत्येक रूप का चाहे वह कहीं भी पाया जाता हो, का उन्मूलन किया जाना चाहिए और उस का अन्त किया जाना चाहिए चाहे अत्याचार फ़िलस्तीन की जनता कर रही हो, अथवा इस्राईल के लोग कर रहे हों अथवा किसी अन्य देश के लोग कर रहे हों अत्याचारों का अन्त होना चाहिए क्योंकि यदि इन्हें रोका न गया तो घृणा की ज्वाला सम्पूर्ण विश्व को अपनी चपेट में उस सीमा तक ले लेगी कि सामान्य जनता शीघ्र ही वर्तमान आर्थिक संकट की समस्याओं को भूल जाएगी और इसके स्थान पर उन्हें कहीं अधिक भयंकर परिस्थितियों से जूझना पड़ेगा। इतने विशाल स्तर पर जन हानि होने की आशंका है कि जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

अत: यूरोपीय देशों, जिन्होंने ने द्वितीय विश्व युद्ध में बहुत बड़ी हानि उठाई है, का कर्त्तव्य है कि वे अतीत के विनाश से सीख लें और विश्व को विनाश से बचाएं। इसके लिए उन्हें न्याय की मांगों को पूरा करना होगा और अपने कर्त्तव्यों को समझने के लिए तत्पर होना होगा।

इस्लाम ने निष्पक्ष और न्यायपूर्ण ढंग से व्यवहार की आवश्यकता पर बहुत बल दिया है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि किसी भी वर्ग को अनुचित रूप से श्रेष्ठता या प्रधानता न दी जाए और न ही किसी का

अनुचित समर्थन किया जाए। ऐसा होना चाहिए कि अपराधी चाहे वह कितना ही विशाल और शक्तिशाली हो उस को यह ज्ञात होना चाहिए कि यदि वह किसी देश के विरुद्ध अन्यायपूर्ण कार्यवाही करने का प्रयास करेगा तो अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय उसको इसकी अनुमति नहीं देगा। यदि संयुक्त राष्ट्र के सभी देश, यूरोपीय संघ से लाभान्वित होने वाले सभी देश तथा वे देश जो महाशक्तियों के प्रभावाधीन हैं और अविकसित देश इस सिद्धान्त को स्वीकार करने के लिए तैयार होंगे तो ही शान्ति का उदय होगा।

एक अन्य बात यह है कि वास्तविक रूप से न्याय तभी स्थापित हो सकेगा, यदि संयुक्त राष्ट्र संघ में वीटो शक्ति अधिकृत देशों को इस बात का अनुभव हो जाए कि वे अपनी कार्यवाही के प्रति उत्तरदायी होंगे। मैं इस से भी बढ़ कर यह कहना चाहता हूं कि वीटो शक्ति का अधिकार शान्ति की स्थापना में कदाचित् सहायक सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि यह स्पष्ट है कि सभी देश एक समान स्तर पर नहीं हैं। इस वर्ष के आरंभ में भी मैंने संयुक्त राज्य अमेरिका के कैपिटल हिल में अग्रगण्य राजनीतिज्ञों एवं नीति निर्माताओं की एक सभा को सम्बोधित करते हुए इसी तथ्य का वर्णन किया था। यदि हम संयुक्तराष्ट्र संघ में मतदान के इतिहास का अध्ययन करें तो ज्ञात होगा कि वीटो शक्ति का उपयोग सदैव उन पीड़ित देशों अथवा न्यायसंगत कार्यवाही करने वाले देशों की सहायता के लिए नहीं किया गया। वास्तव में हमें ज्ञात होता है कि कुछ अवसरों पर अत्याचार को रोकने के स्थान पर उसकी सहायता करने हेतु वीटो शक्ति का दुरुपयोग किया गया। यह कोई छिपी हुई अथवा अज्ञात वास्तविकता नहीं है। कतिपय टीकाकार निर्भयतापूर्वक

इस वास्तविकता का वर्णन करते हैं अथवा लिखते हैं।

इस्लामी शिक्षा का एक अन्य सुन्दर सिद्धान्त यह है कि समाज में शान्ति स्थापित करने के लिए क्रोध का शमन किया जाए, न कि उसे न्याय और ईमानदारी के सिद्धान्तों पर विजयी होने दिया जाए। इस्लाम के आरंभिक युग का इतिहास इस बात का साक्षी है कि सच्चे मुसलमानों ने सदैव इस सिद्धान्त का पालन किया और जिन्होंने इसका उल्लंघन किया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी घोर निन्दा और भर्त्सना की। परन्तु दुर्भाग्यवश आज ऐसा नहीं होता। ऐसी घटनाएं मौजूद हैं कि सैनिकों या सिपाहियों ने जिन्हें शान्ति-स्थापना के लिए भेजा जाता है निर्दिष्ट उद्देश्यों के सर्वथा विपरीत व्यवहार किया है। उदाहरण स्वरूप कुछ देशों में विदेशी सैनिकों ने विरोधियों के मृत शरीरों के साथ अत्यन्त अपमानजनक और घृणात्मक ढंग से दुर्व्यवहार किया। क्या इस प्रकार शान्ति स्थापित की जा सकती है ? ऐसी घटनाओं की प्रतिक्रिया केवल पीड़ित देश तक सीमित नहीं रहती अपितु पूरे विश्व में इस का प्रदर्शन होता है। निस्संदेह जब मुसलमानों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है तो उग्र स्वभाव के मुसलमान, यद्यपि यह इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत है इसका अनुचित लाभ उठाते हैं और फलस्वरूप विश्व की शान्ति भंग होती है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि शान्ति केवल उसी समय स्थापित की जा सकती है जब पूर्णतया निष्पक्ष रूप से, निहित स्वार्थों से ऊपर उठ कर और प्रत्येक प्रकार की शत्रुता की भावना को त्याग कर अत्याचारी और पीड़ित दोनों की सहायता की जाए। इस क्षेत्र में प्रत्येक पक्ष को समान स्तर प्रदान करने से ही शान्ति स्थापित होती है।

सीमित समय के कारण मैं केवल एक और तथ्य का वर्णन

करूंगा। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि दूसरों के धन अथवा संसाधनों को ईर्ष्या की भावना से न देखा जाए। दूसरों की सम्पत्ति को हथियाने का लालच नहीं करना चाहिए, क्योंकि इस से भी शान्ति का ढांचा ध्वस्त हो जाता है। यदि समृद्ध देश अल्प-विकसित देशों की सम्पदा और संसाधनों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निकालने अथवा उपयोग करने का प्रयत्न करेंगे तो स्वाभाविक है कि अशान्ति फैलेगी। जहां उचित हो विकसित देश अपनी सेवाओं के बदले उचित और अल्प मात्रा में अपना भाग ले सकते हैं जब कि संसाधनों का अधिकतर भाग अविकसित देशों में जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए प्रयोग में लाना चाहिए। उन्हें विकसित होने के अवसर उपलब्ध कराना चाहिए और विकसित देशों के स्तर तक पहुंचने के लिए उनके प्रयासों में उनकी सहायता करनी चाहिए, क्योंकि केवल इसी स्थिति में शान्ति स्थापित हो सकती है। यदि ऐसे अविकसित देशों के नेता ईमानदार नहीं हैं तो पश्चिमी देशों अथवा विकसित देशों को चाहिए कि वे उन्हें अनुदान देकर स्वयं उनके देशों में विकास कार्यों का संचालन एवं निरीक्षण करें।

अभी और बहुत से तथ्य हैं जो मैं आपके समक्ष रख सकता हूं परन्तु समय के अभाव के कारण मैं केवल उन्हीं बातों तक सीमित रहूंगा जिनका मैं वर्णन कर चुका हूं। निस्संदेह जो कुछ मैंने वर्णन किया है वह इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को प्रदर्शित करता है।

एक प्रश्न है जो आपके मन में उठ सकता है। अत: मैं पहले ही उस का समाधान कर देता हूं आप यह कहेंगे कि यदि ये इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं हैं तो फिर मुस्लिम देशों में ऐसी अव्यवस्था और अशान्ति क्यों दिखाई देती है ? इसका उत्तर मैं पहले भी दे चुका हूं कि

वर्तमान युग को एक सुधारक की आवश्यकता है जो कि हमारे विश्वास के अनुसार वह अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हैं। हम अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सदस्य सदैव उनकी वास्तविक शिक्षाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। मेरा आप से अनुरोध है कि अपने-अपने प्रभावाधीन क्षेत्रों में यह जागरूकता पैदा करने का भरपूर प्रयत्न करें ताकि विश्व के प्रत्येक भाग में चिरस्थायी शान्ति की स्थापना हो सके।

यदि हम इस कार्य में विफल हो गए तो विश्व का कोई भी भाग युद्ध के विनाशकारी एवं भयंकर परिणामों से सुरक्षित नहीं रहेगा। मेरी यह प्रार्थना है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा संसार के लोगों को अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठ कर विश्व को भावी विनाश से सुरक्षित रखने के प्रयास करने का सामर्थ्य प्रदान करे। संसार में अधिकतम शक्ति आज पश्चिम के विकसित देशों के पास है, अतः दूसरों की अपेक्षा आप का अधिक कर्त्तव्य है कि इन महत्त्वपूर्ण बातों की ओर तुरन्त ध्यान दें।

अन्त में मैं आप सब का यहां आने के लिए समय निकालने और मेरी बातों को सुनने के लिए पुनः धन्यवाद करना चाहता हूं। परमात्मा आप पर अपनी कृपा करे। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

क्या मुसलमान पश्चिमी समाज का अंग बन सकते हैं ?

मस्जिद बैतुर्रशीद

हैमबर्ग, जर्मनी, 2012

Ḥaḍrat Mirza Masroor Ahmad, Khalīfatul-Masīḥ V[aba]
delivers the keynote address at Baitur-Rasheed Mosque

क्या मुसलमान
पश्चिमी समाज का अंग बन सकते हैं ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सभी प्रतिष्ठित अतिथियो !

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

सर्वप्रथम मैं उन सभी अतिथियों के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए हमारे निमंत्रण को स्वीकार किया। आप में से कई सज्जन हमारी जमाअत से भली भांति परिचित हैं अथवा अहमदी मुसलमानों से उनके बहुत पुराने मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं ; और मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिनको अहमदिया जमाअत से परिचित हुए अधिक समय नहीं हुआ उनके हृदयों में भी जमाअत के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो चुकी होगी। आप सब की यहां उपस्थिति आपके इस विश्वास का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अहमदी मुसलमानों से सम्बन्ध रखने तथा उनकी मस्जिदों में जाने से कोई खतरा नहीं है।

वास्तविकता यह है कि वर्तमान परिस्थितियों में जबकि इस्लाम के सम्बन्ध में अधिकतर समाचार और सूचनाएं अत्यन्त नकारात्मक स्वरूप प्रस्तुत करती हैं तो आप में से जो मुसलमान नहीं हैं उनके मन में अवश्य

यह भय उत्पन्न करने वाली सोच पैदा होगी कि अहमदी मस्जिद में जाना उनके लिए कई समस्याओं का कारण बन सकता है या उन्हें बहुत बड़ी हानि भी पहुंच सकती है। परन्तु जैसा कि मैंने कहा है कि आपकी यहां उपस्थिति इस विश्वास का प्रमाण है कि आपको अहमदी मुसलमानों से कोई भय नहीं और आप उन्हें अपने लिए ख़तरा नहीं समझते, यह सिद्ध करता है कि आप अहमदियों का आदर करते हैं और उन्हें अपने तथा अधिकतर निष्ठावान और शिष्ट लोगों के समान सच्चा और सभ्य समझते हैं।

परन्तु इसके साथ साथ मैं इस सम्भावना से भी इन्कार नहीं कर सकता कि आप में कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो यद्यपि आज यहां पधारे हैं उनके मन में कुछ संदेह और चिंताएं होंगी कि उनके यहां आने के कुछ प्रतिकूल परिणाम भी निकल सकते हैं। यह भी सम्भव है कि आप को यह चिंता हो कि एक दूसरे उग्र स्वभाव और मानसिकता रखने वाले लोगों के साथ बैठे हुए हैं। यदि आप में से किसी के मन में ऐसी चिन्ताएं हैं तो उन्हें तुरन्त अपने हृदय से निकाल दें। इस सम्बन्ध में हम अति सचेत और जागृत हैं और यदि कोई ऐसा उग्र प्रकृति व्यक्ति हमारी मस्जिद या क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास करेगा तो हम उसे यहां से निष्कासित करने के लिए कड़ी कार्यवाही करेंगे। अतः आप आश्वस्त रहें कि आप सुरक्षित स्थान पर हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत वास्तव में एक ऐसी जमाअत है कि यदि इसका कोई सदस्य किसी समय या स्थान पर उग्रवादी मानसिकता अथवा प्रवृत्ति का प्रदर्शन या कानून का उल्लंघन करता है या शान्ति भंग करता है तो उसे जमाअत से निष्कासित कर दिया जाता है, हम ऐसी कार्यवाही करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। क्योंकि हम 'इस्लाम' का पूर्ण आदर करते हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ ही शान्ति एवं सुरक्षा है इस्लाम शब्द का वास्तविक रूप हमारी जमाअत ने ही प्रदर्शित किया है।

इस्लाम के इस वास्तविक रूप के प्रदर्शन की पूर्वसूचना इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज से 1400 से अधिक वर्ष पूर्व अपनी एक महान भविष्यवाणी में दी थी। उस भविष्यवाणी में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सूचना दी थी कि एक ऐसा समय आएगा जब अधिकतर मुसलमान इस्लाम की वास्तविक और शुद्ध शिक्षाओं को भुला देंगे। भविष्यवाणी के अनुसार, ऐसा समय आने पर परमात्मा वास्तविक इस्लाम को संसार में पुनः स्थापित करने के लिए एक सुधारक, मसीह व महदी के रूप में भेजेगा।

हमारा अर्थात् अहमदिया मुस्लिम जमाअत का यह विश्वास है कि हमारी जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम वही व्यक्ति हैं जो उपरोक्त महान भविष्यवाणी के अनुसार भेजे गए हैं। परमात्मा की कृपा एवं दया से यह जमाअत आज विश्व के 202 देशों में स्थापित हो चुकी है। इन में से प्रत्येक देश में हर वर्ग एवं जाति से सम्बन्धित स्थानीय लोगों ने अहमदियत को स्वीकार किया है। अहमदी मुसलमान होने के साथ-साथ वे अपने-अपने देश के वफ़ादार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका भी निभा रहे हैं उनके इस्लाम के प्रति श्रद्धा प्रेम और देश के प्रति प्रेम में किसी प्रकार का कोई विवाद अथवा विरोधाभास नहीं पाया जाता। वस्तुतः ये दोनों वफ़ादारियां परस्पर जुड़ी हुई हैं। अहमदी मुसलमान जहां कहीं भी निवास करते हैं वे अपने देश के सभी नागरिकों से अधिक कानून का पालन करने वाले नागरिक हैं। निस्संदेह मैं पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हूं कि हमारी जमाअत के अधिकतर सदस्यों में ये गुण विद्यमान हैं।

इन्हीं गुणों के कारण जब भी अहमदी मुसलमान एक देश से दूसरे देश में प्रवास करते हैं अथवा जहां के स्थानीय लोग अहमदियत को

स्वीकार करते हैं, तो उन्हें नए समाज में घुल मिल जाने में कभी कोई भय या चिंता नहीं होती, और न ही उन्हें इस बात की चिन्ता होती है कि उनके नव-अंगीकृत देश के हितों का विशाल स्तर पर विकास करने में वे अपनी भूमिका किस प्रकार निभाएंगे। जहां भी अहमदी जाते हैं वे शेष सभी सच्चे नागरिकों की भांति अपने देश से प्रेम करते हैं और अपने देश की भलाई और उन्नति के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करते हुए अपना जीवनयापन करते हैं। यह इस्लाम ही है जो हमें इस प्रकार जीवन का निर्वाह करने की शिक्षा देता है और वास्तविकता यह है कि इस्लाम केवल इस का उपदेश ही नहीं देता अपितु आदेश देता है कि हम अपने देश के प्रति पूर्ण वफ़ादारी और श्रद्धा रखें। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी विशेष रूप से इस बात पर बल दिया था कि अपने देश से प्रेम करना प्रत्येक सच्चे मुसलमान के ईमान का भाग है। अतः जब अपने देश से प्रेम करना इस्लाम का एक आधारभूत अंग है, तो एक सच्चा मुसलमान किस प्रकार अपने देश से बेवफ़ाई अथवा द्रोह करके अपने ईमान को नष्ट कर सकता है ? जहां तक अहमदी मुसलमानों का सम्बन्ध है, हमारी जमाअत की प्रत्येक सभा में सभी सदस्य चाहे वे पुरुष, स्त्री, बच्चे अथवा बुज़ुर्ग हों, खड़े होकर परमात्मा को साक्षी ठहरा कर एक प्रतिज्ञा करते हैं। इस प्रतिज्ञा में वे न केवल अपने धर्म अपितु अपनी क़ौम और देश के लिए अपने प्राण, धन, समय और सम्मान न्योछावर करने का प्रण करते हैं। अतः उन लोगों से अधिक देश-भक्त नागरिक और कौन हो सकता है जिन्हें निरन्तर देश-सेवा का पाठ पढ़ाया जाता हो और बार-बार यह प्रतिज्ञा ली जाती हो कि वे अपने धर्म, क़ौम और देश के लिए प्रत्येक प्रकार का बलिदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

कुछ लोगों के मन में यह प्रश्न उभर सकता है कि यहां जर्मनी में

अधिकतर मुसलमानों की संख्या उन की है जो पाकिस्तान, तुर्की अथवा अन्य एशियाई देशों से आए हैं तो जब देश के लिए बलिदान का समय आने पर ये लोग जर्मनी की बजाए अपने मूल देश को प्रधानता देंगे। अत: मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि जब कोई जर्मनी अथवा किसी अन्य देश की नागरिकता स्वीकार कर लेता है तो वह उस देश का पूर्ण नागरिक बन जाता है। इस वर्ष के आरंभ में जर्मन सेना मुख्यालय कोबलेंज़ में अपने भाषण में मैंने यही बात कही थी। मैंने इस्लामी शिक्षाओं के दृष्टिकोण से यह स्पष्ट किया कि यदि जर्मनी का किसी ऐसे देश के साथ युद्ध छिड़ जाए जिसके मूल नागरिक ने जर्मनी की नागरिकता स्वीकार की हो तो ऐसी परिस्थिति में उस नागरिक को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए। यदि वह प्रवासी अपने मूल देश के प्रति सहानुभूति रखता है और यह अनुभव करता है कि वह जर्मनी को हानि पहुंचाने का विचार उसके मन में आ सकता है अथवा वह हानि पहुंचाएगा तो ऐसे व्यक्ति को तुरन्त अपनी नागरिकता अथवा प्रवासी नागरिक का अधिकार त्याग कर अपने मूल देश लौट जाना चाहिए। परन्तु यदि उसी देश में रहने का विकल्प अपनाना चाहता है तो इस्लाम कदाचित् किसी प्रकार के देशद्रोह की अनुमति नहीं देता। यह असंदिग्ध एवं स्पष्ट शिक्षा है। इस्लाम किसी भी प्रकार के विद्रोह की शिक्षा नहीं देता और न ही किसी नागरिक को अपने देश - मूल देश अथवा नागरिकता के देश - के विरुद्ध षडयन्त्र करने अथवा उसे किसी प्रकार की हानि पहुंचाने की अनुमति देता है। यदि कोई व्यक्ति अपने नागरिकता वाले देश के हित के विरुद्ध कार्य करता है या उसे कोई हानि पहुंचाता है उसे उस देश का शत्रु एवं देशद्रोही समझा जाना चाहिए तथा उसे देश के कानून के अनुसार दण्ड दिया जाना चाहिए।

इससे एक प्रवासी मुसलमान की स्थिति स्पष्ट हो जाती है एक

स्थानीय जर्मन अथवा किसी अन्य देश के व्यक्ति जिसने अपना धर्म परिवर्तन करके इस्लाम स्वीकार कर लिया हो उस के सम्बन्ध में यह बात पूर्णतया स्पष्ट है कि उसके पास अपने महान देश के प्रति असंदिग्ध एवं पूर्ण वफ़ादारी का प्रदर्शन करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं है। एक अन्य प्रश्न जो कभी-कभी पूछा जाता है वह यह है कि ऐसी स्थिति में पश्चिमी देशों के मुसलमानों की कैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए ? इस का उत्तर देने के लिए मैं सर्वप्रथम यह कहना चाहता हूं कि हमारी जमाअत के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हम अब ऐसे युग में रह रहे हैं जहां धार्मिक युद्धों का पूर्णतया अन्त हो चुका है। इतिहास से ज्ञात होता है कि ऐसा भी समय था जब मुसलमानों तथा अन्य धर्मावलम्बियों के मध्य युद्ध और लड़ाइयां हुईं। उन युद्धों में ग़ैर-मुस्लिमों का उद्देश्य मुसलमानों को मारना और इस्लाम का अन्त करना था।

अधिकतर प्रारम्भिक युद्धों में ग़ैर मुस्लिमों ने ही आक्रमण करने में पहल की थी और इस प्रकार मुसलमानों के पास अपना और धर्म का प्रतिरक्षण करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं था। किन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट कर दिया है कि अब ऐसी परिस्थितियां नहीं रहीं क्योंकि वर्तमान समय में ऐसी कोई सरकारें नहीं जो इस्लाम का अन्त करने के उद्देश्य से युद्ध की घोषणा करती हों अथवा युद्ध करती हों। इस के विपरीत अधिकतर पश्चिमी और ग़ैर मुस्लिम देशों में विशाल स्तर पर धार्मिक स्वतंत्रता उपलब्ध है। हमारी जमाअत अति आभारी है कि ऐसी स्वतन्त्रता उपलब्ध है जो अहमदी मुसलमानों को ग़ैर मुस्लिम देशों में इस्लाम का प्रचार करने की अनुमति प्रदान करती है। इसी के फलस्वरूप हमें पश्चिमी देशों को इस्लाम की वास्तविक एवं

अनुपम शिक्षाओं, जो कि शान्ति और एकता पर आधारित हैं से परिचित कराने का अवसर प्राप्त होता है। अत: स्पष्ट है कि आज धार्मिक मुद्‌दों का कोई प्रश्न ही नहीं है। अब केवल एक ही स्थिति उत्पन्न हो सकती है कि मुस्लिम-प्रधान देश तथा ईसाई-प्रधान देश अथवा अन्य देश में ऐसा युद्ध छिड़ जाए जिस का धर्म से सम्बन्ध न हो। ऐसी स्थिति में ईसाई अथवा किसी अन्य धर्म-प्रधान देशों के मुसलमान नागरिकों को कैसी प्रक्रिया व्यक्त करनी चाहिए ? इसके उत्तर के लिए इस्लाम ने एक स्वर्णिम सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। यदि कोई मुस्लिम देश अन्याय अथवा अत्याचार करता है तो उसको रोका जाना चाहिए। यदि अन्याय अथवा अत्याचार ईसाई देश ने किया है तो उसे भी रोका जाना चाहिए।

एक साधारण नागरिक व्यक्तिगत स्तर पर अपने देश को अन्याय और अत्याचार से कैसे रोक सकता है ? उत्तर अत्यन्त सरल है। वर्तमान युग में सभी पश्चिमी देशों में लोकतन्त्र है। यदि कोई न्यायप्रिय नागरिक अपनी सरकार को अन्यायपूर्ण ढंग से व्यवहार करता देखता है तो उसके विरुद्ध आवाज़ उठा सकता है और अपने देश को सही मार्ग पर लाने का प्रयास कर सकता है अपितु लोगों का एक समूह इसके विरुद्ध आवाज़ उठा सकता है। यदि कोई नागरिक अपने देश को किसी अन्य देश के प्रभुत्व पर आक्रमण करता हुआ देखता है, तो उसे चाहिए कि वह अपनी सरकार का इस ओर ध्यानाकर्षण कराकर अपनी चिन्ता व्यक्त करे। शान्तिपूर्ण ढंग से विरोध अथवा रोष प्रदर्शन करना विद्रोह की परिभाषा के अन्तर्गत नहीं आता। इसके विपरीत यह अपने देश के प्रति सच्चे प्रेम का प्रदर्शन है। एक न्यायप्रिय नागरिक कदाचित् यह नहीं चाहता कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में उसके देश की प्रतिष्ठा धूमिल हो अथवा अपमानित हो। अत: वह अपने देश का उसके कर्त्तव्य की ओर ध्यानाकर्षण करा

कर अपने देश-प्रेम एवं देश-भक्ति का प्रदर्शन करता है।

जहां तक अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय तथा उसकी संस्थाओं का संबंध है, इस्लाम की यह शिक्षा है कि यदि किसी देश पर अन्यायपूर्ण आक्रमण होता है, तो शेष देशों को एकत्र होकर आक्रमणकारी को रोकना चाहिए। यदि आक्रमणकारी देश को सद्बुद्धि आ जाती है और वह आक्रमण से पीछे हट जाता है तो उस पर प्रतिशोधवश अथवा इस स्थिति का अनुचित लाभ उठाने हेतु कठोर दण्ड देने अथवा अन्यायपूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्णय नहीं करना चाहिए। इस्लामी शिक्षाओं का सार यह है कि आप शान्ति का प्रसार करें। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यहां तक कहा है कि मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़ुबान से अन्य लोग सुरक्षित रहें। जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूं इस्लाम ने यह शिक्षा दी है कि हमें कभी भी अन्याय और अत्याचार में किसी की सहायता नहीं करनी चाहिए। यही वह सुन्दर एवं नीतिपूर्ण शिक्षा है जो एक सच्चे मुसलमान को चाहे वह किसी भी देश का नागरिक हो सम्मान और आदर का स्थान प्रदान करता है। निस्सन्देह सभी सभ्य और सच्चे नागरिक ऐसे शान्तिप्रिय तथा दयाशील लोगों को अपने समाज का अंग बनाने की कामना करेंगे।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को अपना जीवन व्यतीत करने के लिए एक अन्य सुन्दर शिक्षा यह दी है कि एक सच्चे मोमिन को सदैव पुण्य की खोज में व्यस्त रहना चाहिए। आप ने यह शिक्षा दी कि एक मुसलमान को जहां से भी कोई ज्ञान की बात अथवा कोई उत्तम विचार मिले तो उसे अपनी निजी सम्पत्ति समझ कर अपना लेना चाहिए। अतः जिस दृढ़ता और संकल्प से एक व्यक्ति अपनी निजी सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास करता है, ठीक उसी

प्रकार मुसलमानों को यह शिक्षा दी गई है कि वे पुण्य बातों और उत्तम विचारों को जहां कहीं भी पाएं उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करें। ऐसे समय में जब कि प्रवासी नागरिकों को स्थानीय समाज का अंग बनाने के सम्बन्ध में बहुत सी शंकाएं उत्पन्न हो रही हैं, यह एक अत्यन्त सुन्दर एवं सम्पूर्ण मागदर्शक सिद्धान्त है। मुसलमानों को यह शिक्षा दी है कि अपने स्थानीय समाज में घुल मिल कर रहने तथा परस्पर सम्मान की भावना पैदा करने के लिए आवश्यक है कि वे प्रत्येक समाज, धर्म, शहर और देश के नैतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करें। केवल ज्ञान प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं अपितु मुसलमानों को ऐसे मूल्यों को निजी जीवन का अंग बनाने का भरपूर प्रयास करना होगा। यह है वह मार्गदर्शक सिद्धान्त जो वास्तव में परस्पर एकता, प्रेम तथा विश्वास की भावना उत्पन्न करता है। निस्संदेह एक सच्चे मोमिन से अधिक शान्तिप्रिय अन्य कौन हो सकता है जो अपनी धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ-साथ अपने अथवा किसी अन्य समाज के उच्च नैतिक मूल्यों को भी आत्मसात करने का प्रयत्न करता है। एक सच्चे मोमिन से अधिक अन्य कौन व्यक्ति शान्ति एवं सुरक्षा का प्रसार कर सकता है ?

वर्तमान युग में संसार उपलब्ध संचार-माध्यमों के फलस्वरूप एक विश्व-ग्राम बन चुका है, इस के सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज से लगभग 1400 वर्ष पूर्व भविष्यवाणी कर दी थी कि ऐसा समय आएगा जब समस्त संसार एक इकाई की भांति हो जाएगा और दूरियां कम होती प्रतीत होंगी। आपने कहा था कि आधुनिक और तीव्र संसार साधनों के फलस्वरूप लोग पूरे विश्व को देख सकेंगे। वास्तव में यह पवित्र क़ुर्आन की भविष्यवाणी जिसकी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विस्तारपूर्वक व्याख्या की है। इस सम्बन्ध में हज़रत

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी है कि जब ऐसा युग आएगा तो लोगों को चाहिए कि एक दूसरे की अच्छी बातों को सीखें और उनको आत्मसात करें, ठीक उसी प्रकार जैसे कि वे अपनी खोई हुई सम्पत्ति की खोज करते हैं। सारांश यह है कि सभी सद्‌गुणों को ग्रहण करना चाहिए और बुरी बातों से बचना चाहिए। पवित्र क़ुर्आन ने इस आदेश की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया है कि सच्चा मुसलमान वह है जो पुण्य का उपदेश देता है और पाप से रोकता है। उपरोक्त सभी बातों को सम्मुख रखते हुए ऐसा कौन सा देश या समाज है जो ऐसे शान्तिप्रिय मुसलमानों अथवा इस्लाम को अपने मध्य सहन नहीं कर सकता अथवा स्वीकार नहीं कर सकता ? गत वर्ष मुझे बर्लिन के मेयर से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने उन पर यह स्पष्ट किया कि इस्लाम यह शिक्षा देता है कि हमें किसी भी देश की अच्छाई को इस प्रकार अपनाना चाहिए जैसे कि वह हमारी निजी सम्पत्ति है। इस के उत्तर में उन्होंने कहा कि यदि आप इस शिक्षा का पालन करेंगे तो निस्संदेह समस्त विश्व आप के साथ सहयोग करते हुए आपका समर्थन करेगा।

मुझे यह सुन कर अत्यन्त आश्चर्य और खेद हुआ कि जर्मनी के कुछ भागों में ऐसे लोग हैं जो यह दावा करते हैं कि न मुसलमानों और न ही इस्लाम में जर्मन समाज का अंग बनने का सामर्थ्य है। निस्संदेह यह सत्य है कि जो इस्लाम उग्रवादियों अथवा आतंकवादियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है उसमें यह योग्यता नहीं है कि वह जर्मन तो क्या किसी भी देश के समाज का अंग बन सके। ऐसा समय अवश्य आएगा जब ऐसी उग्रवादी विचारधारा का मुस्लिम देशों में भी कड़ा विरोध किया जाएगा। निस्संदेह सच्चा इस्लाम जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रस्तुत किया है, सभ्य और सच्चे लोगों को सदैव अपनी ओर आकर्षित करता रहेगा। वर्तमान युग

में इस्लाम की वास्तविक एवं मूल शिक्षाओं को पुनर्जीवित करने के लिए परमात्मा ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दासता के अधीन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है। अतः आपकी जमाअत इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का पालन तथा प्रचार करती है।

यह स्पष्ट रहे कि कोई भी न्यायप्रिय यह दावा नहीं कर सकता कि इस्लाम किसी अन्य समाज का अंग नहीं बन सकता। वास्तविक इस्लाम वह है जो पुण्य और अच्छाई का प्रसार करता है और प्रत्येक प्रकार के पाप तथा अन्याय का निषेध करता है। अतः यह प्रश्न ही व्यर्थ है कि इस्लाम किसी अन्य समाज का अंग बनने में सक्षम नहीं, अपितु इस्लाम तो स्वाभाविक रूप से एक चुम्बक की तरह समाज को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि एक व्यक्ति को न केवल अपने लिए शान्ति की कामना और प्रयास करना चाहिए अपितु दूसरे लोगों तक उसी प्रबलता के साथ शान्ति और एकता का प्रसार करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। यह निःस्वार्थ भावना विश्व में शान्ति स्थापित करने का मार्ग है। क्या कोई ऐसा समाज है जो ऐसी शिक्षाओं की प्रशंसा नहीं करता और ऐसी विचारधारा को स्वीकार नहीं करता ? निस्सन्देह कोई भी सभ्य समाज अपने अन्दर पाप और अनैतिकता के प्रसार की कदाचित् अनुमति नहीं दे सकता और इसी प्रकार वह शान्ति और अच्छाई के प्रोत्साहन का कभी विरोध नहीं कर सकता।

अच्छाई की परिभाषा करते समय सम्भव है कि एक धार्मिक और सांसारिक व्यक्ति की परिभाषा में बहुत अन्तर हो सकता है। इस्लाम सद्गुणों और अच्छाई के जिन रूपों की बात करता है उनमें से दो गुण सबसे महत्त्वपूर्ण हैं जो अच्छाई के शेष सभी रूपों का उद्गम हैं। एक परमात्मा के प्रति कर्त्तव्य और दूसरा मानवता के प्रति कर्त्तव्य। प्रथम

प्रकार के कर्त्तव्य की परिभाषा में एक धार्मिक और सांसारिक व्यक्ति में मतभेद हो सकता है परन्तु द्वितीय प्रकार अर्थात् मानवता के प्रति कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में कोई मतभेद नहीं है। परमात्मा के प्रति कर्त्तव्यों का सम्बन्ध उपासना से है और सभी धर्म इस विषय में अपने अनुयायियों का मार्गदर्शन करते हैं। मानवता के प्रति कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में धर्म और समाज दोनों ने मानव को शिक्षा दी है। इस्लाम मानवता के प्रति कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में अत्यन्त विस्तार और गहराई से शिक्षा देता है और इस समय इन सभी का वर्णन करना असंभव है। परन्तु मैं इस्लाम द्वारा स्थापित कुछ महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्यों का वर्णन करूंगा जो समाज में शान्ति स्थापित करने के लिए अति आवश्यक हैं।

इस्लाम यह शिक्षा देता है कि हमें दूसरे लोगों की भावनाओं का आदर और सम्मान करना चाहिए। इस में दूसरों की धार्मिक भावनाएं और अन्य सामान्य सामाजिक मुद्दे भी सम्मिलित हैं। एक अवसर पर एक यहूदी ने जब अपने और एक मुसलमान के मध्य विवाद का वर्णन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया तो आप ने उस यहूदी की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हुए उसका समर्थन किया। उस यहूदी की भावनाओं का आदर करते हुए मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह जानते हुए, कि आप ही अन्तिम धर्म-विधान लाने वाले हैं, उस मुसलमान को डांटते हुए कहा कि तुम्हें यह दावा नहीं करना चाहिए कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मूसा अलैहिस्सलाम से श्रेष्ठ हैं। इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरों की भावनाओं का सम्मान करके समाज के भीतर शान्ति की स्थापना की।

इस्लाम की एक अन्य महान शिक्षा यह है कि निर्धन और जीवन की मूल आवश्यकताओं से वंचित लोगों के अधिकारों को पूर्ण रूप से

क्रियान्वित किया जाए। इस विषय में इस्लाम यह शिक्षा देता है कि ऐसी योजनाएं बनानी चाहिएं कि जिन के द्वारा समाज के वंचित वर्ग का जीवन-स्तर ऊंचा उठ सके। हमें निःस्वार्थ भावना से वंचित वर्ग की सहायता करनी चाहिए और किसी भी रूप में उन का शोषण नहीं करना चाहिए।

दुर्भाग्यवश आज के समाज में दिखावे के रूप में तो वंचित वर्ग की सहायता के लिए योजनाएं बनाई जाती हैं, परन्तु वास्तव में ये सभी ऋण प्रणाली पर आधारित होती हैं जो कि ब्याज सहित लौटाना होता है। उदाहरणस्वरूप विद्यार्थियों की शिक्षा पूर्ति हेतु ऋण उपलब्ध कराया जाता है अथवा लोग कोई व्यापार करने के लिए ऋण लेते हैं, परन्तु यह ऋण चुकाने में कई वर्ष अपितु कई दशक लग जाते हैं। यदि कई वर्षों के संघर्ष के पश्चात् कोई वित्तीय संकट उत्पन्न हो जाए तो वे जस के तस अपनी पुरानी हालत में आ जाते हैं अपितु उस से भी बदतर हो जाते हैं। गत कुछ वर्षों में हम विश्व के अधिकांश भागों को आर्थिक संकट की चपेट में आने की असंख्य घटनाएं देख चुके हैं।

इस्लाम के विरुद्ध सामान्यतः यह आरोप लगाया जाता है कि वह स्त्रियों के साथ न्याय और समानता का व्यवहार नहीं करता। परन्तु यह आरोप निराधार है। इस्लाम ने स्त्रियों को सम्मान एवं आदर प्रदान किया है। मैं एक या दो उदाहरण प्रस्तुत करूंगा। जब स्त्रियों को मात्र एक सम्पत्ति समझा जाता था, उस समय इस्लाम ने स्त्री को पति के दुर्व्यवहार के कारण 'ख़ुलअ' (आज़ादी) लेने का अधिकार दिया जबकि विकसित देशों में अभी गत शताब्दी में ही स्त्रियों को यह अधिकार विधिवत रूप से दिया गया है। इस के अतिरिक्त जब स्त्रियों का कोई मान-सम्मान अथवा अधिकार नहीं था उस समय इस्लाम ने स्त्रियों को पैतृक सम्पत्ति में अधिकार प्रदान किया। जबकि यूरोपीय देशों में स्त्रियों को यह अधिकार

अभी कुछ समय पहले दिए गए हैं। पड़ोसियों के अधिकारों के सम्बन्ध में भी इस्लाम हमें यह शिक्षा देता है जिसे पवित्र क़ुर्आन ने विस्तारपूर्वक मार्गदर्शन किया है कि पड़ोसी की परिभाषा में कौन-कौन सम्मिलित है और उसके अधिकार क्या हैं। पड़ोसियों में वे लोग सम्मिलित हैं जो आपके साथ उठते बैठते हों, आपके निकट निवास करने वाले, आपके परिचित और वे भी जो आपके परिचित न हों। वास्तव में पड़ोसी की परिभाषा के अन्तर्गत आपके इर्द-गिर्द के लगभग 40 घर सम्मिलित हैं। जो आपके साथ यात्रा करते हैं वे भी आपके पड़ोसी हैं अतः उन का ध्यान रखने का भी हमें आदेश दिया गया है। इस अधिकार पर इतना बल दिया गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मन में यह विचार आने लगा कि कहीं पड़ोसियों को सम्पत्ति में अधिकार न दे दिया जाए। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यहां तक कहा है कि ऐसे व्यक्ति को, जिसका पड़ोसी उससे सुरक्षित नहीं, मोमिन या मुसलमान नहीं कहा जा सकता। दूसरों से भलाई के लिए इस्लाम का एक अन्य आदेश यह भी है कि समाज के कमज़ोर वर्ग का जीवन स्तर ऊंचा करने के कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए सभी वर्ग परस्पर एकजुट होकर कार्य करें। अतः अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस कर्त्तव्य की पूर्ति में अपनी भूमिका निभाते हुए विश्व के निर्धन और वंचित वर्ग वाले क्षेत्रों में प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा का प्रबन्ध कर रही है। हम स्कूलों का निर्माण एवं संचालन कर रहे हैं और उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति और अन्य प्रकार से वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे हैं ताकि वंचित वर्ग के लोग उन्नति करके स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बन सकें।

इस्लाम का एक अन्य आदेश है कि तुम अपनी सभी प्रतिज्ञाएं और वादे पूरे करो। इन में वे सभी वचन सम्मिलित हैं जो तुम एक दूसरे से करते हो और इस्लाम का यह आदेश है कि एक नागरिक के रूप में

अपने देश से वफ़ादारी की जो प्रतिज्ञा करते हो उसे अनिवार्य रूप से पूर्ण करो। इस सम्बन्ध में मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूं। ये हैं वे कुछ तथ्य जिन्हें मैंने आपके समक्ष इस उद्देश्य से प्रस्तुत किया है कि आप पर यह सत्य प्रकट हो जाए कि इस्लाम एक अत्यन्त दया और प्रेम का धर्म है। अत्यन्त खेद का विषय है कि जिस प्रबलता के साथ इस्लाम विश्व-शान्ति की शिक्षा देता है, इस्लाम के विरोधी अथवा जो इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से अनभिज्ञ हैं उसी कट्टरता के साथ इस्लाम के विरुद्ध निराधार आरोप लगाते हैं। जैसा कि मैंने वर्णन किया है। वर्तमान युग में अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लाम के वास्तविक सन्देश का प्रचार और प्रदर्शन कर रही है। इस वास्तविकता को सम्मुख रखते हुए मैं उन लोगों से, जो मुसलमानों के कुछ एक लोगों की गतिविधियों के आधार पर इस्लाम पर आरोप लगाते हैं, यह अनुरोध करता हूं कि निस्संदेह आप ऐसे व्यक्तियों को इसके लिए उत्तरदायी ठहराएं परन्तु इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को अपमानित अथवा बदनाम करने के लिए ऐसे अनुचित उदाहरणों का प्रयोग न करें।

आपको यह नहीं समझना चाहिए कि इस्लाम की शिक्षाएं जर्मनी अथवा किसी अन्य देश के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती हैं। आप को इस विषय में चिन्तित नहीं होना चाहिए कि कोई मुसलमान जर्मन समाज का अभिन्न अंग बन सकता है अथवा नहीं। जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूं कि इस्लाम की यह विशिष्टता है कि उसने मुसलमानों को यह शिक्षा दी है कि सभी सद्गुणों को ग्रहण करो। अतः निस्संदेह मुसलमान किसी भी समाज का अंग बन कर जीवन व्यतीत कर सकता है। यदि कोई इसके विपरीत व्यवहार करता है तो वह केवल नाममात्र का मुसलमान है, इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का अनुयायी नहीं। यदि मुसलमानों

को किसी अनुचित कार्य करने अथवा मर्यादा और धर्म की पवित्रता के सिद्धान्तों से सम्बन्धित क़ुर्आनी शिक्षाओं की अवहेलना करने अथवा सदाचार के विरुद्ध आचरण करने का आदेश दिया जाए तो निस्संदेह वे ऐसा नहीं कर सकते। यह विषय समाज का अंग बन कर रहने से सम्बन्धित नहीं है अपितु व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता से सम्बन्धित है।

धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन ऐसा प्रश्न नहीं कि केवल मुसलमान इसका विरोध करते हैं अपितु सभी सभ्य और शिक्षित लोग भी इसके विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं और खुले आम यह घोषणा करते हैं कि किसी सरकार अथवा समाज को किसी व्यक्ति के धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। मेरी यह प्रार्थना है कि जर्मनी और अन्य सभी देश जो वास्तव में विभिन्न संस्कृतियों और राष्ट्रीयता से सम्बन्ध रखने वाले लोगों का निवास स्थान बन चुके हैं सहनशीलता और परस्पर भावनाओं का सम्मान करने के उच्च आदर्शों का प्रदर्शन करें। परमात्मा करे इस प्रकार वे परस्पर प्रेम, सहानुभूति तथा शान्ति का प्रदर्शन करने वालों के लिए मार्गदर्शक बन जाएं। यह विश्व में चिर स्थायी शान्ति और सुरक्षा स्थापित करने का सुनिश्चित माध्यम सिद्ध होगा जिस के फलस्वरूप विश्व को उस विनाश से सुरक्षित रखा जा सकेगा जिसकी ओर वह परस्पर शान्ति के अभाव के कारण अग्रसर है।

भयंकर विनाश का खतरा हमारे ऊपर मंडरा रहा है। अत: इस सर्वनाश से सुरक्षित रहने के लिए प्रत्येक देश और प्रत्येक व्यक्ति के लिए चाहे वह धार्मिक हो अथवा न हो, अत्यन्त सावधानीपूर्वक आगे बढ़ने की आवश्यकता है। परमात्मा करे विश्व का प्रत्येक व्यक्ति इस वास्तविकता को समझे। अन्त में मैं आप सभी का पुन: धन्यवाद करना चाहता हूं कि आज आप समय निकाल कर यहां पधारे और मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुना। अल्लाह आप सब पर अपनी कृपा करे। आप का बहुत बहुत धन्यवाद।

इस्लाम —
शान्ति और दया का धर्म

पार्लियामेंट हाउसेज़,

लन्दन, यू.के. 2013

The Deputy Prime Minister, Rt Hon Nick Clegg in discussion with Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba], House of Commons, London, 11th June 2013

The Home Secretary, Rt Hon Theresa May MP with Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

The Shadow Foreign Minister Rt Hon Douglas Alexander with Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

Rt. Hon Ed Davey MP with Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] received at the House of Commons by Rt Hon Ed Davey MP
London, 11th June 2013

Rt Hon Ed Davey MP escorts Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] through Westminster Hall, House of Commons, London, 11th June 2013

Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] delivering his historic speech to Parliamentarians, VIPs and diplomats at the House of Commons, London, 11th June 2013

परिचय

यू.के. में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने पर लन्दन में पार्लियामेंट हाऊसिज़ में 11 जून 2013 को शताब्दी समारोह आयोजन के अवसर पर विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम (अल्लाह आपका सहायक हो) ने एक भाषण दिया था।

इस शताब्दी समारोह में 68 उच्च पदाधिकारी सम्मिलित हुए जिनमें 30 पार्लियामेंट सदस्य, और 12 हाऊस ऑफ़ लार्डस के सदस्य जिनमें 6 कैबिनेट मंत्री और 2 मंत्री शामिल थे। विभिन्न टी.वी. चैनल्ज़ - BBC, Sky TV और ITV के प्रतिनिधि भी इस समारोह में सम्मिलित हुए। उपस्थित लोगों में निम्नलिखित उच्च पदाधिकारी भी सम्मिलित थे।

Secretary of State for Energy and Climate Change The Rt Hon. Ed Davey MP, the Deputy Prime Minister The Rt Hon. Nick Clegg MP, the Home Secretary The Rt Hon. Theresa May MP, the Shadow Foreign Secretary The Rt Hon. Douglas Alexander

MP, the Chairman of the Home Affairs Select Committee Rt Hon. Keith Vaz MP and Member of Parliament for Mitcham and Morden Siobhain McDonaugh MP.

इस्लाम —
शान्ति और दया का धर्म

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आरम्भ करता हूं अल्लाह के नाम से जो अनन्त कृपालु एवं अत्यंत दयालु है।

समस्त विशिष्ट अतिथिगण !

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

अल्लाह की कृपा एवं शान्ति आप सब पर हो।

सर्वप्रथम मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत के उन सभी मित्रों का धन्यवाद करना चाहता हूं जिन्होंने हमारे साथ अपनी मित्रता एवं घनिष्ठ संबंधों का प्रदर्शन करते हुए यू.के. में हमारी जमाअत के शत वर्ष पूरे होने पर इस शताब्दी समारोह का आयोजन पार्लियामेंट हाऊसेज़ में किया है। मैं उन सभी अतिथियों के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने आज यहां उपस्थित हो कर इस समारोह को निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण और सफल बनाया है। मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई है कि

आप में बहुत से ऐसे लोग यहां विराजमान हैं जो किसी अन्य सभा या कार्य में व्यस्त नहीं हैं।

आप के इस शुभ प्रयास और भावना के प्रति धन्यवाद और प्रशंसा प्रकट करने के साथ-साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि मेरी यह हार्दिक अभिलाषा और प्रार्थना है कि इस विशाल एवं सुन्दर भवन के सभी विभाग तथा उनमें कार्यरत सभी लोग अपने देश एवं उसकी प्रजा के प्रति अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने वाले हों। मैं यह आशा और प्रार्थना भी करता हूं आप सब अन्य देशों के साथ मधुर सम्बन्धों को सुदृढ़ करने, और न्याय के मार्ग का पालन करते हुए ऐसे निर्णय करने वाले हों जो सभी वर्गों अथवा पार्टियों के लिए हितकारी हों। यदि इस भावना को अपनाया गया तो इससे अति लाभकारी परिणाम अर्थात् - प्रेम, सहानुभूति तथा भ्रातृत्व उत्पन्न होंगे जिन के द्वारा विश्व वास्तविक अर्थों में शान्ति एवं समृद्धि का केन्द्र बन सकेगा।

मेरी यह इच्छा और प्रार्थना समस्त अहमदी मुसलमानों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है क्योंकि हमारा यह विश्वास है कि अपने देश के प्रति और सामूहिक रूप से समस्त मानवजाति से प्रेम करना नितान्त आवश्यक है। निस्संदेह अहमदी मुसलमान यह विश्वास रखते हैं कि अपने देश से प्रेम करना उनके ईमान का एक अनिवार्य अंग है क्योंकि इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी दृढ़ता के साथ इसकी शिक्षा और आदेश दिया है। अतः मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि प्रत्येक अहमदी मुसलमान जो यू.के. का नागरिक है, चाहे वह यू.के. में पैदा हुआ है अथवा अन्य देश से प्रवास करके यहां नागरिकता प्राप्त की हो, वह पूर्णतया इस देश के प्रति वफ़ादार है और इस देश से हार्दिक प्रेम करता है। वे केवल इस महान देश की

उन्नति एवं समृद्धि की कामना करते हैं।

दूसरे देशों से प्रवास करके यू.के. में बसने वाले लोगों की संख्या बहुत बड़ी है और वे इस देश की कुल जनसंख्या का 14-15 प्रतिशत हैं। अतः ब्रिटेन के लोगों ने दूसरे देशों से प्रवास करके आए लोगों को अपने देश के नागरिक तथा ब्रिटिश समाज की रचना के अंश के रूप में स्वीकार करने में जिस उदारता और सहिष्णुता का प्रदर्शन किया है उसका वर्णन एवं प्रशंसा किए बिना मैं अपने भाषण को आगे नहीं बढ़ा सकता। इस प्रकार जो लोग अन्य देशों से यहां बसने आए हैं नैतिक रूप से उनका यह अनिवार्य कर्त्तव्य है वे स्वयं को इस देश का वफ़ादार नागरिक सिद्ध करें और समस्त प्रकार की व्यवस्था और कलह के निवारण के लिए सरकार के प्रयासों का समर्थन करें। जहां तक अहमदिया मुस्लिम जमाअत का संबंध है इसके सदस्य चाहे वे किसी भी देश में रहते हों इस सिद्धान्त का पालन करते हैं।

जैसा कि आपको ज्ञात है कि इस समय हम यू.के. में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थापना के शताब्दी समारोह का आयोजन कर रहे हैं। गत सौ वर्षों का इतिहास इस बात को सिद्ध करता है और इस बात का गवाह है कि अहमदिया जमाअत के सदस्यों ने सदैव अपने देश के प्रति वफ़ादारी की मांगों को पूरा किया है और प्रत्येक सरकार के उग्रवाद, विद्रोह और अव्यवस्था से वे सदैव दूर रहे हैं। वास्तव में इस वफ़ादारी और देश प्रेम की विचारधारा का मूल कारण यह है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक सच्ची इस्लामी जमाअत है। हमारी जमाअत दूसरों से सर्वथा विशेष है क्योंकि हमने निरन्तर इस्लाम की वास्तविक एवं शान्तिपूर्ण शिक्षाओं से विश्व के लोगों को परिचित कराया है और हमारा सदैव यह प्रयास रहा है कि इन शिक्षाओं को वास्तविक इस्लाम के रूप

में विश्व में स्वीकृति मिले।

इस संक्षिप्त परिचय के उपरान्त मैं अपने भाषण के मुख्य विषय की ओर आता हूं। हमारी जमाअत शान्ति, सुलह, समन्वय एवं एकता का झंडा ऊंचा करने वाली है और हमारा आदर्श है 'प्रेम सब के लिए, घृणा किसी से नहीं'। कुछ हमारे परिचित ग़ैर मुस्लिम लोग या जिनके साथ हमारे निकट सम्बन्ध हैं, वे इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लाम को अपने शान्ति और भाईचारे के संदेश का स्रोत बताती है। उनके इस आश्चर्य और अचम्भे का कारण यह है कि वे यह अनुभव करते हैं कि इस्लाम के नाम-मात्र विद्वान और अन्य इस्लामी समुदाय सर्वथा पृथक रूप से आचरण करते हैं और एक अलग ही संदेश का प्रचार करते हैं।

इस अंतर को स्पष्ट करने के लिए मैं यह बताना चाहता हूं कि अहमदी मुसलमान इस बात पर विश्वास रखते हैं कि वर्तमान युग में 'तलवार के द्वारा जिहाद' की विचारधारा सर्वथा ग़लत है और इस का तिरस्कार किया जाना चाहिए, इसके विपरीत कुछ अन्य इस्लामी विद्वान इस विचारधारा को प्रोत्साहित करते हैं अथवा इसका पालन भी करते हैं। उनकी यही विचारधारा विश्व में कई क्षेत्रों में मुसलमानों के मध्य उग्रवादी एवं आतंकवादी संगठनों के जन्म का कारण बनी है।

केवल यही नहीं कि कुछ संगठन उभर कर सामने आए हैं अपितु कुछ लोग व्यक्तिगत रूप से इस ग़लत और झूठी विचारधारा का अनुचित लाभ उठा कर उसके अनुरूप व्यवहार कर रहे हैं। लंदन की सड़कों पर एक निर्दोष ब्रिटिश सिपाही की निर्मम हत्या इसी विचारधारा के परिणाम का एक ताज़ा उदाहरण है। इस आक्रमण का इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से कोई सम्बन्ध नहीं, इसके विपरीत इस्लामी शिक्षा ऐसी

घटनाओं की बड़ी निन्दा और भर्त्सना करती है। ऐसे षडयंत्र इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं और विकृत रूप में प्रस्तुत की गई शिक्षाओं, जिन का प्रचार कुछ नाम-मात्र मुसलमान अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु कर रहे हैं, के अन्तर को भली-भान्ति स्पष्ट कर देते हैं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि कुछ स्थानीय समुदायों की प्रतिक्रिया भी उचित नहीं थी तथा इस के कारण समाज की शान्ति भंग हो सकती है।

हमारे इस तर्क के समर्थन का क्या प्रमाण है कि हम जो इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत करते हैं वह सही है ? विचार करने योग्य विषय यह है कि तलवार अथवा बल प्रयोग की अनुमति केवल उसी स्थिति में है जब इस्लाम के विरुद्ध धार्मिक-युद्ध छेड़ा जाए। वर्तमान युग में कोई भी, चाहे वह देश हो अथवा धर्म, भौतिक रूप से इस्लाम के विरुद्ध धर्म के आधार पर आक्रमण या युद्ध नहीं कर रहा। अतः मुसलमानों के लिए यह न्यायसंगत नहीं कि वे किसी अन्य समुदाय पर धर्म के नाम पर आक्रमण करें क्योंकि निस्संदेह यह क़ुर्आन की शिक्षाओं का उल्लंघन है।

पवित्र क़ुर्आन ने केवल उन्हीं लोगों के विरुद्ध बल प्रयोग की अनुमति दी है जिन्होंने इस्लाम के विरुद्ध युद्ध छेड़ा और तलवार उठाई। एक और महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि यदि कोई नागरिक अपने देश अथवा अपने देशवासियों को किसी प्रकार का आघात या हानि पहुंचाता है तो वह निश्चित रूप से इस्लाम की शिक्षाओं का उल्लंघन करता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन है कि जो किसी निर्दोष का खून बहाता है वह मुसलमान नहीं है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विचार में ऐसे लोग कमज़ोर ईमान वाले और पापी हैं।

अब मैं इस्लाम के कुछ अन्य पहलू प्रस्तुत करूंगा जिन से यह सिद्ध होता है कि इस्लाम की शिक्षाएं कितनी विशुद्ध एवं ज्ञान पर आधारित हैं।

मैं यह स्पष्ट करूंगा कि कुछ अन्य नाम-मात्र इस्लामी संगठन इस्लाम का जो रूप प्रस्तुत करते हैं वह वास्तव में किसी भी प्रकार से धर्म की वास्तविक शिक्षा का प्रतिनिधित्व नहीं करता। यह स्पष्ट हो जाएगा कि वे केवल अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु घृणापूर्ण गतिविधियों को न्यायसंगत ठहराने के लिए अनुचित रूप से इस्लाम का नाम प्रयोग करते हैं।

इस्लाम ने सहनशीलता की महत्ता पर इतना बल दिया है कि इसके समतुल्य उदाहरण किसी अन्य धर्म में मिलना असंभव है। अन्य लोगों का यह मत है कि जब तक दूसरे धर्मों को झूठा सिद्ध न कर दिया जाए, तब तक वे अपने धर्म की सच्चाई को सिद्ध करने में असमर्थ हैं, परन्तु इस संबंध में इस्लाम का मत नितान्त पृथक है क्योंकि इस्लाम यह शिक्षा देता है कि यद्यपि इस्लाम एक सच्चा धर्म है जो समस्त मानवजाति के लिए भेजा गया, तथापि वास्तविकता यह है कि परमात्मा के सभी अवतार प्रत्येक जाति और विश्व के प्रत्येक भाग में भेजे गए। पवित्र क़ुर्आन में इसका स्पष्ट रूप से वर्णन है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि समस्त अवतार उसी ने प्रेम और स्नेह की शिक्षा देकर भेजे हैं। अतः सभी सच्चे मुसलमानों को उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

कोई अन्य धर्म इतनी स्पष्टता एवं उदारतापूर्ण ढंग से सभी धर्मों की प्रशंसा नहीं करता जैसा कि इस्लाम ने किया है। क्योंकि मुसलमान यह विश्वास रखते हैं कि सभी जातियों और क़ौमों में अवतार आए हैं, अतः वे उन्हें झूठा होने का विचार भी मन में नहीं ला सकते।

अतः मुसलमान परमात्मा के किसी भी अवतार का निरादर, अनादर अथवा उपहास नहीं कर सकते और न ही वे अन्य धर्मावलम्बियों की भावनाओं को आहत कर सकते हैं।

फिर भी खेदजनक है कि कुछ ग़ैर मुस्लिम लोगों का व्यवहार इसके

सर्वथा विपरीत है। वे इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कलंक लगाने और शोचनीय ढंग से उनका उपहास करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देते और इस प्रकार उन्होंने मुसलमानों की भावनाओं को बुरी तरह आहत किया है। परन्तु दुर्भाग्यवश जब कभी कुछ तत्त्व मुसलमानों की भावनाओं से खेलते हैं, तब कुछ नाम-मात्र मुसलमान उत्तेजनावश नितान्त अज्ञानतापूर्वक और अनुचित ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं जिसका इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता। आप यह अवश्य अनुभव करेंगे कि कोई अहमदी मुसलमान किसी भी उत्तेजनात्मक स्थिति में इस प्रकार अज्ञानतापूर्वक प्रतिक्रिया प्रदर्शित नहीं करेगा।

इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन पर एक अन्य आरोप यह लगाया जाता है कि उन्होंने उग्रवाद की शिक्षा दी और इस्लाम के संदेश के प्रचार के लिए बल-प्रयोग को प्रोत्साहित किया। इस आरोप का विवेचन करने तथा इसकी वास्तविकता जानने के लिए स्वयं क़ुर्आन का अध्ययन करना होगा। सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता है :-

'यदि तेरा रब्ब अपनी इच्छा को लागू करता तो धरती के सभी लोग ईमान ले आते। तो क्या तू लोगों को इतना विवश करेगा कि वे मोमिन बन जाएं ?'

(सूरह यूनस : 100)

यह आयत स्पष्ट रूप से बताती है कि परमात्मा जो सर्वशक्तिमान है, सभी लोगों को एक ही धर्म अपनाने पर बड़ी आसानी से विवश कर सकता था ; परन्तु उसने संसार के लोगों को इस विकल्प की स्वतन्त्रता प्रदान की — चाहो तो ईमान लाओ या न लाओ।

अत: जब परमात्मा ने मानवजाति को कोई भी विकल्प अपनाने की स्वतंत्रता प्रदान की है तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अथवा उनका कोई अनुयायी किसी को मुसलमान बनने पर कैसे विवश कर सकता है ?

सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र क़ुर्आन में यह भी फ़रमाता है :-

"………. सच्चाई तेरे रब्ब की ओर से ही उतरी हुई है, अतः जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे इन्कार कर दे ………."

(अल्-कहफ़ : 30)

यह है इस्लाम की वास्तविकता। यह है इसकी वास्तविक शिक्षा। यदि कोई व्यक्ति चाहे तो उसे इस्लाम को स्वीकार करने की स्वतंत्रता है, यदि उसका दिल नहीं चाहता तो उसे अस्वीकार करने की भी स्वतंत्रता है। अत: इस्लाम उग्रवाद और बल-प्रयोग के पूर्णतया विरुद्ध है, इसके विपरीत समाज के प्रत्येक स्तर पर शान्ति और समन्वय का समर्थन करता है।

इस्लाम के लिए यह असम्भव है कि वह हिंसा और बल-प्रयोग की शिक्षा दे क्योंकि इस्लाम का शाब्दिक अर्थ ही शान्ति से रहना और शान्ति प्रदान करना है। फिर भी जब हमारी धार्मिक भावनाओं का उपहास किया जाता है तो हमें अत्यन्त कष्ट और पीड़ा का अनुभव होता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संबंध में यदि कुछ भी अपमानजनक शब्द कहे जाएं तो वे हमारे हृदयों को चीर कर आहत कर देते हैं।

इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ही हमारे हृदयों में परमात्मा और उसकी सृष्टि के प्रति प्रेम भावना जागृत की है। आपने ही हमारे दिलों में समस्त मानवजाति और सभी धर्मों के प्रति प्रेम और आदर की भावना स्थापित की। इस्लाम की शान्तिपूर्ण शिक्षाओं के सम्बंध में उस उत्तर के अतिरिक्त अन्य बड़ा प्रमाण क्या हो

सकता है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरोधियों ने दिया जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस्लाम का सन्देश पहुंचाया था। उन्होंने यह नहीं कहा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने हमें इस्लाम का निमन्त्रण दे कर किसी प्रकार के अत्याचार अथवा अनैतिक कार्य करने की शिक्षा दी है, अपितु उन का उत्तर यह था कि यदि वे इस्लाम की शिक्षाओं को स्वीकार कर लेते हैं तो उनकी धन-सम्पत्ति पर अत्याचारी लोग अतिक्रमण कर लेंगे और उनकी प्रतिष्ठा भी खतरे में पड़ जाएगी क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल शान्ति और सौहार्द तथा समन्वय की शिक्षा पर बल देते थे। उन्होंने इस संशय का प्रकटन किया कि वे इस्लाम को स्वीकार कर लेते हैं और फलस्वरूप शान्ति को अपना लेते हैं, तो इर्द-गिर्द के लोग, क़बीले और अन्य जातियां इसका अनुचित लाभ उठा कर उन्हें नष्ट कर देंगी। सारांश यह कि यदि इस्लाम हिंसा का प्रचार करता और मुसलमानों को युद्ध करने तथा तलवार उठाने की शिक्षा देता, तो स्पष्ट है कि काफ़िर अपने पक्ष में ऐसा तर्क प्रस्तुत न करते। वे कदापि यह न कहते कि वे इस्लाम इसलिए स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें भय है कि इस्लाम की शान्तिपूर्ण शिक्षा के फलस्वरूप सांसारिक लोगों द्वारा इनका सर्वनाश हो जाएगा।

पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का एक गुणवाचक नाम 'सलाम' है जिसका अर्थ है 'शान्ति का स्रोत' इस से यह अभिप्राय है कि यदि परमात्मा वास्तव में 'शान्ति का स्रोत' है तो उसकी शान्ति केवल एक विशेष समुदाय तक सीमित न हो कर समस्त सृष्टि और समस्त मानवजाति पर आच्छादित होनी चाहिए। यदि परमात्मा की शान्ति केवल कुछ लोगों तक की सुरक्षा के लिए थी तो इस अवस्था में

उसे समस्त संसार का परमात्मा नहीं कहा जा सकता। सर्वशक्तिमान परमात्मा ने इस का उत्तर पवित्र क़ुर्आन में इन शब्दों में दिया है :-

'और हमें इस रसूल की उस बात की सौगंध ! जब उसने कहा था कि हे मेरे रब्ब ! यह जाति तो ऐसी है ईमान नहीं लाती। अतः उन्हें छोड़ दे और कह : 'तुम पर अल्लाह की शान्ति हो', 'और वे शीघ्र ही जान जाएंगे।'

(अल-ज़ुख़रुफ़ : 89-90)

इन शब्दों से यह ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी शिक्षा लाए थे जो समस्त लोगों के लिए शान्ति और दया का स्रोत थी और फलतः समस्त मानवजाति के लिए शान्ति का माध्यम थी। उपरोक्त आयत से यह भी ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शान्ति के सन्देश के उत्तर में आपके विरोधियों ने न केवल आपकी शिक्षाओं का तिरस्कार किया अपितु आपका अपमान और उपहास भी किया। वास्तव में वे इस से भी आगे बढ़ गए और उन्होंने पूरी शत्रुता से आपका विरोध किया, कलह और अशान्ति का वातावरण उत्पन्न कर दिया। विरोधियों की इन गतिविधियों के देखते हुए भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने परमात्मा से यही प्रार्थना की कि 'मैं उन्हें शान्ति प्रदान करना चाहता हूं, परन्तु ये मुझे शान्ति नहीं देते। इससे भी बढ़ कर वे मुझे पीड़ा और दुःख पहुंचाने की चेष्टा करते हैं।

इसके उत्तर में परमात्मा ने आपको सांत्वना देते हुए कहा कि 'जो कुछ वे करते हैं उसकी उपेक्षा कर और उनसे दूर हो जा। तेरा एकमात्र कर्त्तव्य संसार में शान्ति का प्रसार करना और उसकी स्थापना करना है। तू उनकी घृणा और उनके अत्याचारों के उत्तर में केवल इतना कह : 'तुम पर शान्ति हो' और उन्हें कह दे कि "मैं तुम्हारे लिए शान्ति लाया हूं।"

इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवनपर्यन्त विश्व में शान्ति का प्रसार करते रहे। यही आपका महान उद्देश्य था। निस्सन्देह, एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब संसार के लोग इस तथ्य को समझ लेंगे और स्वीकार करेंगे कि आपने किसी प्रकार के उग्रवाद की शिक्षा नहीं दी। उन्हें यह अनुभव हो जाएगा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल शान्ति, प्रेम और सहानुभूति का संदेश ले कर आए थे। इसके अतिरिक्त यह कि यदि इस महान अवतार के अनुयायी भी अत्याचारों और अन्याय के प्रति प्रेमपूर्वक अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें तो निस्संदेह वे लोग जो इस्लाम की रोशन शिक्षाओं पर आक्षेप लगाते हैं, एक दिन इस्लाम की सच्चाई और सुन्दरता को स्वीकार कर लेंगे।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत इन्हीं शिक्षाओं का पालन और अनुसरण करती है। यही सहानुभूति, सहनशीलता और दया पर आधारित वह शिक्षा है जिसका हम समस्त विश्व में प्रचार और प्रसार करते हैं। हम दया और उदारता के उसी ऐतिहासिक और अद्वितीय आदर्श का पालन करते हैं जिसका प्रदर्शन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कई वर्षों तक अत्यन्त कड़ी और पीड़ादायक यातनाओं और अत्याचारों के सहन करने के उपरान्त पुनः मक्का की गलियों में एक विजेता के रूप में प्रवेश करने पर किया। कई वर्षों तक आपको और आपके अनुयायियों को जीवन की मूल आवश्यकताओं — भोजन और पानी से वंचित रखा गया और फलस्वरूप उन्हें एक समय में कई दिन तक भूख की पीड़ा सहन करनी पड़ती थी। आपके बहुत से अनुयायियों पर आक्रमण किया गया, कुछ की अत्यन्त निर्दयतापूर्वक निर्मम हत्या की गई जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यहां तक कि मुसलमान वृद्धों, स्त्रियों और बच्चों को भी नहीं छोड़ा गया, अपितु उनके साथ भी निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया गया। फिर

भी, जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विजयी हो कर मक्का में पुनः प्रवेश किया तो आपने किसी प्रकार का प्रतिशोध नहीं लिया। इस के विपरीत आपने यह घोषणा की कि 'आप में से किसी को भी कोई दण्ड नहीं दिया जाएगा क्योंकि मैंने आप सभी को क्षमा कर दिया है। मैं प्रेम और शान्ति का दूत हूं। मुझे अल्लाह के इस गुण का सर्वाधिक ज्ञान है कि वह 'शान्ति का स्रोत है' — अर्थात् अल्लाह ही है जो शान्ति प्रदान करता है। मैं आपके पिछले समस्त अत्याचारों को क्षमा करता हूं और आपको शान्ति और सुरक्षा की ज़मानत देता हूं। आप स्वतंत्र रूप से मक्का में निवास कर सकते हैं और अपने धर्म का निर्विघ्न पालन कर सकते हैं। किसी को भी किसी प्रकार से विवश या बाध्य नहीं किया जाएगा।"

मक्का के कुछ कट्टर विरोधी दण्ड के भय से मक्का छोड़ कर भाग गए थे क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि उन्होंने मुसलमानों पर अत्याचार करने में सभी सीमाओं को पार कर लिया था। परन्तु जब उन काफ़िरों के संबंधियों ने दया और प्रेम का ऐसा अद्वितीय उदाहरण और शान्ति और सौहार्द का ऐसा अभूतपूर्व प्रदर्शन देखा तो उन्होंने उन्हें वापस लौट आने का संदेश भेजा। जब उन्हें यह सूचित किया गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शान्ति और सुरक्षा प्रदान करने वाले हैं तो वे लोग मक्का लौट आए। जो लोग इससे पूर्व इस्लाम के कट्टर और कठोर विरोधी थे, उन्होंने जब स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दया और उदारता का प्रत्यक्ष रूप में अनुभव किया तो उन्होंने स्वेच्छा से इस्लाम स्वीकार कर लिया।

जो कुछ मैंने वर्णन किया है वह लिखित इतिहास का भाग है और अधिकांश ग़ैर-मुस्लिम इतिहासकारों और Orientalists ने इस सच्चाई की पुष्टि की है। ये इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं हैं और यही हज़रत

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का महान आदर्श है। अत: इस्लाम और इसके प्रवर्तक को हिंसक के रूप में प्रदर्शित करना तथा उनके विरुद्ध इस प्रकार के आरोप लगाना घोर अन्याय है। इस में कोई सन्देह नहीं जहां कहीं भी ऐसे आरोप लगाए जाते हैं तो हमें गहरी पीड़ा और अत्यन्त कष्ट पहुंचाता है।

मैं पुन: यह कहता हूं कि वर्तमान युग में केवल हमारी जमाअत - अहमदिया मुस्लिम जमाअत - ही है जो इस्लाम की वास्तविक और शान्तिपूर्ण शिक्षाओं का अनुसरण और पालन कर रही है। मैं यह भी पुन: कहना चाहता हूं कि कुछ आतंकवादी संगठनों अथवा कुछ व्यक्तियों द्वारा जो घृणापूर्ण और दुष्कर्म किए जा रहे हैं उनका इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं हैं।

वास्तविक न्याय का आधारभूत सिद्धांत यह है कि किसी समुदाय अथवा व्यक्ति विशेष के निहित स्वार्थों को किसी धर्म की शिक्षाओं से सम्बद्ध न किया जाए। ऐसी गतिविधियों का किसी धर्म अथवा उसके प्रवर्तक की अन्यायपूर्ण ढंग से निन्दा करने के लिए एक बहाने के रूप में अनुचित प्रयोग नहीं करना चाहिए। समय की नितान्त आवश्यकता है कि विश्व-शान्ति और एकता की स्थापना हेतु सभी लोगों को परस्पर सम्मान और एक दूसरे के धर्म का आदर करने की भावना का प्रदर्शन करना चाहिए। अन्यथा इसके परिणाम अति भयावह होंगे।

आज संसार एक विश्व-ग्राम का रूप धारण कर चुका है। अत: परस्पर आदर एवं सम्मान के अभाव और शान्ति स्थापना हेतु संगठित होने में विफलता के कारण न केवल स्थानीय क्षेत्र, शहर अथवा देश को हानि पहुंचेगी अपितु इसके फलस्वरूप अन्तत: विश्व एक भयानक विनाश की चपेट में आ जाएगा। गत दो विश्व युद्धों के विध्वंसकारी

परिणामों से हम सभी परिचित हैं। कुछ देशों की गतिविधियां ऐसी हैं जो तृतीय विश्व युद्ध की सूचक हैं।

यदि तृतीय विश्व युद्ध आरम्भ हो जाता है तो पश्चिमी देश भी इसके दूरगामी और विनाशकारी परिणामों से बुरी तरह प्रभावित होंगे। हमें अपनी भावी पीढ़ियों को युद्ध के भयानक और विनाशकारी परिणामों से सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए।

स्पष्ट है कि सबसे भयानक युद्ध परमाणु युद्ध होगा और इस समय संसार जिस ओर अग्रसर है, निस्सन्देह वह एक परमाणु युद्ध के छिड़ने का सूचक है। इस विनाशकारी परिणाम को रोकने के लिए हमें न्याय, एकता एवं अखंडता और ईमानदारी के मार्ग को अपनाना होगा और संगठित रूप से उन गुटों का दमन करना होगा जो घृणा का प्रचार करके विश्व-शान्ति का सर्वनाश करना चाहते हैं।

मैं यह आशा और प्रार्थना करता हूं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा महाशक्तियों को अपने कर्त्तव्यों को इस सम्बन्ध में न्यायपूर्वक ढंग से निभाने का सामर्थ्य प्रदान करे - आमीन। अपना भाषण समाप्त करने से पूर्व मैं आप का धन्यवाद करना चाहता हूं कि आप सब समय निकाल कर और प्रयास करके यहां उपस्थित हुए। परमात्मा आप सब पर अपनी कृपा करे। आप सब का अति धन्यवाद।

वर्तमान संकट की स्थिति में विश्व शान्ति की नितान्त आवश्यकता

राष्ट्रीय पार्लियामेंट न्यूज़ीलैण्ड

वेलिंगटन, न्यूज़ीलैण्ड, 2013

Hon Kanwaljit Singh Bakshi (MP) receiving the HolyQur'an from Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

Iranian ambassador Seyed Majid Tafreshi Khameneh meeting Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

Det. Rakesh Naidoo meeting Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] in representation of the Commissioner of Police New Zealand

Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] leading silent prayers at the conclusion of the official function in the Grand Hall, New Zealand Parliament

Dr. Cam Calder MP meeting Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba]

Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] delivering the keynote address at the Grand Hall, in the New Zealand Parliament. 4th Nov 2013

Hon Kanwaljit Singh Bakshi (MP) with Ḥaḍrat Khalīfatul-Masīḥ V[aba] and his entourage in front of the New Zealand Parliament

परिचय

विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद (अल्लाह तआला आपकी सहायता करे) ख़लीफ़तुल मसीह पंचम ने दिनांक 4 नवम्बर 2013 को वेलिंगटन शहर में न्यूज़ीलैंड की राष्ट्रीय पालिर्यामेंट में एक ऐतिहासिक भाषण दिया। पार्लियामेंट के सांसदों, राजदूतों, शिक्षाविदों एवं विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित गणमान्य विशिष्ट अतिथियों से सभा के सम्मुख हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा ने (अल्लाह तआला आपकी सहायता करे) इस बात की महत्ता को प्रकट किया कि विश्व के विभिन्न भागों में तीव्रता से बढ़ते हुए विवादों और तनाव को दृष्टिगत रखते हुए विश्व-शान्ति स्थापित करने के लिए न्याय की नितान्त आवश्यकता है। आपके मुख्य भाषण के पश्चात् अन्य उच्च पदाधिकारियों ने भी सभा को सम्बोधित किया। श्री कंवलजीत बख़्शी M.P. ने कहा, "हमारा यह सौभाग्य है कि हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद यहां न्यूज़ीलैंड की पार्लियामेंट में पधारे हैं

और हमें उनके ज्ञान और विचारों को सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।" डा. राजन प्रसाद, M.P. ने कहा, "न्यूज़ीलैंड की पार्लियामेंट में हज़रत साहिब का स्वागत करना हमारे लिए अत्यन्त सुखद अनुभव है। मुझे इस बात ने सदैव अत्यन्त प्रभावित किया है कि अहमदी किस प्रकार एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में अपना जीवन व्यतीत करते हुए अपने शान्ति के संदेश का पालन करते हैं। सभा के अन्त पर हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद (अल्लाह तआला आपकी सहायता करे) ने विभिन्न उच्च पदाधिकारियों जिनमें ईरान और इस्राईल के राजदूत भी शामिल थे, से भेंट की। श्री कंवलजीत सिंह बख़्शी M.P. ने हुज़ूर को पार्लियामेंट की सैर कराई।

वर्तमान संकट की स्थिति में विश्व शान्ति की नितान्त आवश्यकता

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रारंभ करता हूं अल्लाह के नाम से जो अनन्त कृपालु और अत्यन्त दयालु है।

सभी विशिष्ट अतिथिगण !

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

अल्लाह की कृपा आप सब पर हो।

सर्वप्रथम मैं इस अवसर पर उन समस्त लोगों विशेषकर माननीय कंवलजीत सिंह बख़्शी M.P. के प्रति धन्यवाद प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने इस सभा का आयोजन किया और आप सब को सम्बोधित करने का मुझे अवसर प्रदान किया। तदोपरान्त मैं आप सब का धन्यवादी हूं जो मेरे विचार सुनने के लिए यहां पधारे हैं।

निस्संदेह इस पार्लियामेंट हाऊस में देश की उन्नति एवं विकास के लिए विभिन्न नीतियां और योजनाएं तथा कानून बनाने के लिए

विभिन्न राजनीतिज्ञ और पार्लियामेंट के सदस्य नियमित रूप से एकत्रित होते हैं। इसके अतिरिक्त मेरा विश्वास है कि बहुत से धर्म निरपेक्ष या भौतिकवादी नेताओं ने भी यहां पधार कर अपने ज्ञान, कौशल और अतीत के अनुभवों के अधार पर आप लोगों को सम्बोधित किया होगा। परन्तु कदाचित् ही किसी धार्मिक समुदाय विशेषकर एक मुस्लिम समुदाय के प्रमुख ने आपको सम्बोधित किया हो। अतः विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत जो कि वास्तविक इस्लामी संस्था है जिसका एकमात्र उद्देश्य इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का प्रचार एवं प्रसार करना है, के प्रमुख को यहां सम्बोधन करने का अवसर प्रदान करके आपने अपनी विशालहृदयता और उच्च स्तरीय सहनशीलता का संकेत एवं प्रमाण प्रस्तुत किया है। अतः मैं इस दयापूर्ण व्यवहार के लिए आपका आभारी हूं।

धन्यवाद के इन शब्दों के उपरान्त अब मैं अपने भाषण के मुख्य विषय की ओर आता हूं। मैं इस्लाम की सुन्दर शिक्षाओं के सम्बन्ध में कुछ बातों का वर्णन करूंगा। मैं उस समस्या, जो मेरे विचार में वर्तमान समय की नितान्त आवश्यकता है अर्थात् विश्व-शान्ति की स्थापना के सम्बन्ध में कुछ बातें करूंगा। आप में से अधिकांश लोग, धर्मनिरपेक्ष राजनीतिज्ञ अपने अपने स्तर पर और सरकारें सामूहिक स्तर पर धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से शान्ति स्थापित करने के लिए सतत् प्रयासरत हैं। आपके प्रयास शुभेच्छा से प्रेरित हैं और आपको इन प्रयासों में कुछ सफलता भी प्राप्त हुई होगी। इसी प्रकार आपकी सरकार ने गत वर्षों में विश्व में शान्ति एवं एकता स्थापित करने हेतु कई सुझाव भी दिए होंगे।

निस्संदेह विश्व की वर्तमान परिस्थितियां अत्यन्त संकटपूर्ण हैं जो

समूचे विश्व की चिन्ता का कारण बनी हुई हैं। इस समय जबकि विश्व के मुख्य संकट अरब देशों में उत्पन्न हो रहे हैं, और प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति इस तथ्य से भलीभांति परिचित होंगे कि ऐसे विवाद अथवा संकट केवल उसी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहते। इसमें कोई शंका नहीं कि किसी सरकार और उसकी प्रजा के मध्य का विवाद बढ़कर अन्तर्राष्ट्रीय विवाद का रूप धारण कर लेता है। हम देख रहे हैं कि विश्व की महाशक्तियों में पहले से ही दो गुट बन रहे हैं। एक गुट सीरिया की सरकार का समर्थन कर रहा है जबकि दूसरा गुट विद्रोहियों के समर्थन में आगे आ रहा है। स्पष्ट रूप से यह परिस्थिति न केवल मुस्लिम देशों के लिए एक गंभीर ख़तरा है अपितु विश्व के शेष सभी देशों के लिए भी एक अत्यन्त संकट का सूचक है।

गत शताब्दी में हुए दो विश्व युद्धों के हृदय-विदारक परिणामों को हमें कभी विस्मृत नहीं करना चाहिए। विशेषकर द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप जो विस्तृत विनाश हुआ वह अद्वितीय है। केवल परंपरागत हथियारों के उपयोग द्वारा ही विशाल जनसंख्या वाले कई कस्बे और शहर पूर्णतया ध्वस्त हो गए और लाखों लोग मारे गए, इसके अतिरिक्त द्वितीय विश्व युद्ध में विश्व ने सम्पूर्ण विनाश की घटना भी देखी जब जापान के विरुद्ध परमाणु बम का प्रयोग किया गया जिसने ऐसा सर्वनाश किया जिसके प्रभावों को केवल सुनने से ही मनुष्य कांपने लगता है। हीरोशीमा और नागासाकी के संग्रहालय इस सम्पूर्ण सर्वनाश और भयावह स्थिति का स्मरण कराने के लिए पर्याप्त हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध में एक अनुमान के अनुसार 70 मिलियन लोग मारे गए थे जिन में से 40 मिलियन साधारण नागरिक थे। इस प्रकार सेना

के सदस्यों की अपेक्षा साधारण नागरिकों ने भी अपने प्राण गँवाए। युद्ध के उपरान्त के दुष्प्रभाव इस से भी अधिक भयावह थे अर्थात युद्धोपरान्त मरने वाले लोगों की संख्या लाखों में थी। परमाणु बमों के प्रयोग के पश्चात् कई वर्षों तक उनके विकिरण के भयानक आनुवांशिक दुष्प्रभावों से नवजात शिशु प्रभावित होते रहे। इस समय विश्व के कुछ छोटे देशों ने भी परमाणु शस्त्र प्राप्त कर लिए हैं और उन के नेता बड़े उत्तेजित स्वभाव के हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपने कार्यों के विनाशकारी परिणामों के प्रति उदासीन हैं।

यदि हम आज परमाणु युद्ध के छिड़ने की कल्पना करें तो जो चित्र सामने आएगा उसे देख कर एक मनुष्य अत्यन्त भयभीत हो कर कांप उठेगा। आज जो परमाणु बम विश्व के छोटे से छोटे देशों के पास हैं वे द्वितीय विश्व युद्ध में प्रयोग किए गए बमों से भी कहीं अधिक शक्तिशाली हैं।

आज वर्तमान संसार की ऐसी दयनीय अवस्था है कि एक ओर लोग शान्ति स्थापित करने की बात करते हैं और दूसरी ओर इसके विपरीत वे अहंकारी प्रवृत्तियों में ग्रस्त हैं और दंभ एवं उद्दण्डता के प्रभावाधीन मदोन्मत्त हैं। प्रत्येक शक्तिशाली राज्य अपनी श्रेष्ठता और शक्ति का प्रमाण देने के लिए भरसक प्रयास करने के लिए तत्पर रहता है। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त विश्व में चिरस्थायी शान्ति की स्थापना हेतु तथा भविष्य में युद्धों की संभावना को रोकने के लिए विश्व को एकत्र होकर एक संगठन का निर्माण किया जिसे संयुक्त राष्ट्र की संज्ञा दी गई। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि जिस प्रकार लीग ऑफ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से अपने उद्देश्य में विफल हुआ, इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र

संघ के आदर और सम्मान का दिन-प्रतिदिन पतन हो रहा है। यदि न्याय की मांगों को पूरा न किया गया तो शान्ति की स्थापना के लिए चाहे जितने संगठन बनाए जाएं, उनके सभी प्रयास विफल हो जाएंगे।

मैंने अभी लीग ऑफ नेशन्स की विफलता का वर्णन किया है। प्रथम विश्व युद्ध के उपरान्त विश्वशान्ति की सुरक्षा के एकमात्र उद्देश्य के लिए इस का गठन किया गया था परन्तु यह द्वितीय विश्व युद्ध के अशुभ आगमन, जिसके सम्बन्ध में मैं पहले बता चुका हूं कि इसके कारण कितना विनाश और हानि हुई, को रोकने में विफल रहा। इस युद्ध में न्यूज़ीलैंड के भी कई लोग मारे गए। कहा जाता है कि लगभग 11000 लोग जो सभी सैनिक थे इस युद्ध में मारे गए। न्यूज़ीलैंड युद्ध के केन्द्र से अति दूर होने के कारण, साधारण नागरिकों की जान नहीं गईं परन्तु जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूं सामूहिक रूप से सैनिकों की अपेक्षा निर्दोष नागरिकों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। तनिक कल्पना कीजिए, साधारण निर्दोष लोग जिनमें असंख्य स्त्रियां और बच्चे भी शामिल थे, बिना किसी अपराध के अकारण अंधाधुंध मारे गए।

इसीलिए आप द्वितीय विश्व युद्ध से सीधे तौर पर प्रभावित देशों के लोगों के हृदयों में युद्ध के नाम से ही स्वाभाविक घृणा पाएंगे। वस्तुतः देश-प्रेम और देश-भक्ति की यह मांग है यदि उसके देश पर कोई आक्रमण होता है तो एक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह देश की रक्षा और स्वतंत्रता के लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए तैयार रहे। फिर भी, यदि वार्तालाप के माध्यम से और राजनैतिक स्तर पर विवादों का शान्तिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण ढंग से समाधान सम्भव हो तो अकारण मृत्यु एवं विनाश को निमंत्रण नहीं देना चाहिए। प्राचीन काल के युद्धों में

मुख्यत: सैनिक मारे जाते थे और नागरिकों की न्यूनतम हानि होती थी। परन्तु आज के युद्ध के साधनों में हवाई बम्बारी, विषैली गैस और रासायनिक शस्त्र भी शामिल हैं और जैसा कि मैंने कहा है कि सबसे विनाशकारी बम, परमाणु बम के उपयोग की भी प्रबल सम्भावना है। इस दृष्टि से वर्तमान युद्ध प्राचीन युद्धों से सर्वथा पृथक है, क्योंकि वर्तमान युद्धों में सम्पूर्ण मानव जाति को धरती से विलुप्त करने की शक्ति विद्यमान है। इस सम्बन्ध में शान्ति स्थापना हेतु पवित्र क़ुर्आन की अनुपम शिक्षा का वर्णन करना चाहता हूं। पवित्र क़ुर्आन में लिखा है :

"और पुण्य और पाप बराबर नहीं हो सकते। तू बुराई का उत्तर बहुत अच्छे व्यवहार से दे। इस का परिणाम यह निकलेगा कि वह व्यक्ति जिसके और तेरे मध्य शत्रुता पाई जाती है, तेरे अच्छे व्यवहार को देख कर तेरा हार्दिक मित्र बन जाएगा।"

(सूर: हा मीम आयत : 35)

अत: पवित्र क़ुर्आन यह शिक्षा देता है कि परस्पर शत्रुता और विवादों को यथासम्भव समाप्त कर देना चाहिए और वार्तालाप के माध्यम से उनका समाधान करना चाहिए। यदि आप दयाभाव और समझदारी से बात करेंगे तो निश्चित रूप से दूसरों पर इसका सकारात्मक एवं सुखद प्रभाव पड़ेगा और यह घृणा और द्वेष के उन्मूलन का माध्यम सिद्ध होगा।

निस्संदेह हम वर्तमान युग में स्वयं को अति उन्नत और सभ्य मानते हैं। हमने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय ख़ैराती संस्थाओं का संगठन किया है जो बच्चों को स्वास्थ्य सुविधाएं और विद्या उपलब्ध कराती हैं और माताओं के लिए भी स्वास्थ्य सुविधा का प्रबंध करती हैं। इसी प्रकार कई अन्य असंख्य ख़ैराती अथवा धर्मार्थ संस्थाएं हैं जिनकी स्थापना मानवजाति के

प्रति सहानुभूति एवं दया के आधार पर हुई है।

इतना सब कुछ करने के पश्चात् हमें वर्तमान की नितान्त आवश्यकता पर विचार करना चाहिए और ध्यान देना चाहिए कि हम स्वयं को और अन्य लोगों को विनाश और तबाही से किस प्रकार सुरक्षित रख सकते हैं। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि आज से अथवा सात दशक पूर्व की तुलना में वर्तमान समय का विश्व बहुत सिमट चुका है। साठ या सत्तर वर्ष पूर्व न्यूज़ीलैंड एक दूरस्थ देश समझा जाता था जो एशिया और यूरोप से अति दूर स्थित था। परन्तु आज यह देश विश्व समुदाय का एक अभिन्न अंग है। अत: युद्ध की स्थिति में कोई देश अथवा क्षेत्र सुरक्षित नहीं है।

आपके नेता और राजनीतिज्ञ आपके देश के संरक्षक हैं। देश की सुरक्षा और उसकी निरन्तर प्रगति, विकास और भलाई करना उनका उत्तरदायित्व है। अत: उनके लिए आवश्यक है कि वे इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को सदैव स्मरण रखें कि स्थानीय युद्धों के द्वारा विनाश और तबाही दूर-दूर तक फैल जाती है। हमें इस बात पर परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने अभी कुछ महाशक्तियों को बुद्धि और विवेक प्रदान किया जिसके फलस्वरूप उनहें यह समझ आ गई कि विश्व को सम्भावित सर्वनाश से बचाने के लिए युद्ध को रोकने की कार्यवाही करनी चाहिए। मुख्य रूप से रूस के राष्ट्रपति ने कुछ महाशक्तियों को सीरिया पर आक्रमण करने से रोकने के लिए भरसक प्रयत्न किए। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि चाहे कोई देश छोटा हो या बड़ा उसके साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि यदि न्याय की मांगों को पूरा न किया गया और यदि अन्य देश अपने अपने स्तर पर युद्ध में

सम्मिलित हो जाते हैं तो संयुक्त राष्ट्र का भी वही दुर्भाग्यपूर्ण अन्त होगा जैसा कि राष्ट्रसंघ का हुआ था। मेरा यह विश्वास है उनका यह विश्लेषण पूर्णतया उचित है।

यद्यपि मैं उनकी समस्त नीतियों का समर्थन नहीं करता, तथापि समझदारी की बात को स्वीकार करना चाहिए। काश ! वे एक क़दम और आगे बढ़ कर यह कहते कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा समिति के पाँच स्थायी सदस्यों को जो वीटो का अधिकार प्राप्त है उसे सदा के लिए समाप्त कर दिया जाए ताकि विश्व के समस्त देशों के मध्य वास्तविक न्याय और समानता स्थापित हो जाए।

गत वर्ष मुझे वाशिंगटन डी. सी. के कैपिटल हिल में एक भाषण देने का अवसर दिया गया था। उस सभा में बहुत से सेनेटरज़, कांग्रेस के सदस्य, विशेष सलाहकार और विभिन्न वर्गों के शिक्षित लोग सम्मिलित थे। मैंने स्पष्ट रूप से उन्हें यह कहा कि न्याय की मांगे उसी स्थिति में पूरी हो सकती हैं जब सभी वर्गों और लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाए। मैंने यह स्पष्ट किया कि यदि आप छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब देशों के अन्तर को महत्त्व देना चाहते हैं और वीटो की अन्यायपूर्ण शक्ति को क़ायम रखना चाहते हैं तो इसके फलस्वरूप निश्चय ही अशान्ति और चिन्ता वास्तव में प्रकट होने लगी है।

अतः विश्वव्यापी मुस्लिम जमाअत के प्रमुख होने के नाते मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं शान्ति स्थापना के प्रति विश्व का ध्यानाकर्षण कराऊं। मैं इसे अपना कर्त्तव्य समझता हूं क्योंकि इस्लाम का अर्थ ही शान्ति एवं सुरक्षा है। यदि कुछ मुस्लिम देश घृणापूर्ण आतंकवादी गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हैं अथवा इनका पालन करते हैं तो इस से यह निष्कर्ष

नहीं निकालना चाहिए कि इस्लाम की शिक्षा अशान्ति और कलह को बढ़ावा देती है। मैंने अभी पवित्र क़ुर्आन की एक आयत का वर्णन किया था इसी में यह शिक्षा दी गई है कि किस प्रकार शान्ति स्थापित की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को 'सलाम' करने अर्थात सदैव शान्ति के संदेश का प्रसार करने की शिक्षा दी। हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र आचरण से ज्ञात होता है आप सभी ग़ैर-मुस्लिमों चाहे वे यहूदी हों ईसाई हों अथवा किसी अन्य धर्म या आस्था के मानने वाले हों, पर भी सलामती भेजते थे। आप ऐसा इसलिए करते थे क्योंकि आप समझते थे कि सभी लोग परमात्मा की सृष्टि का भाग हैं और अल्लाह का एक गुणवाचक नाम 'शान्ति का स्रोत' भी है और वह सम्पूर्ण मानवजाति के लिए शान्ति एवं सुरक्षा चाहता है।

मैंने शान्ति के सम्बन्ध में कुछेक इस्लामी शिक्षाओं का वर्णन किया है परन्तु मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि समय के अभाव के कारण मैंने कुछ पक्षों का ही वर्णन किया है। वास्तव में इस्लाम समस्त लोगों के लिए शान्ति एवं सुरक्षा की शिक्षाओं और उपदेशों से परिपूर्ण है। न्याय स्थापित करने के सम्बन्ध में इस्लाम की क्या शिक्षा है ?

सूरह संख्या 5 की आयत संख्या 9 में अल्लाह तआला कहता है :

"हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में साक्षी बन जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात की ओर प्रेरित न करे कि तुम

न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़वा के सबसे अधिक निकट है और अल्लाह से डरो। जो तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है।"

उपरोक्त आयत में पवित्र क़ुर्आन न्याय के उच्चतम मापदण्डों को रेखांकित करता है। यह आदेश उन लोगों के लिए शंका की कोई संभावना नहीं छोड़ता जो स्वयं को मुसलमान कहते हुए भी अत्याचार करते हैं। यह आदेश उन लोगों के लिए भी आलोचना की संभावना को समाप्त करता है जो इस्लाम को एक उग्रवादी और हिंसावादी धर्म के रूप में प्रस्तुत करते हैं। पवित्र क़ुर्आन ने न्याय के और भी उत्तम मापदण्ड स्थापित किए हैं। क़ुर्आन न केवल यह शिक्षा देता है कि तुम न्याय करो अपितु यह समानता का आदेश देते हुए यहां तक कहता है कि :

"हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए गवाह बनते हुए न्याय को दृढ़ता पूर्वक स्थापित करने वाले बन जाओ। चाहे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देनी पड़े अथवा माता-पिता और निकट सम्बंधियों के विरुद्ध। चाहे कोई धनवान हो अथवा निर्धन, दोनों का अल्लाह ही उत्तम निरीक्षक है। अत: अपनी अभिलाषाओं का अनुसरण न करो ऐसा न हो कि न्याय से हट जाओ। और यदि तुमने गोल-मोल बात की अथवा मुँह फेर लिया तो निस्सन्देह जो तुम करते हो उससे अल्लाह बहुत अवगत है।"

(सूरह अन्निसा : 136)

अत: ये हैं वे सिद्धान्तों पर आधारित न्याय के मापदण्ड जिनके द्वारा समाज के निम्नतम स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर और समस्त

विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शिक्षा का पालन किया और इसे विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाया। अब वर्तमान युग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम जो अहमदिया जमाअत के संस्थापक हैं ने इस शिक्षा के प्रसार के लिए भरपूर संघर्ष किया और अपने अनुयायियों को शान्ति का प्रसार करने की शिक्षा दी। आपने अपने अनुयायियों को यह शिक्षा भी दी कि वे परमात्मा के प्रति और उसकी सृष्टि के प्रति कर्त्तव्यों की पूर्ति की ओर मानवजाति का ध्यानाकर्षण कराएं।

यही कारण है कि अहमदिया जमाअत अल्लाह के प्रति और उसकी सृष्टि के प्रति कर्त्तव्यों की पूर्ति के महत्त्व पर तथा न्याय के उच्च मापदण्ड स्थापित करने की आवश्यकता पर सभी लोगों को प्रबल उपदेश देती है ताकि यह विश्व शान्ति और सौहार्द का केन्द्र बन सके।

इन शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं और मुझे आमंत्रित करने और यहां पधार कर मेरा भाषण सुनने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

वैश्विक शान्ति और सुरक्षा
वर्तमान युग की ख़तरनाक समस्याएं

डच पार्लियामेंट बेनन होफ़

हेग, नीदरलैण्ड, 2015

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का नीदरलैण्ड नेशनल पार्लियमेण्ट की विदेशी मामलों की स्टैन्डिंग कमेटी की विशेष सभा में सम्मिलित होना।

नीदरलैण्ड नेशनल पार्लियामेण्ट की विदेशी मामलों की स्टैन्डिंग कमेटी की सदस्य हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़
नीदरलैण्ड नेशनल पार्लियामेण्ट में विदेशी मामलों की सटैन्डिंग कमेटी की विशेष सभा में
अपना ऐतिहासिक भाषण देते हुए।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ राजनीतिक एवं
धार्मिक मामलों के कुछ पहलुओं के संबंध में किए गए एक प्रश्नों का उत्तर देते हुए।

परिचय

दिनांक 6 अक्टूबर 2015 ई. को विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने हॉलैण्ड की राजधानी 'हेग' में नीदरलैण्ड की नेशनल पार्लियामेण्ट की विदेशी मामलों की स्टैंडिंग कमेटी की विशेष सभा में सौ से अधिक मेहमानों और सम्माननीय लोगों के सामने एक ऐतिहासिक भाषण दिया। आयोजन के प्रारंभ में मिस्टर वैन बोमल ने पार्लियामेण्ट में हुज़ूर अनवर का अभिनन्दन करते हुए कमेटी के सदस्यों से परिचय कराया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अन्य बाह्य देशों के पार्लियामेण्ट के सांसदों, विभिन्न देशों के राजदूत, अल्बानिया, क्रोशिया, आयरलैण्ड, मोन्टी नीग्रो, स्पेन तथा स्वीडन के प्रतिनिधियों का भी अभिनन्दन किया।

वैश्विक शान्ति और सुरक्षा
वर्तमान युग की ख़तरनाक समस्याएं

दिनांक 6 अक्टूबर 2015 ई. को हॉलैण्ड की पार्लियामेण्ट में दिया गया भाषण।

तशह्हुद और तअव्वुज़ के बाद हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

समस्त आदरणीय अतिथियों की सेवा में अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू। आप सब पर अल्लाह की सुरक्षा और बरकतें उतरें।

सर्वप्रथम मैं आज के इस आयोजन की प्रबंध समिति का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने आज मुझे यहां भाषण देने के लिए आमंत्रित किया।

आज हम देखते हैं कि कुछ समस्याओं को हमारे समय की सबसे अहम समस्याओं के तौर पर उजागर किया जा रहा है। उदाहरणतया कुछ ग्लोबल वार्मिंग और ऋतु परिवर्तनों पर बल दे रहे हैं तथा कुछ

हैं जो बढ़ रहे विवादों और विश्व की अस्त-व्यस्त परिस्थितियों पर अत्यन्त चिन्ता का शिकार हैं। ध्यानपूर्वक समीक्षा की जाए तो विश्व-शान्ति और सुरक्षा वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या है। निस्सन्देह हर गुज़रते हुए दिन के साथ विश्व असंतुलित और ख़तरनाक होता चला जा रहा है। इस वर्तमान परिस्थिति के कुछ संभावित कारक हैं, जिनमें से एक वह आर्थिक संकट है जिसने विश्व के कई क्षेत्रों को प्रभावित किया है।

एक अन्य कारण न्याय और इन्साफ़ का अभाव है जिस का प्रदर्शन करना कुछ सरकारें न केवल अपनी प्रजा के लिए बल्कि अन्य क़ौमों के लिए भी वैध रखे हुए हैं। एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि कुछ धार्मिक पेशवा अपने दायित्वों को उचित तौर पर अदा नहीं कर रहे और व्यक्तिगत हितों को विशालतम एंव उत्तम हितों पर प्राथमिकता दे रहे हैं। जहां तक अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का प्रश्न है विवादों का एक बड़ा कारण अमीर और ग़रीब देशों के मध्य परस्पर मतभेद हैं। देखा गया है कि शक्तिशाली देश निर्धनतम देशों की प्राकृतिक सम्पदाओं से उन्हें उनकी अपनी संपत्तियों में से वैध अधिकार दिए बिना लाभान्वित होते हैं।

अत: विश्व शान्ति में विघ्न के कारणों की एक लम्बी सूची है जिसमें से कुछ का वर्णन अभी मैंने किया है। कारण जो भी हों मुझे विश्वास है कि विश्व में शान्ति का अभाव वर्तमान नस्ल की सबसे संगीन समस्या है। संभव है कि इस पर आप लोगों में से कुछ लोग कहें कि सर्वाधिक अस्थिरता का शिकार तो मुस्लिम देश हैं और यह कि विश्व में शान्ति के अभाव की जड़ भी मुस्लिम जगत की अशान्ति में

ही मौजूद है।

शायद आप में से कुछ लोग यह विचार करें कि चूंकि मैं भी एक विश्वव्यापी मुस्लिम जमाअत अर्थात् अहमदिया मुस्लिम जमाअत का प्रबंधक हूं इसलिए मैं भी इस वर्तमान स्थिति का किसी सीमा तक उत्तरदायी हूं। शायद आप यह भी सोचते हों कि देश में हिंसा द्वारा क्रान्ति लाने का सिद्धान्त मानने वाले तत्त्वों के अस्तित्व में आने और आतंकवाद में वृद्धि का कारण वास्तव में इस्लामी शिक्षाओं से ही लिया गया है तथापि इस्लाम को इस नफ़रत और अशान्ति से जोड़ना बहुत बड़ा अन्याय है।

यहां धर्मों के इतिहास पर विस्तृत वार्तालाप करना अभीष्ट नहीं परन्तु इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि यदि समस्त धर्मों के इतिहास पर सामान्य दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात होता है कि समय के साथ हर धर्म के अनुयायी अपनी मूल शिक्षाओं से दूर होते गए, जिसके कारण आन्तरिक मतभेद और धार्मिक आधार पर गुटबन्दी ने जन्म लिया, बहुत अत्याचार किए गए और बहुत से लोगों की जानें गईं। इस वास्तविकता को दृष्टिगत रखते हुए मैं पूर्ण हार्दिक रूप से यह स्वीकार करता हूं कि समय के साथ मुसलमान भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से दूर हो गए हैं। इसके परिणाम स्वरूप निराशा और प्रतिस्पर्धा ने जन्म लिया, जिसके अतिरिक्त परिणाम साम्प्रदायिकता, आतंक और अन्याय के रूप में प्रकट हुए। फिर भी एक सच्चे मुसलमान के दृष्टिकोण से इस्लाम की दुर्दशा को देख कर मेरा ईमान कम नहीं होता। इसलिए कि चौदह सौ वर्ष से भी अधिक समय पूर्व इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लाम ने भविष्यवाणी की थी कि धीरे-धीरे

इस्लामी शिक्षाओं में बिगाड़ पैदा हो जाएगा और मुसलमान नैतिक संकट के दौर में प्रविष्ट हो जाऐंगे। फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि आध्यात्मिक अंधकार के इस दौर में ख़ुदा तआला एक सुधारक को मौऊद मसीह और इमाम महदी की हैसियत से अवतरित करेगा जो इन्सानियत को इस्लाम की वास्तविक तथा शान्ति प्रिय शिक्षाओं की ओर वापस लेकर आएगा। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की वास्तविक और पूर्णतया शान्ति से परिपूर्ण शिक्षाओं का दिव्य ज्ञान प्रदान किया। अतः हम अहमदी मुसलमान वर्तमान युग के अशान्ति और बेचैनी फैलाने वाले तत्त्वों में सम्मिलित नहीं, बल्कि हम वे लोग हैं जो विश्व में शान्ति स्थापना के अभिलाषी हैं।

हम तो वे हैं जो विश्व की स्थिति के इलाज के लिए प्रयासरत हैं, हम तो वे हैं जो मानवता को संयुक्त करना चाहते हैं, हम तो वे हैं जो हर प्रकार की नफ़रतों और शत्रुताओं को प्रेम और सहनशीलता में परिवर्तित करना चाहते हैं और निस्सन्देह हम वे लोग हैं जो विश्व-शान्ति को स्थापित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहते हैं। एक धार्मिक पेशवा के तौर पर मैं कहना चाहता हूँ कि परस्पर आरोप-प्रत्यारोप तथा परस्पर भड़काने की बजाए हमें वास्तविक और स्थायी विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इस सिलसिले में जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक ने हमें एक सुनहरे सिद्धान्त से परिचित कराते हुए फ़रमाया कि मानव जाति के लिए आवश्यक है कि वह यथा-सामर्थ्य प्रयास द्वारा ख़ुदा तआला की

विशेषताओं को अपने अन्दर उजागर करे और उनके अनुकरण का भरसक प्रयत्न करे।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि-

मानव जाति की स्थायी भलाई एवं कल्याण के लिए यह एक अनिवार्य बात है और निस्सन्देह मानवता का सांसारिक और आध्यात्मिक कल्याण और उन्नति ख़ुदा तआला की विशेषताओं पर विचार करने पर निर्भर है क्योंकि उसकी उत्तम विशेषताओं में ही हर प्रकार की शान्ति छुपी हुई है। यह वास्तविकता पवित्र क़ुर्आन की पहली आयत से प्रकट है जहां फ़रमाया- कि अल्लाह ही समस्त लोकों का रब्ब (प्रतिपालक) है। अर्थात् वह प्रत्येक मनुष्य बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि का रब्ब, अन्नदाता और क़ायम रहने वाला है। वह केवल मुसलमानों का ही रब्ब नहीं बल्कि वह ईसाइयों, यहूदियों तथा हिन्दुओं बल्कि समस्त क़ौमों का रब्ब (प्रतिपालक) है चाहे वे किसी भी धर्म अथवा आस्था से संबंध रखती हों।

ख़ुदा तआला का अपनी सृष्टि से प्रेम और सहानुभूति अद्वितीय और अनुपम है, वह रहमान (कृपालु) और रहीम (दयालु) है और अमन का उद्गम भी। अतः जब इस्लाम मुसलमान से मांग करता है कि वह स्वंय में ख़ुदा तआला की विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास करे तो यह किसी मुसलमान के लिए संभव ही नहीं रहता कि वह किसी की हानि का कारण बने, बल्कि वास्तविक मुसलमान का ईमान तो उसे पाबंद करता है कि वह मानवजाति से प्रेम करे और प्रत्येक मनुष्य के साथ सम्मान, सहानुभूति और हमदर्दी का व्यवहार करे।

एक प्रश्न बार-बार किया जाता है कि यदि इस्लाम अमन का धर्म है तो फिर पवित्र क़ुर्आन में युद्ध की अनुमति क्यों दी गई? चाहिए कि इस अनुमति को उसकी सही अगली पिछली पंक्तियों के प्रसंग में रखकर इस बात के आलोक में समझा जाए जो मैंने अभी वर्णन की है। स्थायी शान्ति की स्थापना आधारभूत एंव मूल उद्देश्य है। इस को प्राप्त करने के लिए प्राय: चेतावनी और डांट-डपट की भी आवश्यकता पड़ जाती है। इसी प्रकार जब अल्लाह तआला ने युद्ध की अनुमति दी तो यह अनुमति केवल अमन को बहाल करने तथा प्रतिरक्षात्मक उपाय के तौर पर थी। अत: यह बहुत बड़ा अन्याय है कि कुछ समुदाय तथा लोग पवित्र क़ुर्आन और इस्लाम के प्रवर्तक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अन्याय और अत्याचार को जोड़ते हैं। पवित्र क़ुर्आन तथा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र का निष्पक्ष होकर अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होता है कि इस्लाम किसी भी प्रकार के आतंकवाद या रक्तपात के सर्वथा विरुद्ध है।

समय का ध्यान रखते हुए इसके विवरण में तो शायद न जा सकूं परन्तु यहां इस्लाम की कुछ बुनियादी शिक्षाओं का वर्णन करता हूं जो निस्सन्देह यह सिद्ध करती हैं कि इस्लाम एक शान्तिपूर्ण धर्म है। जैसा कि मैंने अभी कहा कि एक आरोप यह लगाया जाता है कि इस्लाम आतंकवाद और लड़ाई झगड़ों का समर्थक है, परन्तु यह आरोप वास्तविकता के सर्वथा विरुद्ध है। पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलबक़र: की आयत 191 में अल्लाह तआला फ़रमाता है-

कोई भी युद्ध केवल इस स्थिति में वैध हो सकता है कि वह प्रतिरक्षात्मक दृष्टि से लड़ा गया हो। इसी बात की पुनरावृत्ति सूरह

अलहज्ज की आयत 40 में भी स्पष्ट तौर पर फ़रमायी-कि लड़ाई की अनुमति केवल उनको दी गई है जिन पर आक्रमण किया गया और जिन पर युद्ध लाद दिया गया तथा अल्लाह तआला ने जहां इस्लामी सरकारों को युद्ध की अनुमति दी वह केवल इस स्थिति में दी कि धार्मिक उद्देश्य और विचार धारा की स्वतंत्रता की स्थापना हो। अत: सूरह अलबक़रह: की आयत 194 में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को आदेश दिया कि किसी भी ऐसे क्षेत्र में युद्ध की अनुमति नहीं जहां धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण मौजूद हो। इसलिए किसी भी मुसलमान देश, संगठन या सदस्य को यह अधिकार प्राप्त नहीं कि वह किसी भी सरकार या उसकी जनता के विरुद्ध किसी भी प्रकार के अत्याचार, लड़ाई और कानून का उल्लंघन करने का भाग बने। बिल्कुल स्पष्ट बात है कि यूरोप और पश्चिमी देशों में सरकारों की नींव धर्म पर नहीं और यों किसी भी मुसलमान के लिए वैध नहीं कि वह कानून का उल्लंघन करे या सरकार का विरोध आतंकवाद के रूप में करे या किसी भी प्रकार का विद्रोह करने वाला हो। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तो यह है कि यदि किसी ग़ैर मुस्लिम देश में रहने वाले किसी व्यक्ति को लगे कि उसे धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं तो उसे यह अधिकार नहीं कि वह कानून का उल्लंघन करने पर उतर आए, बल्कि उसे चाहिए कि वह किसी ऐसे स्थान पर हिजरत (प्रवास) कर जाए जहां परिस्थितियां अनुकूल हों।

पवित्र क़ुर्आन की सूरह अन्नहल की आयत 127 में इस्लामी सरकारों को आदेश दिया गया है कि यदि उन पर कभी आक्रमण हो जाए तो वह केवल अपनी प्रतिरक्षा के तौर पर यथानुकूल उत्तर दें। अत:

पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा बहुत स्पष्ट है कि दण्ड मूल अपराध के अनुसार हो न कि उस से अधिक।

सूरह अन्फ़ाल की आयत 62 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम्हारा शत्रु बुरी नीयत से तुम पर आक्रमण करने का इरादा रखता है परन्तु बाद में फिर उपेक्षा करते हुए सुलह का हाथ बढ़ाता है तो उसके प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार करते हुए परस्पर शान्तिपूर्ण मैत्री की ओर बढ़ो इस बात को न देखते हुए कि उनकी नीयत कैसी है।

पवित्र क़ुर्आन की यह शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय अमन और सुरक्षा की स्थापना के लिए सुनहरी सिद्धान्त है। आज के विश्व में बहुत से उदाहरण मौजूद हैं जहां कुछ देशों ने केवल कल्पना पर आधारित किसी देश के काल्पनिक अत्याचारों के विरुद्ध आतंकवादी कार्य-प्रणाली ग्रहण कर ली। मालूम होता है कि मानो वे इस सिद्धान्त का पालन कर रहे हों कि "शत्रु पर आक्रमण कर दो ऐसा न हो कि वह पहल कर दे।" इस्लाम की शिक्षा तो यह है कि शान्ति की स्थापना के किसी भी अवसर को नष्ट न किया जाए चाहे उसकी आशा बहुत ही काल्पनिक क्यों न हो। पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह की आयत-9 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हें इस बात पर न उकसाए कि तुम उस से न्याय न करो। इस्लाम सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कैसी ही प्रतिकूल हों न्याय और इन्साफ का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। युद्ध की स्थिति में भी न्याय और इन्साफ की स्थापना बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा युद्ध के पश्चात् विजेता के लिए आवश्यक है कि वह न्याय से काम ले। और कभी भी अनुचित अत्याचार करने वाला न हो।

परन्तु आज हमें विश्व में सहनशीलता के ऐसे उच्च नैतिक मापदण्ड दिखाई नहीं देते, अपितु युद्ध की समाप्ति पर विजेता देश ऐसी पाबंदियां और प्रतिबंध देते हैं जो पराजित देश की उन्नति की संभावनाओं को सीमित करके उन क़ौमों की स्वतंत्रता और संप्रभुता को अवरुद्ध कर देते हैं। ऐसी कार्य-पद्धति अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में बिगाड़ का कारण है और उनका परिणाम असंतोष और नकारात्मक प्रभावों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। वास्तविकता यह है कि स्थायी अमन तब तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक समाज के प्रत्येक स्तर पर न्याय की स्थापना न हो जाए। इस्लाम की एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा हमें सूरह ' अलअन्फ़ाल' की आयत 68 में मिलती है कि मुसलमानों के लिए उचित नहीं कि युद्ध बंदियों को युद्ध के क्षेत्र से बाहर ले जाएं। इसलिए हिंसा द्वारा क्रान्ति लाने के सिद्धान्त को मानने वाले तथा आतंकवादी संगठन जो अकारण कैदियों को ले जा रहे हैं वे इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध आचरण कर रहे हैं। सूचनाओं के अनुसार वे न केवल कैदी बना कर ले जा रहे हैं बल्कि उन कैदियों पर कठोर अत्याचार भी करते हैं।

आतंकवादी संगठनों की यह कार्य-पद्धति अत्यन्त निन्दनीय है। दूसरी ओर पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा है कि यदि युद्ध में क़ैदी बना लेने का कोई औचित्य हो भी तो उनके साथ नम्रता का व्यवहार किया जाए और यथा शीघ्र उन्हें आज़ाद कर दिया जाए।

शान्ति स्थापित करने का एक अन्य सुनहरा सिद्धान्त सूरह अलहुजुरात की आयत 10 में यह वर्णन हुआ है कि-यदि दो देशों के मध्य कोई विवाद हो तो किसी तीसरे देश या गिरोह को मध्यस्थ की भूमिका निभाते हुए विवाद को परस्पर सुलह (सन्धि) द्वारा हल कराने

का प्रयास करना चाहिए। परस्पर सुलह की स्थिति में दोनों पक्षों में से कोई भी पक्ष यदि अवैध तौर पर सुलह की शर्तों की अवहेलना करे तो अन्य पक्षों को संयुक्त होकर अत्याचारी के लिए बाधा बनना चाहिए चाहे इसके लिए बल-प्रयोग ही करना पड़े। फिर यदि अत्याचारी पक्ष/सदस्य रुक जाए तो उसकी भर्त्सना करने या उस पर प्रतिबंध लागू करने की बजाए उसे एक स्वतंत्र देश तथा स्वतंत्र समाज के तौर पर उन्नति करने की अनुमति देनी चाहिए। वर्तमान युग में यह सिद्धान्त बहुत महत्त्वपूर्ण है विशेषतः महाशक्तियों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे यू.एन.ओ के लिए।

विश्व शान्ति की स्थापना के सिलसिले में एक और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त जो सांसारिक स्तर पर धार्मिक स्वतंत्रता के वातावरण को स्थापित करने की गारंटी देता है। पवित्र क़ुर्आन की सूरह 'अलहज्ज' की आयत 41 में वर्णन हुआ है। फ़रमाया- यदि युद्ध की अनुमति न दी जाती तो मस्जिदों के अतिरिक्त कलीसा, राहिबघर(गिरजाघर), मन्दिर तथा अन्य धर्मों के उपासना गृह सब भयंकर खतरे का शिकार हो जाते। अतः जहां इस्लाम ने बल-प्रयोग की अनुमति दी वह केवल इस्लाम को ही नहीं अपितु धर्म को सामान्यतः सुरक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से थी। वास्तविकता यह है कि इस्लाम समस्त धर्मों के लिए स्वतंत्रता, सहिष्णुता और सुरक्षा की गारंटी देता है तथा हर सदस्य को अपनी इच्छा के धर्म या आस्था का पालन करने का अधिकार देता है। मैंने आपके सामने पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाओं में से कुछ बिन्दु प्रस्तुत किए हैं जो समाज के प्रत्येक स्तर तथा विश्व के प्रत्येक भाग में एकता, राय में सहमति पैदा करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये वे सुनहरे सिद्धान्त

हैं जो पवित्र क़ुर्आन ने शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से विश्व के लोगों को प्रदान किए हैं। ये वे शिक्षाएं हैं जिन पर इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा ने व्यवहारिक आदर्श प्रस्तुत किया। सारांश के तौर पर दोबारा वर्णन करता हूं कि विश्व को अमन और सुरक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। यही हमारे युग की तात्कालिक और आवश्यक समस्या है। समस्त देशों तथा समस्त क़ौमों को धर्म अथवा किसी भी अन्य नाम पर होने वाले अत्याचार आतंक और अन्याय की रोक-थाम के लिए संयुक्त हो जाना चाहिए। इसमें किसी धर्म का हंसी-ठट्ठा भी सम्मिलित है, जिसके परिणाम स्वरूप बेचैनी और हस्तक्षेप होने की संभावना है तथा ऐसे घृणित कार्य भी जिनके कर्ता इंतिहा पसन्द समुदाय होते हैं और धर्म से औचित्य देते हैं।

इसके अतिरिक्त हमें चाहिए कि हम समस्त कौमों/देशों से न्याय का व्यवहार करें और उन से सहयोग करें ताकि प्रत्येक देश अपनी योग्यताओं को पहचाने और उन्नति के मार्ग पर चलने वाला हो। ईर्ष्या एवं तनाव का वर्तमान वातावरण दौलत की लालसा का परिणाम है। इस बारे में भी पवित्र क़ुर्आन ने सुनहरी सिद्धान्त वर्णन किया कि लालच के हाथों किसी अन्य के माल को हड़प न किया जाए। इस शिक्षा का पालन करने के द्वारा भी विश्व-शान्ति को उन्नति प्राप्त हो सकती है। समाज के प्रत्येक स्तर पर न्याय की मांगों को पूर्ण करना आवश्यक है ताकि हर व्यक्ति रंग-व-नस्ल में अन्तर किए बिना अपने पैरों पर सम्मान और मर्यादा के साथ खड़ा हो सके। आज हमें उन्नति प्राप्त देशों का उन्नति शील देशों में पूंजी निवेश करने के रुझान में वृद्धि दिखाई देती है। आवश्यक है कि वे न्याय का प्रदर्शन करें और केवल प्राकृतिक

साधनों तथा कम कीमत परिश्रमिक को अपने राष्ट्रीय हित एंव लाभ के लिए प्रयोग न करते रहें। उन्हें इन देशों से प्राप्त होने वाले लाभ में से प्राय: इन्हीं देशों में दोबारा पूंजी-निवेश के तौर पर लगा देना चाहिए ताकि स्थानीय लोग भी उन्नति एवं समृद्धि की ओर चल सकें। यदि उन्नति प्राप्त देश इन निर्धन देशों की सहायता के उद्‌देश्य से ऐसा करें तो न केवल उन निर्धन देशों को लाभ पहुंचेगा अपितु इसके लाभ दो पक्षीय होंगे। इसके द्वारा परस्पर विश्वास का वातावरण स्थापित होगा और वर्तमान निराशा और बेचैनी में कमी आएगी। इस से इस प्रभाव का निवारण भी होगा कि महाशक्तियां स्वार्थी हैं और निर्धन एंव कंगाल क़ौमों के संसाधनों से अवैध लाभ प्राप्त करती हैं और यह कि इस से स्थानीय वर्तमान आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और विश्व-स्तर पर जीविका संबंधी तथा वर्तमान आर्थिक स्थिति में सुधार पैदा होगा।

इस से निस्सन्देह विश्व स्तर पर प्रेम, भाईचारा और मित्रता का वातावरण पैदा होगा, इससे भी अधिक यह कि ऐसी कार्य-पद्धति विश्व-शान्ति की स्थापना की नींव सिद्ध होगी। यदि अभी इस ओर ध्यान न दिया गया तो विश्व की वर्तमान स्थिति का परिणाम विश्व-युद्ध होगा, जिसके दुष्प्रभाव भावी नस्लों तक छाए होंगे और हमारी नस्लें हमें क्षमा नहीं करेंगी।

इन शब्दों के साथ आप से आज्ञा चाहता हूं। अल्लाह तआला विश्व में वास्तविक शान्ति प्रकट करे। बहुत धन्यवाद।

वैश्विक अशान्ति में शान्ति की कुंजी

टोकियो, जापान, 2015 ई.

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का
टोकियो, जापान में विशेष आयोजन में दुआ कराने का दृश्य

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
टोकियो जापान में आयोजित विशेष आयोजन में पौधे को सींचते हुए

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
टोकियो जापान में आयोजित विशेष आयोजन में केन्द्रीय भाषण देते हुए

परिचय

दिनांक 23 नवम्बर 2015 ई को विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिल्टन होटल ओडाइबा, टोकियो में अपने सम्मान में आयोजित एक आयोजन में अहम भाषण दिया। इस आयोजन में साठ से अधिक प्रतिष्ठित मेहमान सम्मिलित हुए। इस अवसर पर हुज़ूर अन्वर ने सत्तर वर्ष पूर्व हिरोशिमा और नागासाकी पर हुये एटमी आक्रमणों के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। इससे पूर्व दो वक्ताओं मिस्टर माइक साटा याओशीको चेयरमेन टोकीबो ग्रुप आफ इन्डस्ट्रीज़ और 2011 ई के भूकम्प के अवसर पर सर्वाधिक प्रभावित होने वाले क्षेत्र टोहोको से संबंध रखने वाले मिस्टर एण्डोशीनी ची ने भी दर्शकों में भाषण दिया।

वैश्विक अशान्ति में शान्ति की कुंजी

23 नवम्बर 2015, स्थान - हिल्टन होटल, टोकियो, जापान।

तशह्हुद और तअव्वुज़ के बाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला ने मेहमानों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया-

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

अल्लाह तआला की दया और बरकतें आप पर उतरें। इस अवसर पर सर्वप्रथम मैं समस्त अतिथिगण का धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने आज के इस आयोजन के लिए हमारे निमंत्रण को स्वीकार किया। हम एक अत्यन्त खतरों और उपद्रवों से भरे युग में रह रहे हैं जहां विश्व की स्थिति बेचैनी का बहुत बड़ा कारण है, विश्व को अपनी गिरफ़्त में लिए हुए मतभेद तथा अशान्ति अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा के लिए एक खतरा बन गए हैं।

मुस्लिम जगत पर एक दृष्टि डालें तो बहुत से देशों की सरकारें अपने ही नागरिकों के साथ अत्याचारपूर्ण अराजकता में ग्रस्त हैं। अंधाधुंध अत्याचार और रक्तपात इन देशों के ताना-बाना को तबाह कर रहे हैं। परिणामस्वरूप आतंकवादी संगठन सत्ता में पैदा होने वाली रिक्तता का अनुचित लाभ उठाते हुए कुछ स्थानों पर क़ब्ज़ा करके अपनी नाम मात्र सरकारें बना बैठे हैं। वे अत्यन्त हिंसक पशुओं जैसी कार्य प्रणाली के द्वारा केवल अपने देशों में ही अमानवीय अत्याचार नहीं ढा रहे अपितु उन की पहुँच यूरोप तक भी हो गई है, जिस का एक उदाहरण निकट ही पेरिस के आक्रमण में किया गया अत्याचार और ज़ुल्म है।

पूर्वी यूरोप को देखें तो रशिया, यूक्रेन तथा कुछ अन्य यूरोपीय देशों के परस्पर अत्याचार बढ़ते चले जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त एक अमेरिकन युद्धपोत दक्षिणी चीन सागर में जा निकलने से अमरीका और चीन के मध्य भी तनाव में वृद्धि हुई है। फिर आप जानते ही हैं कि चीन और जापान के मध्य विवादित द्वीपों पर चिरकालीन दूतावास संबंधी तनाव मौजूद है।

भारत और पाकिस्तान के मध्य कश्मीर समस्या मतभेद का एक स्थायी कारण है और इसमें बेहतरी का भी कोई उपाय नहीं। इसी प्रकार इस्राईल और फ़िलिस्तीन का तनाव भी प्रदेश की शान्ति को तबाह किए हुए है।

अफ्रीका में कुछ आतंकवादी संगठनों ने कुछ क्षेत्रों पर क़ब्ज़ा और अधिकार प्राप्त करके विशाल स्तर पर तबाही और बरबादी मचा रखी है। यह तो बहुत सी समस्याओं में से कुछ का वर्णन किया गया है

जिनका इस समय विश्व को सामना है। अन्यथा विश्व में अशान्ति और तनाव फैलने के और बहुत से उदाहरण मौजूद हैं।

अतः वह एकमात्र निष्कर्ष जिस पर हम पहुँचते हैं वह यही है कि विश्व इस समय अत्याचार और अशान्ति की लपेट में है। आधुनिक युग में लड़ाई-झगड़ों का स्तर पूर्व युगों की अपेक्षा बहुत व्यापक है। विश्व के किसी एक क्षेत्र के परस्पर झगड़े स्थानीय स्तर तक ही सीमित नहीं रहते अपितु उनके प्रभाव और परिणाम बहुत दूर तक फैलते हैं।

समान्य मीडिया के आधुनिक और शीघ्रगामी माध्यमों ने विश्व को एक ग्लोबल विलेज बना दिया है। पहले समयों में युद्ध का संबन्धित संगठनों तक सीमित रहना संभव था, किन्तु अब प्रत्येक झगड़े और युद्ध के परिणाम वास्तविक रूप से विश्व स्तर पर प्रकट होते हैं। वास्तव में, मैं तो कई वर्षों से विश्व को सतर्क कर रहा हूँ कि इस वास्तविकता को जान लें कि अब किसी एक देश में होने वाला युद्ध विश्व के दूसरे देशों के अमन और शान्ति पर प्रभावी होगा।

बीसवीं शताब्दी में होने वाले दोनों विश्व युद्धों पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि उस समय में उपलब्ध युद्ध के शस्त्र वर्तमान समय के शस्त्रों और अस्त्रों की तुलना में इतने आधुनिक तथा घातक न थे। इसके बावजूद कहा जाता है कि केवल द्वितीय विश्व युद्ध में ही सात करोड़ लोग मरे, जिनमें से बहुत सी संख्या निर्दोष नागरिकों की थी। अतः प्रत्येक युग में विनाश और बरबादी की संभावना की कल्पना करना भी कठिन है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय अमरीका के ऐटमी हथियारों की शक्ति आधुनिक समय के न्यूक्लियर हथियारों की तुलना में कुछ भी न थी। अब न्यूक्लियर हथियार केवल महा शक्ति कहलाने वाले देशों के

पास ही मौजूद नहीं अपितु कुछ छोटे देश भी इन्हें रखते हैं। जहां विश्व की महाशक्तियाँ इन हथियारों को केवल एक प्रतिरक्षा के तौर पर रखे हुए हैं, वहाँ इस बात की कोई गारंटी नहीं कि छोटे देश भी ऐसा ही करें, और हम यह विश्वास नहीं कर सकते कि वे उन्हें इस्तेमाल नहीं करेंगे। अत: इसमें कोई संदेह नहीं की विश्व विनाश के मुख पर खड़ा है।

द्वितीय विश्व महायुद्ध के अंतिम चरणों में आप की क़ौम को भी एक अकल्पनीय विनाश और बरबादी के आघात को सहन करना पड़ा, जब आपके लाखों नागरिकों को निर्दयतापूर्वक मार दिया गया तथा आपके दो शहरों को ऐसे न्यूक्लियर आक्रमण से मिटा दिया गया कि जिस पर मानवता भी लज्जित है। ऐसी भयंकर दुर्घटना के अवलोकन तथा अनुभव से गुज़र कर जापानी क़ौम कभी नहीं चाहेगी कि ऐसा आक्रमण जापान में अपितु विश्व के किसी भी देश में दोहराया जाए। आप वे लोग हैं जो न्यूक्लियर युद्ध के विनाशकारी प्रभावों से भली भांति परिचित हैं, आप वे हैं जो जानते हैं कि ऐसे घातक हथियारों से पैदा होने वाले दुष्परिणाम केवल एक नस्ल तक सीमित नहीं अपितु भावी नस्लों तक छाए रहते हैं, आप वह क़ौम हैं जो न्यूक्लियर हथियारों के अतुल्य दुष्परिणामों की गवाही दे सकते हैं। इसलिए जापानियों से बढ़कर कोई क़ौम नहीं जो विश्व शान्ति एवं सुरक्षा के महत्त्व को पहचानती हो।

यह धन्यवाद का अवसर है कि जापान उस स्थिति से गुज़र कर अब एक अत्यन्त उन्नति प्राप्त क़ौम है और यों अपने भूतकाल को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक है कि जापान विश्व-शान्ति स्थापित करने में अपनी भूमिका अदा करे। यद्यपि यह खेदजनक बात है कि द्वितीय

विश्व युद्ध की समाप्ति पर जापान पर ऐसी पाबंदियां और प्रतिबंध लगा दिए गए जिन के परिणाम स्वरूप आप की क़ौम अन्तर्राष्ट्रीय सिफारिशों के निर्धारण में कोई विशेष क़दम नहीं उठा सकती फिर भी आपका देश अब भी अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं और राजनीतिक मामलों में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए आपको अपने प्रभाव एवं पहुँच को उत्तम रूप से काम में लाते हुए क़ौमों और देशों के मध्य शान्ति स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

इस वर्ष इतिहास के उन वहशियाना दिनों पर सत्तर वर्ष हो गए जब हीरोशिमा और नागासाकी पर एटमी बमबारी करके आप की क़ौम को विनाश, कष्ट और अत्याचार का लक्ष्य बनाया गया। चूंकि आप ने उस विनाश और बरबादी का सही चित्रण करने के उद्देश्य से म्यूज़ियम बना रखे हैं और चूंकि इस एटमी बमबारी के कुछ प्रभाव आज भी जारी हैं। इसलिए जापानी क़ौम लड़ाई-झगड़े के दुष्प्रभावों को समझ सकती है जैसा कि मैंने सांकेतिक तौर पर वर्णन किया है कि आप पर गुजरने वाली उस त्रासदी का एक भाग यह भी है कि युद्ध के पश्चात् जापान पर अनावश्यक और अन्यायपूर्ण प्रतिबंध भी लगा दिए गए। कई दशक गुजरने के साथ-साथ यह प्रतिबंध भी युद्ध के विनाशकारी प्रभावों को स्थायी तौर पर स्मरण कराने के लिए रहे होंगे।

जापान पर एटमी आक्रमण के समय दूसरे ख़लीफ़ा, जो उस समय इमाम जमाअत अहमदिया थे, ने उन आक्रमणों की घोर निंदा करते हुए फ़रमाया :

"हमारी धार्मिक एवं नैतिक शिक्षाएं हम से मांग करती हैं कि हम विश्व के समक्ष घोषणा करें कि हम इस वहशियाना कृत्य और रक्तपात

को किसी भी स्थिति में उचित नहीं समझते। मुझे इसकी बिलकुल परवाह नहीं कि कुछ सरकारें मेरे इस बयान को अप्रिय दृष्टि से देखें।"

हज़रत खलीफ़तुल मसीह द्वितीय (रज़ि.) ने इसके अतिरिक्त फ़रमाया कि उन्हें भविष्य में लड़ाई झगड़े में कोई कमी होती नहीं दिखाई देती बल्कि उन्हें अत्याचार और अन्यायों में वृद्धि होती दिखाई देती है। आज उन की चेतावनी पूर्णतया उचित सिद्ध हो गई है, यद्यपि तृतीय विश्वयुद्ध की कोई नियमित रूप से घोषणा तो नहीं की गई किन्तु वास्तव में एक विश्व युद्ध इस समय जारी है। सम्पूर्ण विश्व में पुरुष, स्त्री तथा बच्चों तक को हृदयविदारक अत्याचारों का लक्षण बनाया जा रहा है और मारा जा रहा है।

जहां तक हमारा संबंध है तो मुस्लिम जमाअत अहमदिया ने हमेशा हर प्रकार के अत्याचार और अन्याय की निन्दा की है, चाहे यह विश्व के किसी भी भाग में हो, क्योंकि इस्लामी शिक्षा की मांग है कि हम अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाएँ और मोहताज, अत्याचार पीड़ित वर्ग की सहायता करें। मैंने अभी वर्णन किया है कि हज़रत खलीफ़तुल मसीह द्वितीय (रज़ि॰) ने किस प्रकार बिना रोक-टोक जापान पर होने वाले एटमी आक्रमणों की निन्दा की थी। अतिरिक्त यह कि एक प्रसिद्ध एवं ख्याति प्राप्त अहमदी मुसलमान जो विश्व स्तर पर बहुत प्रभाव और पैठ रखते थे, ने जापान और उसकी जनता की सहायता करने का दृढ़ संकल्प किया। मेरा संकेत सर चौधरी ज़फरुल्लाह ख़ान साहिब की ओर है जो बहुत से अन्तर्राष्ट्रीय मुख्य पदों पर आसीन रहने के अतिरिक्त पाकिस्तान के प्रथम विदेश मंत्री थे और बाद में संयुक्त राष्ट्र की जनरल एसेम्बली के प्रेज़ीडेण्ट भी रहे। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् उन्होंने कुछ

सरकारों की ओर से जापान पर अन्याय पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की घोर निन्दा की। 1951 ई॰ में सानफ्रांसिस्को में होने वाली Peace Summit में पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल के मुख्य प्रतिनिधि के तौर पर चौधरी ज़फरुल्लाह ख़ान साहिब ने कहा-

"जापान के साथ शान्ति स्थापना की नींव न्याय और सुलह पर रखी जाए, न कि अत्याचार और अन्याय पर। भविष्य में जापान अपने राजनीतिक एवं सामाजिक ढांचे के सुधारों पर एक अत्यावश्यक भूमिका अदा करेगा जो उन्नति की स्पष्ट गारंटी है और जो जापान को शान्तिप्रिय देशों की पंक्ति में समानता का स्थान दिला सकती है।"

उन का भाषण पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाओं और इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम की सुन्नत के आलोक में था। इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को आधार बनाते हुए उन्होंने बताया कि किसी युद्ध में विजेता को कभी पराजित प्रतिद्वन्दी पर ऐसे अनुचित प्रतिबंध नहीं लगाने चाहिए जो भविष्य में उसकी उन्नति और समृद्धि में बाधक हों।

चौधरी ज़फरूल्लाह खान साहिब ने यह ऐतिहासिक बयान जापान के समर्थन में दिया क्योंकि एक अहमदी मुस्लिम की हैसियत से वह केवल पाकिस्तान की सरकार के प्रतिनिधि ही न थे अपितु इससे भी बढ़कर वह इस्लाम कि सर्वोत्कृष्ट शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

जैसा कि मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूं कि आप वह क़ौम हैं जो लड़ाई-झगड़े के दुष्परिणामों को किसी भी अन्य क़ौम से अधिक समझ सकते हैं। अत: जापानी सरकार को हर संभव उपाय तथा हर स्तर पर हर प्रकार के अमानवीय व्यवहार, अत्याचार और अन्याय का मुकाबला करते हुए उसका निवारण करना चाहिए। उसे चाहिए कि इस

बात के लिए प्रयासरत रहे कि जो पशुओं जैसा आक्रमण उन पर हुआ वह कभी भी, कहीं भी न दोहराया जाए।

जहां कहीं भी युद्ध के बादल मंडला रहे हों, जापानी नेताओं तथा जनता को तनाव कम करने और शान्ति स्थापित करने के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। जहां तक इस्लाम का संबंध है, कुछ लोगों की दृष्टि में यह एक अत्याचारी और आतंकवादी धर्म है। वे अपने इस विचार की बुनियाद इस बात पर रखते हैं कि इस्लामी जगत में लड़ाई-झगड़े और आतंकवाद के युग का दौर है।

तथापि उन के ये दृष्टिकोण पूर्णतया वास्तविकता के विरूद्ध हैं। वास्तव में इस्लाम की शान्ति प्रिय शिक्षाओं की विश्व के इतिहास में कोई तुलना नहीं। इसीलिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि. और चौधरी मुहम्मद ज़फरूल्लाह ख़ान साहिब रज़ि. ने आप की क़ौम पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ उठाई।

अब मैं इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को बहुत संक्षिप्त रूप में वर्णन करना चाहूंगा। इस्लाम का एक आधारभूत सिद्धान्त तो यह है कि किसी भी ऐसे युद्ध का कोई औचित्य नहीं जो भौगोलिक, राजनीतिक आधारों पर या प्राकृतिक सम्पदाओं पर अधिकार करके आर्थिक लाभों को प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाए। इसके अतिरिक्त पवित्र क़ुर्आन की सूरह अन्नहल की आयत 127 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि युद्ध की स्थिति में कोई भी दण्ड मूल अपराध के अनुसार हो न कि वैध सीमा से बढ़ कर। पवित्र क़ुर्आन ही की शिक्षा है कि युद्ध के पश्चात् क्षमा कर देना और धैर्य का प्रदर्शन करना उत्तम है।

इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन की सूरह 'अल अन्फ़ाल' की आयत 62

में फ़रमाया कि जहां दो सदस्यों/पक्षों के संबंधों में दराड़ आ गई हो और युद्ध की तैयारी की जा रही हो यदि कोई एक सदस्य/पक्ष सुलह करना चाहे तो दूसरे सदस्य/पक्ष पर अनिवार्य है कि वह उस प्रस्ताव का स्वागत करे और अल्लाह पर भरोसा रखे। पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है- किसी एक सदस्य/पक्ष को दूसरे सदस्य/पक्ष की नीयत पर कुधारणा नहीं रखनी चाहिए अपितु हमेशा सुलह और परस्पर समझौता करने का मार्ग तलाश करना चाहिए। क़ुर्आन की यह शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को स्थापित करने के लिए एक मूल सिद्धान्त है।

सूरह अलमाइदः की आयत-9 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि- किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हें इस बात पर न उकसाए कि तुम न्याय और इन्साफ़ की मांगों पर समझौता कर लो अपितु इस्लाम तो यह सिखाता है कि किसी भी परिस्थिति में, चाहे कैसी ही कठिनाइयां सामने हों न्याय और इन्साफ़ की मांगों का दामन दृढ़ता पूर्वक थाम कर रखा जाए। निस्सन्देह न्याय ही है जो संबंधों में अच्छाई का कारण होता है और असफल होने के अहसास तथा युद्ध के कारणों को दूर करने का कारण हो सकता है। सूरह 'अन्नूर' की आयत 34 में पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है कि यदि युद्ध के पश्चात् कैदियों को आज़ाद करने के लिए उन पर कोई आर्थिक दण्ड लगाओ तो शर्तें उचित होनी चाहिए ताकि वे उसे सुविधा पूर्वक अदा कर सकें। और यदि उसे क़िश्तों में वसूल किया जाए तो उत्तम है।

शान्ति-स्थापित करने का एक सुनहरी सिद्धान्त जो सूरह 'अलहुजुरात' की आयत 10 में यह भी वर्णन हुआ है फ़रमाया कि-यदि दो गिरोहों के मध्य तनाव हो तो कोई तीसरी क़ौम या गिरोह मध्यस्थ की भूमिका अदा करे और परस्पर शान्तिपूर्ण समझौते की स्थिति पैदा करने का प्रयास

करें। परस्पर सुलह की स्थिति में दोनों सदस्यों/पक्षों में से कोई भी यदि अवैध तौर पर सुलह की शर्तों के विरुद्ध कार्य करे तो अन्य सदस्यों को संयुक्त होकर अत्याचारी के लिए बाधक बनना चाहिए, चाहे उसके लिए बल का प्रयोग ही क्यों न करना पड़े। फिर यदि अत्याचारी सदस्य/पक्ष रुक जाए तो उस पर प्रतिबंध लगाने की बजाए उसे एक आज़ाद क़ौम/देश और आज़ाद समाज के तौर पर उन्नति करने की अनुमति देनी चाहिए। वर्तमान समय में यह सिद्धान्त बहुत महत्त्व रखता है विशेषत: महा शक्तियों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों उदाहरणतया यू.एन.ओ के लिए। यदि इन मूल्यों पर आज्ञापालन प्रारंभ कर दिया जाए तो विश्व में वास्तविक शान्ति और न्याय स्थापित हो सकता है तथा अनावश्यक असन्तोष और विफलता का अहसास स्वयं समाप्त हो जाएगा।

इसी प्रकार अन्य बहुत से क़ुर्आनी आदेश हैं जो विश्व में शान्ति स्थापित करने तथा लड़ाई-झगड़े के निषेध की ओर मार्गदर्शन करते हैं। हमारे रहमान और रहीम ख़ुदा ने शान्ति की कुंजी इसलिए प्रदान की क्योंकि वह चाहता है कि उसकी सृष्टि परस्पर एकता के वातावरण में रहे और हर प्रकार की नफ़रत और द्वेष से मुक्त हो।

अत: इन बातों के साथ मैं आप सब से निवेदन करता हूं कि अपनी पैठ और पहुंच को प्रयोग में लाते हुए विश्व में अमन और परस्पर एकता के लिए प्रयास करें। हमारा सामूहिक दायित्व है कि विश्व में जहां कहीं भी अशान्ति और तनाव है हम न्याय के लिए आवाज़ उठाएं और शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयास करें ताकि हम वैसे भयंकर युद्ध से सुरक्षित रह सकें जो आज से सत्तर वर्ष पूर्व लड़ा गया था, जिसके विनाशकारी प्रभाव कई दशकों पर छाए हुए थे अपितु

आज तक महसूस किए जाते हैं। यद्यपि सीमित स्तर पर एक विश्वयुद्ध का प्रारंभ हो चुका है। परन्तु हमें चाहिए कि हम अपने दायित्वों को यथा समय निभाएं ऐसा न हो कि कहीं उसके प्रभाव फैलकर विश्व को अपनी लपेट में ले लें और वे रक्त बहाने वाले और घातक हथियार दोबारा प्रयोग हों जो हमारी भावी नस्लों को तबाह कर दें।

अतः आइए, सब मिलकर अपने दायित्वों को निभाएं। विरोधी संगठन बनाने की बजाए हम सब को एकमत होकर परस्पर सहयोग करना चाहिए। हमारे पास अब कोई और चारा नहीं। क्योंकि यदि तृतीय महायुद्ध नियमित रूप से आरंभ हो गया तो उसके परिणामस्वरूप आने वाला विनाश और बरबादी के सिलसिलों की कल्पना भी असंभव है। निस्सन्देह ऐसी स्थिति में अतीत के युद्ध इस की तुलना में बहुत साधारण महसूस होंगे।

मेरी दुआ है कि विश्व इस स्थिति की कठोरता को समझे। इससे पूर्व कि विलम्ब हो जाए, मानवजाति ख़ुदा तआला के सामने झुकते हुए उसके अधिकारों तथा आपसी अधिकारों को अदा करने लगे।

अल्लाह तआला उन्हें समझ और विवेक प्रदान करे जो धर्म के नाम पर अशान्ति का वातावरण पैदा कर रहे हैं तथा उन्हें भी जो अपने आर्थिक हितों के उद्देश्य से भौगोलिक एंव राजनीतिक युद्ध कर रहे हैं। काश उन्हें ज्ञात हो जाए कि उनके उद्देश्य कितने अनुचित और विनाशकारी हैं। ख़ुदा करे कि विश्व के हर क्षेत्र में चिरस्थायी शान्ति स्थापित हो। आमीन

इन निवेदनों के साथ में आप का एक बार पुनः आभार व्यक्त करता हूं कि आप इस आयोजन में पधारे। बहुत धन्यवाद।

विश्व के विशिष्ट नेताओं के नाम पत्र

आदरणीय पोप बेनिडिक्ट XVI के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

31 अक्तूबर 2011

मान्यवर पोप बेनिडिक्ट XVI

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आप पर अपनी कृपा और बरकतें उतारे। विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के पेशवा होने के नाते मैं मान्यवर की सेवा में पवित्र क़ुर्आन का यह सन्देश पहुंचाता हूं कि "हे अहले किताब (कम से कम) एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे मध्य समान है (और वह यह है) कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना न करें और किसी को उसका भागीदार न बनाएं और न हम अल्लाह को छोड़कर आपस में एक-दूसरे को रब्ब बनाया करें।"

इस्लाम आजकल विश्व की क्रोधित दृष्टि का शिकार है तथा निरन्तर आरोपों का निशाना बनाया जा रहा है, जो लोग आरोप लगाते हैं वे इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का अध्ययन किए बिना ऐसा करते हैं। दुर्भाग्य से कुछ मुसलमान संगठनों ने भी केवल अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिए इस्लाम को बिल्कुल ग़लत ढंग में प्रस्तुत किया है परिणामस्वरूप पश्चिमी तथा ग़ैर मुस्लिम देशों के हृदयों में इतनी अधिक अविश्वास की भावना पैदा हो गई है कि शिक्षित लोग भी इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध निराधार आरोप लगाते हैं।

प्रत्येक धर्म का उद्देश्य मनुष्य को अल्लाह के निकट लाना है और मानवीय

मूल्यों को स्थापित करना है। किसी भी धर्म के प्रवर्तक ने कभी भी अपने अनुयायियों को यह शिक्षा नहीं दी कि वे दूसरों के अधिकारों को हड़प लें और अत्याचारपूर्ण व्यवहार करें। अत: मुसलमानों के एक छोटे और गुमराह वर्ग के दुष्कर्मों को इस्लाम और उसके पवित्र प्रवर्तक पर प्रहार के बहानों के तौर पर प्रयोग नहीं किए जाने चाहिए। इस्लाम हमें समस्त धर्मों के पैग़म्बरों (अवतारों) का सम्मान करने की शिक्षा देता है। अत: समस्त मुसलमानों के लिए उन समस्त पैग़म्बरों, जिनमें हज़रत यसू मसीह भी सम्मिलित हैं जिनका वर्णन पवित्र बाइबल या पवित्र क़ुर्आन में है, पर ईमान लाना आवश्यक है। हम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बहुत तुच्छ दास हैं। इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किए जाने वाले प्रहारों से हमें बहुत दुख और आघात पहुंचता है, परन्तु हम निरन्तर आप[स.] के उच्च आचरण को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करके तथा पवित्र क़ुर्आन की सुन्दर शिक्षाओं को प्रकट करके उत्तर देते हैं।

यदि कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट शिक्षा का पालन नहीं करता जबकि स्वयं को उसकी ओर सम्बद्ध करने का दावा करता है तो यह उसकी ग़लती है न कि शिक्षा की। इस्लाम शब्द के अर्थ ही शान्ति, प्रेम और सुरक्षा के हैं। "धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं" यह इस्लाम का स्पष्ट आदेश है। पवित्र क़ुर्आन बार-बार आग्रहपूर्वक प्रेम, सहानुभूति, शान्ति, मैत्री एवं त्याग की शिक्षा देता है तथा बार-बार यह कहता है कि जो संयम धारण नहीं करता वह अल्लाह से दूर है और वह इस्लामी शिक्षाओं से भी दूर है। अत: यदि कोई व्यक्ति इस्लाम को एक अत्यन्त उग्र और हिंसक और उसकी शिक्षाओं को रक्तपात पर आधारित समझता है तो उस का वास्तविक इस्लाम से कोई संबंध नहीं।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत केवल वास्तविक इस्लाम पर कार्यरत है तथा केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए कार्य करती है। यदि किसी गिरजा अथवा किसी अन्य उपासना स्थल को सुरक्षा की आवश्यकता पड़े तो वे हमें इस

कार्य के लिए कंधे से कंधा मिलाकर अपने साथ खड़ा पाएंगे। यदि हमारी मस्जिदों से किसी सन्देश की आवाज़ गूंजती है तो वह केवल यह होगी कि अल्लाह सब से महान है और हम यह गवाही देते हैं कि उसके अतिरिक्त कोई भी पूजनीय नहीं तथा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

एक कारण जो विश्व-शान्ति को भंग करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है वह यह है कि कुछ लोग यह समझते हैं कि वे बुद्धिमान, उच्च शिक्षा प्राप्त और पूर्ण स्वतंत्र हैं तथा वे धर्मों के प्रवर्तकों पर उपहास और अभिहास करने में पूर्णत: आज़ाद हैं। समाज में शान्ति को यथावत् रखने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अपने हृदय से समस्त विरोधी भावनाओं को समाप्त करे और अपनी सहिष्णुता एवं सहनशीलता के स्तर को बढ़ाए। परस्पर एक दूसरे के धर्मों के पैग़म्बरों के आदर-सम्मान की प्रतिरक्षा करने की आवश्यकता है। विश्व अशान्ति और बेचैनी के दौर से गुज़र रहा है। यह स्थिति इस बात की मांग करती है कि प्रेम और हमदर्दी का वातावरण पैदा करते हुए हम उस भय और अशान्ति को समाप्त करें। हम प्रेम और शान्ति के संदेश को अपने चारों ओर पहुंचाएं तथा हम पहले से बढ़कर एकतापूर्वक तथा उत्तम रूप में जीवनयापन करें तथा मानवीय मूल्यों को पहचानें।

आज विश्व में छोटे स्तर पर युद्ध आरंभ हो रहे हैं, दूसरी ओर महा शक्तियां विश्व-शान्ति स्थापित करने का दावा कर रही हैं। अब यह बात किसी से भी छिपी नहीं कि प्रत्यक्षत: हमें एक बात बताई जाती है परन्तु पर्दे के पीछे गुप्त रूप से उनके दूसरे एजेण्डे और नीतियां पूरी की जा रही होती हैं। प्रश्न यह है कि क्या ऐसी परिस्थितियों में विश्व शान्ति स्थापित हो सकती है। मैं बड़े खेद के साथ कहता हूं कि यदि हम संसार की वर्तमान परिस्थितियों को निकट से देखें तो हमें ज्ञात होगा कि एक और विश्वयुद्ध की नींव रखी जा चुकी है। यदि द्वितीय विश्व-युद्ध के

पश्चात् न्याय पर आधारित समानता के मार्ग को अपनाया जाता तो हम विश्व की यह वर्तमान स्थिति न देखते जो कि पुनः युद्ध की अग्नि की लपेट में आ चुकी है। परिणामस्वरूप विश्व के कई देशों के पास परमाणु हथियार हैं, परस्पर द्वेष और शत्रुताएं बढ़ रही हैं और विश्व विनाश के शिखर पर बैठा हुआ है। यदि जनता के विनाश के हथियार फट पड़े तो कई भावी पीढ़ियां स्थायी प्रकार की विकलांगता की शिकार होने के कारण वे हमें कभी क्षमा नहीं करेंगी। विश्व के पास स्रष्टा और सृष्टि के अधिकारों को अदा करने का अभी भी समय है।

मेरा विश्वास है कि अब विश्व की उन्नति पर ध्यान देने की बजाए यह नितान्त आवश्यक है कि विनाश से बचाने के लिए अपने प्रयासों को तीव्र करें। इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि मनुष्य अपने स्रष्टा को पहचाने, क्योंकि मानवता के जीवित रहने की केवल यही गारन्टी है अन्यथा विश्व तीव्रता के साथ अपने विनाश की ओर जा रहा है। यदि आज मनुष्य शान्ति स्थापित करने में सफल होता है तो दूसरों के दोषों को खोजने की बजाए उसे अपने अन्दर के शैतान को नियंत्रण में रखने का प्रयत्न करना चाहिए, अपनी बुराइयों को दूर करके एक व्यक्ति न्याय का आश्चर्यजनक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है। मैं विश्व को निरन्तर स्मरण कराता हूं कि दूसरों के प्रति घोर शत्रुताएं मानवीय मूल्यों को पूर्ण रूप से समाप्त कर रही हैं और इस प्रकार ये विश्व को विनाश की ओर ले जा रही हैं।

चूंकि आपकी आवाज़ विश्व में एक प्रभाव रखती है मैं आपसे भी आग्रह करता हूं कि इस विशाल संसार को बता दें कि प्राकृतिक संतुलन जो ख़ुदा ने स्थापित किया है उसमें हस्तक्षेप करते हुए वे तीव्रता के साथ विनाश की ओर जा रहे हैं। इस सन्देश को पहले से अधिक व्यापक और विशेष रूप से पहुंचाने की आवश्यकता है। विश्व के समस्त धर्मों को धार्मिक समन्वय की आवश्यकता है और विश्व के सभी लोगों को प्रेम, सहानुभूति एवं भ्रातृत्व की भावना पैदा करने

की आवश्यकता है। मेरी यह दुआ है कि सब अपने दायित्वों को समझें और शान्ति की स्थापना, प्रेम और संसार में अपने स्रष्टा को पहचानने के लिए अपनी भूमिका निभाएं। हम स्वयं दुआ करें और अल्लाह तआला से निरन्तर याचना करें कि वह विश्व के इस विनाश को टाल दे। मैं दुआ करता हूं कि हम उस विनाश से सुरक्षित रहें जो हमारी प्रतीक्षा में है।
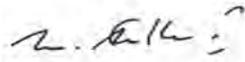
मिर्ज़ा मसरूर अहमद

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के पंचम ख़लीफ़ा

विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम

इस्त्राईल के प्रधानमंत्री के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

महामहिम
बैन्जामिन नेतेन्याहू
प्रधानमंत्री इस्राईल
यूरोशलम

26 फरवरी 2012

प्यारे प्रधानमंत्री जी !

मैंने वर्तमान समय में प्रकट होने वाले ख़तरों से भरी परिस्थितियों पर आधारित एक पत्र महामहिम शिमोन पेरेज़ प्रेज़ीडेन्ट इस्राईल को भी भेजा है। बड़ी तीव्रता से परिवर्तित हो रही परिस्थितियों के सन्दर्भ में मैंने यह महसूस किया कि यह नितान्त आवश्यक है कि मैं अपना सन्देश आप तक भी पहुंचाऊं क्योंकि आप देश की सरकार के प्रमुख हैं।

आप के राष्ट्र का इतिहास नुबुव्वत और ख़ुदा की वाणी (वह्यी) से संलग्न रहा है। बनी इस्राईल के नबियों ने आप के देश के भविष्य के संबंध में बड़ी स्पष्ट भविष्यवाणियां की थीं। वास्तव में बनी इस्राईल के नबियों की शिक्षाओं की अवज्ञा तथा उनकी भविष्यवाणियों की अवहेलना करने के परिणामस्वरूप बनी इस्राईल को कठोर कष्टों का सामना करना पड़ा था। यदि आप के देश के नेता नबियों की आज्ञाओं का पालन दृढ़तापूर्वक करते तो वे विभिन्न आपदाओं और कठिनाइयों से बचाए जाते। अत: कदाचित् दूसरों की अपेक्षा आपका अधिक कर्त्तव्य है कि नबियों की भविष्यवाणियों और आदेशों की ओर ध्यान दें।

मैं मसीह मौऊद और इमाम महदी का ख़लीफ़ा होने के नाते आप से सम्बोधित

हूं जिनको हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में भेजा गया और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बनी इस्राईल के बन्धुओं में हज़रत मूसा की तरह सम्पूर्ण मानवजाति के लिए साक्षात् दया बनाकर भेजा गया था। (डेट्रोनामी 18:18)। इसलिए ख़ुदा का सन्देश स्मरण कराना मेरा कर्त्तव्य है। मुझे आशा है कि आप की भी गणना उन लोगों में होगी जो ख़ुदा की आवाज़ सुनते हैं और जो सफलतापूर्वक सीधा मार्ग ढूंढ लेते हैं, वह मार्ग जो कि महान और सर्वश्रेष्ठ, पृथ्वी और आकाश के स्वामी, ख़ुदा की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

अख़बारों में हम आजकल ऐसी रिपोर्ट सुनते हैं कि आप ईरान पर आक्रमण करने की तैयारियां कर रहे हैं जबकि विश्व युद्ध के भयावह परिणाम आपके सामने हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में जहां अन्य लाखों लोग मारे गए वहां हज़ारों यहूदियों के प्राण भी गए। प्रधानमंत्री होने की दृष्टि से अपने देश की जनता की रक्षा करना आपका कर्त्तव्य है। विश्व की वर्तमान परिस्थितियां यह प्रकट करती हैं कि अब एक और विश्व युद्ध केवल दो देशों के मध्य नहीं होगा अपितु विभिन्न ब्लाक बन जाएंगे। विश्व युद्ध छिड़ने का ख़तरा अत्यधिक गंभीर है। मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों आदि सभी के जीवन ख़तरे में हैं। यदि ऐसा युद्ध आरंभ होता है तो यह मानव के श्रृंखलाबद्ध विनाश का कारण होगा। इस भयंकर विनाश के प्रभाव भावी पीढ़ियों तक होंगे जो या तो विकलांग पैदा होंगी या अपाहिज। इसका कारण यह है कि ऐसे युद्ध में नि:सन्देह परमाणु हथियारों का प्रयोग होगा। अत: मेरा आप से यह निवेदन है कि विश्व को एक विश्व युद्ध में झोंकने की बजाए विश्व को यथासंभव विनाश से बचाने का प्रयत्न करें। शक्ति द्वारा विवादों का समाधान करने के स्थान पर वार्तालाप के द्वारा उनका समाधान करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम अपनी भावी पीढ़ियों को बतौर उपहार एक उज्ज्वल भविष्य दें, न कि हम उन्हें विकलांगताओं जैसे दोषों को उपहार दें।

मैं अपने विचारों को आपकी धार्मिक शिक्षाओं पर आधारित उद्धरणों द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास करूंगा। पहला उद्धरण 'ज़बूर' (भजन संहिता) से लिया

गया है -

"कुमर्मियों के कारण मत कुढ़, कुटिल काम करने वालों के विषय में डाह न कर ! क्योंकि वे घास के समान झट कट जाएंगे, और हरी घास के समान मुर्झा जाएंगे। यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर ; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह। यहोवा को अपने सुख का मूल जान और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा। अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़ ; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा। वह तेरा धर्म ज्योति के समान और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले के समान प्रकट करेगा। यहोवा के सामने चुप-चाप रह और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर ; उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सफल होते हैं, और वह बुरी युक्तियों को निकालता है।

क्रोध से परे रह और जलजलाहट को छोड़ दे। मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी। क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएंगे ; और जो यहोवा की बात जोहते हैं वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं ; और तू उसके स्थान को भली भांति देखने पर भी उसको न पाएगा। परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएंगे।"

ज़बूर (भजन संहिता 37 : 1-11)

इसी प्रकार हम तौरात में यह भी देखते हैं

"अपनी थैली में भांति भांति के, अर्थात घटते बढ़ते बटखरे न रखना। अपने घर में भांति भांति के, अर्थात घटते बढ़ते नपुए न रखना। तेरे बटखरे और नपुए पूरे पूरे और धर्म के हों ; इसलिए कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरी आयु बहुत हो। क्योंकि ऐसे कामों में जितने कुटिलता करते हैं, वे सब तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि से घृणित हैं।"

(व्यवस्थाविवरण, 25 : 13-16)

अत: विश्व के समस्त नेताओं और विशेषकर आपको शक्ति के बल पर शासन करने की विचारधारा को समाप्त कर देना चाहिए तथा निर्बल पर अत्याचार

करने से बचना चाहिए। इसकी बजाए न्याय एवं शान्ति को प्रसारित करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से आप स्वयं भी शान्ति में रहेंगे, आप शक्ति प्राप्त करेंगे तथा विश्व में शान्ति भी स्थापित होगी।

मेरी यह दुआ है कि आप और विश्व के अन्य नेता मेरे सन्देश को समझें, अपने पद की गरिमा को पहचानें तथा अपने दायित्वों को पूरा करें।

आपका शुभ चिन्तक

मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह V
विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख

इस्लामी रिपब्लिक ईरान के राष्ट्रपति के नाम पत्र
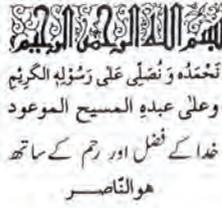
16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

महामहिम
राष्ट्रपति इस्लामी रिपब्लिक ईरान
महमूद अहमदी निजाद
तेहरान

7 मार्च 2012

प्यारे राष्ट्रपति जी,

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बरकातोहू

विश्व में जो ख़तरनाक घटनाएं प्रकट हो रही हैं उनको देखते हुए मैंने यह महसूस किया कि आप को पत्र लिखना आवश्यक है। ईरान के राष्ट्रपति होने के नाते आपको ऐसे निर्णय करने का अधिकार है जिसका प्रभाव केवल आपके देश पर ही नहीं बल्कि पूरे विश्व पर पड़ेगा। आजकल विश्व में बहुत अशान्ति और बेचैनी है। बहुत से देशों में छोटे स्तर के युद्ध आरंभ हो चुके हैं जबकि अन्य स्थानों में महा-शक्तियां शान्ति स्थापित करने के बहाने हस्तक्षेप कर रही हैं। प्रत्येक देश किसी अन्य देश की सहायता या विरोध में प्रयासरत है परन्तु न्याय की मांगे पूर्ण नहीं की जा रहीं। मैं खेद के साथ कहता हूं कि यदि अब हम विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यानपूर्वक देखें तो हमें ज्ञात होगा कि एक और विश्व-युद्ध की नींव पहले ही रखी जा चुकी है। बहुत से छोटे और बड़े देशों के पास परमाणु हथियार मौजूद होने के कारण परस्पर द्वेष और शत्रुता में वृद्धि हो रही है। ऐसी

कठिन परिस्थिति में तृतीय विश्व-युद्ध भयानक रूप में निश्चय ही हमारे निकट है। जिस प्रकार कि आप जानते हैं कि परमाणु हथियारों के उपलब्ध होने का तात्पर्य यह है कि तृतीय विश्व-युद्ध एटमी युद्ध होगा। उसका अन्तिम परिणाम बहुत विनाशकारी होगा तथा ऐसे युद्ध के दूरगामी प्रभाव भावी पीढ़ियों के विकलांग एवं कुरूप पैदा होने का कारण होंगे।

यह मेरा विश्वास है हम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए भेजे गए थे और सम्पूर्ण मानवजाति के लिए साक्षात् दया स्वरूप थे, के अनुयायी होने के नाते हम कदापि यह इच्छा नहीं करते और न कर सकते हैं कि विश्व को ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़े। इसी कारण मेरा आपसे निवेदन है कि चूंकि ईरान भी विश्व की एक महत्त्वपूर्ण शक्ति है, अतः उसे तृतीय विश्व युद्ध को रोकने के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। निःसन्देह यह एक वास्तविकता है कि महाशक्तियां दोहरे मापदंड अपनाती हैं। उनकी अन्यायपूर्ण नीतियां विश्व भर में अव्यवस्था और अशान्ति फैलाने का कारण बनी हैं। परन्तु हम इस वास्तविकता से भी विमुख नहीं हो सकते कि कुछ मुस्लिम संगठन अनुचित ढंग से तथा इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत आचरण करते हैं। जिस को महाशक्तियों ने निर्धन मुस्लिम देशों से अनुचित रूप से अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए एक बहाने के रूप में प्रयोग किया है। अतः मैं आपसे पुनः निवेदन करता हूं कि विश्व को तृतीय विश्व युद्ध से बचाने के लिए आप अपनी समस्त शक्ति का उपयोग करते हुए प्रयास करें। पवित्र क़ुर्आन मुसलमानों को यह शिक्षा देता है कि किसी जाति की शत्रुता उन्हें न्यायपूर्वक व्यवहार करने से न रोके। सूरह अलमाइदह आयत नं. 3 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि :-

> "और तुम्हें किसी जाति की शत्रुता इस कारण से कि उन्होंने तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोका था, इस बात पर न उकसाये कि तुम अत्याचार करो। और नेकी और तक़वा में एक दूसरे का

सहयोग करो और पाप और अत्याचार (वाले कामों) में सहयोग न करो और अल्लाह से डरो। निस्सन्देह अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है।"

इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन की इसी सूरह में मुसलमानों को यह निर्देश भी दिया गया है :

"हे ईमान वालो ! तुम न्यायपूर्वक गवाही देते हुए अल्लाह (की प्रसन्नता प्राप्त करने) के लिए खड़े हो जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात के लिए तैयार न कर दे कि तुम न्याय न करो। तुम न्याय से काम लो, यह बात संयम के अधिक निकट है तथा अल्लाह से डरो। जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उसे जानता है।"

(अलमाइदह, आयत : 9)

अतः आपको केवल शत्रुता और घृणा के कारण किसी अन्य देश का विरोध नहीं करना चाहिए। मैं स्वीकार करता हूं कि इस्राईल अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर रहा है और उसकी दृष्टि ईरान पर है। निश्चय ही यदि कोई देश आपके देश पर अन्यायपूर्ण ढंग से आक्रमण करता है तो आपको प्रतिरक्षण का अधिकार प्राप्त है। बहरहाल परस्पर विवादों का समाधान यथासम्भव कूटनीति और वार्तालाप द्वारा करना चाहिए। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि शक्ति का प्रयोग करने के स्थान पर वार्तालाप द्वारा विवादों का समाधान करने का प्रयास करें। मेरा आपसे विनम्र निवेदन करने का कारण यह है कि मैं ख़ुदा की उस निर्वाचित विभूति का अनुयायी हूं जो इस युग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक के रूप में प्रकट हुआ और उसने मसीह मौऊद और इमाम महदी होने का दावा किया। आपका उद्देश्य यह था कि मानवता को ख़ुदा के निकट लाया जाए और प्रजा के

अधिकारों को ठीक उसी प्रकार स्थापित किया जाए जिस प्रकार हमारे स्वामी और पथप्रदर्शक, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने जो सम्पूर्ण मानवजाति के लिए साक्षात् दया स्वरूप थे, हमें स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करके दिखाया।

अल्लाह तआला समस्त मुस्लिम उम्मत को इस सुन्दर शिक्षा को समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

वस्सलाम
भवदीय
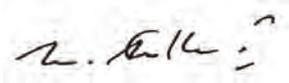
मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह
प्रमुख, विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

श्रीमान् बराक ओबामा,
राष्ट्रपति संयुक्त राज्य अमेरिका,
व्हाइट हाउस,
1600 पेन्सल्वेनिया
वाशिंगटन (डी. सी.)

8 मार्च 2012

मान्यवर राष्ट्रपति

विश्व में जो चिन्ताजनक परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं उसके परिदृश्य में मैंने आपको पत्र लिखना आवश्यक जाना क्योंकि आप संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति हैं जो कि एक महाशक्ति है और आपको ऐसे निर्णय लेने का अधिकार है जिनसे न केवल आपके देश का अपितु सामान्य रूप से समस्त संसार का भविष्य प्रभावित हो सकता है।

इस समय संसार में अत्यधिक बेचैनी और व्याकुलता पाई जाती है। कुछ क्षेत्रों में निम्न स्तर के युद्ध छिड़ चुके हैं। दुर्भाग्यवश इन विवादग्रस्त क्षेत्रों में शान्ति स्थापित करने में महाशक्तियों को अपने प्रयासों में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है। विश्व स्तर पर हम यह देखते हैं प्रत्येक देश किसी अन्य देश का समर्थन अथवा विरोध करने में व्यस्त है, परन्तु इस सम्बन्ध में न्याय की मांगों को पूरा नहीं किया जा रहा है। यदि हम विश्व की वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टि डालें तो अत्यन्त खेद के साथ कहना पड़ता है कि एक और विश्व युद्ध की नींव रखी जा चुकी है। बहुत से छोटे एवं बड़े देशों ने परमाणु शस्त्र प्राप्त कर लिए हैं और इसी कारण

देशों में परस्पर वैमनस्य और आक्रोश एवं असंतोष की भावना में वृद्धि होती जा रही है। ऐसी विकट परिस्थिति में तृतीय विश्व युद्ध की प्रबल सम्भावना दिखाई देती है। निस्संदेह ऐसे युद्ध में परमाणु शस्त्रों का प्रयोग होगा। अत: हमें ऐसा प्रतीत होता है कि विश्व एक भयंकर विनाश की ओर अग्रसर है। यदि द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् न्याय और समानता का मार्ग अपनाया जाता तो आज विश्व की स्थिति ऐसी न होती जिसके कारण यह पुन: युद्ध की ज्वाला की चपेट में आ चुका है।

जैसा हम सभी परिचित हैं राष्ट्रसंघ की विफलता और 1932 ई. के आर्थिक संकट द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण बने थे। आज के अग्रगण्य अर्थशास्त्री यह कहते हैं वर्तमान और 1932 ई. के आर्थिक संकट में बहुत सी समानताएं हैं। हम यह देखते हैं कि राजनैतिक और आर्थिक समस्याएं छोटे देशों के मध्य पुन: युद्ध का कारण बनी हैं और उन देशों में इन के कारण आंतरिक अशान्ति और असंतोष का वातावरण व्याप्त हो चुका है। इस स्थिति में अन्तत: कुछ ऐसी शक्तियां अनुचित लाभ उठाकर संसार की बागडोर सम्भाल लेंगी जो विश्व युद्ध का कारण बन जाएंगी। यदि छोटे देशों के परस्पर विवादों का राजनीति अथवा कूटनीति से समाधान नहीं ढूंढा जा सकता तो इस के कारण विश्व में नए गुटों और समूहों का जन्म होगा और यह स्थिति तृतीय विश्व युद्ध का पूर्वावलोकन प्रस्तुत करेगी। अत: मेरा यह विश्वास है कि इस समय विश्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाए यह अतिआवश्यक और नितान्त अनिवार्य है कि हम विश्व को इस विनाश से सुरक्षित रखने के अपने प्रयासों में शीघ्र से शीघ्र तीव्रता पैदा करें। इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि मानवजाति परमात्मा जो कि एक है और हमारा स्रष्टा है को पहचाने, क्योंकि संकट और विपदाओं में मानवता के जीवित बचने को केवल यही सुरक्षित बना सकता है, वरन् यह संसार निरन्तर आत्म-विनाश की ओर तीव्रता से अग्रसर होता रहेगा।

मेरा आप से अपितु विश्व के सभी नेताओं से यह अनुरोध है कि दूसरे देशों का दमन करने के लिए शक्ति के स्थान पर कूटनीति, वार्तालाप और सुनीति का

प्रयोग किया जाए। विश्व महाशक्तियों जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका की शान्ति स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। उन्हें छोटे देशों की गतिविधियों को विश्व-शान्ति भंग करने का आधार नहीं बनाना चाहिए। आज परमाणु हथियार केवल संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा दूसरी महाशक्तियों के पास ही नहीं अपितु अपेक्षाकृत छोटे देशों ने भी ऐसे महाविनाशकारी शस्त्र प्राप्त कर लिए हैं जिन के नेता असंयमी हैं और बिना किसी सोच-विचार के कार्यवाही करने वाले हैं। अतः आपसे मेरा विनम्र निवेदन है कि आप छोटी और बड़ी शक्तियों को तृतीय विश्व-युद्ध की विस्फोटक स्थिति उत्पन्न करने से रोकने का भरसक प्रयास करें। इस सम्बन्ध में हमारे मन में कोई शंका नहीं होनी चाहिए यदि हम इस प्रयास में विफल हो गए तो आगामी युद्ध के दुष्प्रभाव केवल एशिया, यूरोप और उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका के निर्धन देशों तक ही सीमित नहीं होंगे अपितु हमारी त्रुटियों के गम्भीर परिणाम हमारी भावी पीढ़ियों को भुगतने पड़ेंगे और विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में विकलांग अथवा विकृत शरीर वाले बच्चे जन्म लेंगे। वे अपने उन नेताओं को कदापि क्षमा नहीं करेंगे जिन्होंने संसार को महाप्रलय में झोंक दिया। केवल अपने निहित स्वार्थों की चिन्ता करने के स्थान पर हमें भावी पीढ़ियों के हितार्थ कार्य करना चाहिए और उनके लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए। महाप्रतापी परमात्मा आप को तथा विश्व के अन्य सभी नेताओं को यह संदेश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

भवदीय

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

प्रमुख, विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

कनाडा के प्रधानमंत्री के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

श्रीमान स्टीफन हार्पर,
प्रधानमंत्री कनाडा
ओटावा, आंटेरियो

8 मार्च 2012

प्रिय प्रधानमंत्री जी,

विश्व में जो भयावह परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं उसके परिदृश्य में मैंने यह आवश्यक समझा कि आपको पत्र लिखूं क्योंकि आप कनाडा के प्रधानमंत्री हैं और आप को ऐसे निर्णय लेने का अधिकार है जिनसे न केवल आपके देश का अपितु सामान्य रूप से समस्त संसार का भविष्य प्रभावित हो सकता है।

जैसा हम सभी परिचित हैं राष्ट्रसंघ की विफलता और 1932 ई. के आर्थिक संकट द्वितीय विश्व युद्ध का प्रमुख कारण बने थे। आज के अग्रगण्य अर्थशास्त्री यह कहते हैं वर्तमान और 1932 ई. के आर्थिक संकट में बहुत सी समानताएं हैं। हम यह देखते हैं कि राजनैतिक और आर्थिक समस्याएं छोटे देशों के मध्य पुन: युद्ध का कारण बनी हैं और उन देशों में इन के कारण आंतरिक अशान्ति और असंतोष का वातावरण व्याप्त हो चुका है। इस स्थिति में अन्तत: कुछ ऐसी शक्तियां अनुचित लाभ उठाकर संसार की बागडोर सम्भाल लेंगी जो विश्व युद्ध का कारण बन जाएंगी। यदि छोटे देशों के परस्पर विवादों का राजनीति अथवा कूटनीति से समाधान नहीं ढूंढा जा सकता तो इस के कारण विश्व में नए गुटों और समूहों का जन्म होगा और यह स्थिति तृतीय विश्व युद्ध का पूर्वावलोकन प्रस्तुत करेगी। अत: मेरा यह विश्वास है कि इस समय विश्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की

बजाए यह अतिआवश्यक और नितान्त अनिवार्य है कि हम विश्व को इस विनाश से सुरक्षित रखने के अपने प्रयासों में शीघ्र से शीघ्र तीव्रता पैदा करें। इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि मानवजाति परमात्मा जो कि एक है और हमारा स्रष्टा है को पहचाने क्योंकि केवल यही मानवता को सुरक्षित बना सकता है, वरन् यह संसार निरन्तर आत्म-विनाश की ओर तीव्रता से अग्रसर होता रहेगा।

कनाडा को विश्व में सबसे अधिक न्यायप्रिय देशों में एक होने की विशाल ख्याति प्राप्त है। आपका देश सामान्यत: दूसरे देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता। इस से बढ़ कर यह कि हमारे अर्थात् अहमदिया मुस्लिम जमाअत के कनाडा वासियों के साथ विशेष मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं। अत: मेरा आप से अनुरोध है कि विश्व की छोटी और बड़ी शक्तियों को विनाशकारी तृतीय विश्व युद्ध की स्थिति उत्पन्न करने से रोकने के यथासंभव प्रयास करें।

मेरा आप से अपितु विश्व के सभी नेताओं से यह अनुरोध है कि दूसरे देशों का दमन करने हेतु शक्ति के स्थान पर कूटनीति, वार्तालाप और सुनीति का प्रयोग किया जाए। विश्व महाशक्तियों जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका की शान्ति स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। उन्हें छोटे देशों की गतिविधियों को विश्व-शान्ति भंग करने का आधार नहीं बनाा चाहिए। आज परमाणु हथियार केवल संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा दूसरी महाशक्तियों के पास ही नहीं अपितु अपेक्षाकृत छोटे देशों ने भी ऐसे महाविनाशकारी शस्त्र प्राप्त कर लिए हैं जिन के नेता असंयमी हैं और बिना किसी सोच-विचार के कार्यवाही करने वाले हैं। अत: आपसे मेरा विनम्र निवेदन है कि आप छोटी और बड़ी शक्तियों को तृतीय विश्व-युद्ध की विस्फोटक स्थिति उत्पन्न करने से रोकने का भरसक प्रयास करें। इस सम्बन्ध में हमारे मन में कोई शंका नहीं होनी चाहिए यदि हम इस प्रयास में विफल हो गए तो आगामी युद्ध के दुष्प्रभाव केवल एशिया, यूरोप और उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका के निर्धन देशों तक ही सीमित नहीं होंगे अपितु हमारी त्रुटियों के गम्भीर परिणाम हमारी भावी पीढ़ियों को भुगतने पड़ेंगे और विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में विकलांग अथवा विकृत

शरीर वाले बच्चे जन्म लेंगे। वे अपने उन नेताओं को कदापि क्षमा नहीं करेंगे जिन्होंने संसार को महाप्रलय में झोंक दिया। केवल अपने निहित स्वार्थों की चिन्ता करने के स्थान पर हमें भावी पीढ़ियों के हितार्थ कार्य करना चाहिए और उनके लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए। महाप्रतापी परमात्मा आप को तथा विश्व के अन्य सभी नेताओं को यह संदेश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

भवदीय

मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह पंचम
प्रमुख विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

दो पवित्र स्थलों के संरक्षक सऊदी अरब राज्य के सम्राट के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

दो पवित्र स्थलों के संरक्षक
सऊदी अरब राज्य के सम्राट
अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ अल सऊद
रियाज़, सऊदी अरब

28 मार्च 2012

माननीय सम्राट अब्दुल्लाह

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

आज मैं एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार करने के उद्देश्य से आपको पत्र लिख रहा हूं क्योंकि दो पवित्र स्थलों के संरक्षक और सऊदी अरब के सम्राट होने के नाते उम्मते मुस्लिमा (मुस्लिम समुदाय) में आप का एक उच्च स्थान है। आपके देश में इस्लाम के दो सबसे अधिक पवित्र स्थल — मक्का मुकर्रमा एवं मदीना मनुव्वरा — स्थित हैं जिन से प्रेम करना मुसलमानों के ईमान का अंश है। ये स्थल मुसलमानों की आध्यात्मिक उन्नति का केन्द्र भी हैं और मुसलमान इनका अत्यन्त सम्मान और आदर करते हैं। इस दृष्टिकोण से सभी मुसलमानों और मुस्लिम राज्यों ने आपको एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। यह सम्मान इस बात की मांग करता है कि आप समस्त उम्मते मुस्लिमा का न केवल उचित मार्गदर्शन करें अपितु मुस्लिम देशों के भीतर शान्ति एवं एकता का वातावरण भी उत्पन्न करें। आपको मुसलमानों में परस्पर प्रेम और सहानुभूति का विकास करने का प्रयत्न करना चाहिए और رحماء بينهم अर्थात् 'वे परस्पर दया करते हैं' के सिद्धान्त के

सम्बन्ध में भी उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

अन्ततः आप को समस्त मानवजाति के हित को सम्मुख रखते हुए सम्पूर्ण विश्व में शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख और हज़रत मसीह मौऊद व इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) होने के नाते मेरा यह अनुरोध है कि यद्यपि अहमदिया मुस्लिम जमाअत और इस्लाम के अन्य समुदायों में परस्पर मतभेद हैं तथापि हमें विश्व-शान्ति की स्थापना के प्रयास के लिए एकत्र हो जाना चाहिए। हमें संसार को इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से जो कि प्रेम और शान्ति पर आधारित हैं, परिचित कराने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार पश्चिमी देशों तथा विश्व के अन्य भागों में इस्लाम के सम्बन्ध में जो भ्रम दृढ़तापूर्वक स्थापित हो चुके हैं उनका निवारण कर सकेंगे। अन्य जातियों अथवा समुदायों की शत्रुता हमें कदापि इस बात से न रोके कि हम न्यायपूर्वक व्यवहार न करें। पवित्र कुरआन की सूरह अल माइदः की आयत संख्या 3 में सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है कि :

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰي ۠ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

"और तुम्हें किसी जाति की शत्रुता इस कारण से कि उन्होंने तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोका था, इस बात पर न उकसाये कि तुम अत्याचार करो। तुम नेकी और तक़्वा में एक दूसरे का सहयोग करो और पाप और अत्याचार (वाले कामों) में सहयोग न करो और अल्लाह से डरो। निस्सन्देह अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है।"

इस मार्गदर्शक सिद्धान्त को हमें सम्मुख रखना चाहिए जिस के द्वारा हम विश्व के समक्ष इस्लाम की सुन्दर शिक्षाओं को प्रस्तुत करने का कर्त्तव्य पूरा कर सकें।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र नाम को बदनाम करने के उद्देश्य से कुछ राजनीतिज्ञ और तथाकथित विद्वान इस्लाम के विरुद्ध घृणा के बीज बो रहे हैं। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वे कुरआन की शिक्षाओं का सर्वथा विकृत स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं। इससे भी अधिक यह कि फिलस्तीन और इस्राईल के मध्य का विवाद दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है और इसी प्रकार इस्राईल और ईरान की परस्पर शत्रुता इस सीमा तक बढ़ चुकी है उनके आपसी सम्बन्ध गम्भीर रूप से टूट चुके हैं। ऐसी परिस्थितियां यह मांग करती हैं कि आप उम्मते मुस्लिमा (मुस्लिम समुदाय) के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नेता होने के नाते इन विवादों का न्याय और समानता के आधार पर समाधान करने के लिए हर सम्भव प्रयास करें। जब भी और जहां कहीं भी इस्लाम के विरुद्ध घृणा फैलाई जाती है तो अहमदिया मुस्लिम जमाअत उसे दूर करने का यथासम्भव प्रयत्न करती है। जब तक समस्त उम्मते मुस्लिमा एकत्र हो कर इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयास न करे, शान्ति की स्थापना कभी नहीं हो सकेगी।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस संबंध में भरसक प्रयत्न करें। यदि तृतीय विश्व युद्ध का होना निश्चित है तो हमें कम से कम यह प्रयत्न करना चाहिए कि इसका आरम्भ किसी मुस्लिम देश से न हो। संसार में कोई भी मुस्लिम देश अथवा कोई भी मुसलमान व्यक्तिगत स्तर पर, वर्तमान अथवा भविष्य में विश्व के सर्वनाश का कारण बनने का आरोप अपने ऊपर लेना नहीं चाहेगा। ऐसा सर्वनाश जिसके फलस्वरूप भावी पीढ़ियां विकलांग अथवा शारीरिक दोषों के साथ उत्पन्न होंगी क्योंकि यदि अब तृतीय विश्व युद्ध छिड़ जाता है तो अवश्य ही वह युद्ध परमाणु शस्त्रों द्वारा लड़ा जाएगा। हम द्वितीय विश्व युद्ध में जापान के दो शहरों में परमाणु बम फैंके जाने के विध्वंसकारी परिणामों के रूप में इस विनाश की एक झलक का अनुभव देख चुके हैं।

अत: हे सऊदी अरब के सम्राट ! विश्व को सर्वनाश से सुरक्षित रखने के लिए अपनी समस्त शक्ति और प्रतिष्ठा का उपयोग कीजिए। सर्वशक्तिमान अल्लाह आपकी सहायता करे - आमीन। आपके लिए और समस्त उम्मते मुस्लिमा के लिए प्रार्थना सहित

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ

(हमें सीधी राह पर चला)

वस्सलाम

भवदीय
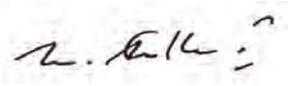
मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

प्रमुख विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

चीन के प्रधानमंत्री के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

महामहिम प्रधानमंत्री
स्टेट काउंसिल पीपुल्स रिपब्लिक आफ़ चायना
आदरणीय वैन जियाबाओ,
जोंगननहाई, चीन

9 अप्रैल 2012

प्यारे प्रधानमंत्री !

मैं आपको यह पत्र अहमदिया मुस्लिम जमाअत के एक प्रतिनिधि के द्वारा भेज रहा हूं। वह कबाबीर इस्राईल में हमारी जमाअत के अध्यक्ष हैं तथा उन्हें चीन के अल्पसंख्यक वर्ग के मंत्री ने आमंत्रित किया था। हमारे प्रतिनिधि को चीन के अधिकारियों के साथ उस समय परिचित कराया गया था जब चीन का प्रतिनिधि मंडल जिनमें अल्पसंख्यक वर्ग के उप मंत्री भी सम्मिलित थे, कबाबीर में हमारे मिशन हाउस में पधारे थे।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लाम का एक समुदाय है जो दृढ़तापूर्वक इस ईमान पर क़ायम है कि इस युग में जिस महदी और मसीह का मुसलमानों के मार्ग-दर्शन के लिए बतौर महदी और ईसाइयों के मार्ग-दर्शन के लिए बतौर मसीह तथा मानवता के सुधार के लिए एक पथ-प्रदर्शक के रूप में प्रकट होना निश्चित था वह मसीह और महदी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार प्रकट हो चुका है। अत: हमने उसे स्वीकार किया है। उनका नाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम था जो भारत की क़ादियान

नामक बस्ती में पैदा हुए थे। अल्लाह तआला के आदेश से उन्होंने 1889 ई. में जमाअत अहमदिया की नींव रखी। 1908 ई. में जब उन का निधन हुआ उस समय तक हज़ारों लोग जमाअत अहमदिया में सम्मिलित हो चुके थे। उनके निधन के पश्चात ख़िलाफ़त की व्यवस्था स्थापित हुई। इस समय हम पांचवीं ख़िलाफ़त के युग से गुज़र रहे हैं और मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पंचम ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) हूं।

हमारी शिक्षा का एक नितान्त महत्त्वपूर्ण और आधारभूत पक्ष यह है कि वर्तमान युग में धार्मिक युद्धों का अन्त होना चाहिए। इसके अतिरिक्त हमारा मानना है कि जो व्यक्ति भी किसी शिक्षा को दूसरों तक पहुंचाना या फैलाना चाहता है उसे ऐसा केवल प्रेम, सहानुभूति और भ्रातृत्व भावना के वातावरण में करना चाहिए ताकि वह शान्ति, एकता और मैत्री का माध्यम बन सके। इस महत्त्वपूर्ण पक्ष का जो कि सच्ची इस्लामी शिक्षा पर आधारित है सम्पूर्ण विश्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के द्वारा प्रचार किया जा रहा है। यह जमाअत अब विश्व के दो सौ से अधिक देशों में फैल चुकी है और इसके अनुयायियों की संख्या करोड़ों में है।

मैं आपको यह सन्देश देना चाहता हूं कि विश्व इस समय नितान्त विनाशकारी और भयानक परिस्थितियों से गुज़र रहा है। निश्चित रूप से यह प्रकट हो रहा है कि हम बड़ी तीव्रता से विश्व-युद्ध की ओर अग्रसर हैं। आप एक महाशक्तिशाली देश के शासक हैं। इसके अतिरिक्त विश्व की जनसंख्या का एक बड़ा भाग आप के मार्ग-दर्शन के अन्तर्गत जीवन यापन कर रहा है। आप को संयुक्त राष्ट्र संघ में यथावश्यक वीटो प्रयोग करने का अधिकार भी प्राप्त है। इस परिदृश्य में आप से मेरा निवेदन है कि विश्व को उस विनाश से बचाने के लिए अपना कर्त्तव्य निभाएं जो हमारे समक्ष मुंह खोले खड़ा है। राष्ट्रवाद, धर्म एवं जातिवाद से ऊपर उठ कर हमें मानवता की रक्षा के लिए भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

चीन में इस क्रान्ति के पश्चात् एक महान परिवर्तन हुआ। मान्यवर माउज़िदांग जो आपके देश के एक महान नेता थे उन्होंने उच्च नैतिक मूल्यों की नींव रखी

थी जिन्हें दूसरे शब्दों में सर्वोत्तम नैतिक मूल्यों की संज्ञा दी जा सकती है। यद्यपि कि आप ख़ुदा के अस्तित्व को नहीं मानते हैं और आपके सिद्धान्तों का आधार नैतिकता है तथापि मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि उस ख़ुदा ने जो इस्लाम द्वारा प्रस्तुत किया गया है, पवित्र क़ुर्आन को समस्त मानव जाति के पथ-प्रदर्शन के लिए उतारा है और पवित्र क़ुर्आन वे समस्त आचरणों की शिक्षा देता है जिन का आप पालन करते हैं अपितु उसमें इस से भी बढ़कर नैतिक निर्देश विद्यमान हैं। उसमें वह अपूर्व सुन्दर शिक्षाएं मौजूद हैं जो मनुष्य की आजीविका के साधनों को भी स्पष्टता के साथ वर्णन करती हैं और मानव मूल्यों को भी स्थापित करती हैं। यदि विश्व विशेष तौर पर मुस्लिम विश्व इन क़ुर्आनी शिक्षाओं को अपनाए तो समस्त समस्याओं और मतभेदों का समाधान हो जाएगा तथा शान्ति और एकता के वातावरण को प्रोत्साहन मिलेगा।

आज अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस उद्देश्य को विश्व के प्रत्येक भाग में बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है। शान्ति समारोह (Peace Symposium) के द्वारा और उन असंख्य सभाओं के माध्यम से जो मैं जीवन के प्रत्येक विभाग से संबंध रखने वाले लोगों और संगठनों के साथ करता हूं, मैं विश्व को यह मुख्य उद्देश्य स्मरण कराता हूं। मेरी यह दुआ है कि विश्व के नेता बुद्धिमत्ता से काम करते हुए छोटे स्तर पर होने वाली, जातियों और देशों की आपसी शत्रुता को विश्व युद्ध का रूप न लेने दें। मेरा आप से यह भी निवेदन है कि विश्व की एक महान शक्ति होने के नाते विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अपना कर्त्तव्य पूर्ण करें तथा विश्व को विश्व-युद्ध के भयानक परिणामों से बचाएं क्योंकि यदि ऐसा युद्ध हुआ तो यह एटमी हथियारों के प्रयोग पर समाप्त होगा। बहुत संभव है कि इस युद्ध के परिणामस्वरूप कुछ देशों और क्षेत्रों के कुछ भूभाग विश्व से पूर्णतया नष्ट कर दिए जाएं। एटमी युद्ध के प्रभाव और परिणाम केवल त्वरित और सामयिक विनाश के रूप में प्रकट नहीं होंगे अपितु उसके स्थायी दुष्प्रभाव भावी नस्लों के दोषपूर्ण और विकलांगतापूर्ण जन्म के रूप में प्रकट होंगे। अतः अपनी समस्त शक्ति, योग्यता

तथा संसाधनों द्वारा मानवता को उन भयंकर परिणामों से बचाएं। इन का पालन करने के फलस्वरूप अन्ततः आपके देश को भी लाभ होगा। मेरी यह दुआ है कि संसार के छोटे और बड़े देश इस सन्देश को समझें।

शुभकामनाओं और दुआओं के साथ
आपका शुभचिन्तक
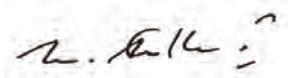
मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह पंचम
प्रमुख विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

युनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

इंग्लैण्ड और उत्तरी आयरलैण्ड के प्रधानमंत्री
आदरणीय डेविड केमरून,
10 डाउनिंग स्ट्रीट, लन्दन
एस. डब्ल्यू 1A 2AA यू.के

15 अप्रैल 2012

प्यारे प्रधानमंत्री जी,

जिन विनाशकारी और असुरक्षित परिस्थितियों से विश्व इस समय गुज़र रहा है उन्हें देखते हुए मैंने आवश्यक समझा कि आप की सेवा में पत्र लिखूं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री होने के नाते आपको ऐसे निर्णय लेने का अधिकार है जो भविष्य में आपके देश तथा विश्व पर प्रभावी हों। आज विश्व को शान्ति की नितान्त आवश्यकता है क्योंकि युद्ध की ज्वाला विश्व के चारों ओर देखी जा सकती है। देशों के मध्य निम्नस्तरीय युद्ध विश्वयुद्ध में परिवर्तित होने की आशंका है। हम देखते हैं कि इस समय विश्व की आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति वही है जो 1932 ई. में थी। इसके अतिरिक्त अन्य समानताएं भी हैं जिनको यदि सामूहिक रूप में देखा जाए तो वही चित्र प्रस्तुत करती हैं जो द्वितीय विश्व-युद्ध से ठीक पूर्व देखा गया था। यदि ये ज्वालाएं कभी वास्तविक तौर पर भड़क उठें तो हम तृतीय विश्व युद्ध का भयानक दृश्य देखेंगे। छोटे-बड़े असंख्य देशों के पास परमाणु हथियार होने के कारण ऐसा युद्ध निश्चय ही परमाणु युद्ध का रूप धारण कर लेगा। आज जो शस्त्र उपलब्ध हैं वे इतने विनाशकारी हैं कि इसके परिणामस्वरूप भावी पीढ़ियों के बच्चे वंशानुगत अथवा शारीरिक दोषों के साथ जन्म ले सकते हैं। जापान ही

एक देश है जिसे परमाणु युद्ध के दुष्परिणाम भुगतने पड़े हैं, जब उस पर द्वितीय विश्व-युद्ध के मध्य एटम बमों से आक्रमण किया गया था जिस के परिणामस्वरूप उसके दो शहर सम्पूर्णतया नष्ट हो गए थे। उस समय जिन परमाणु बमों का प्रयोग किया गया था जिनके कारण बहुत बड़े स्तर पर विनाश हुआ था वे इन परमाणु हथियारों से बहुत कम शक्ति के थे जैसे इस समय कुछ छोटे देशों के पास भी हैं। अत: शक्तिशाली देशों का यह दायित्व है कि वे संयुक्त रूप से विनाश के कगार पर खड़ी मानवता को बचाने का समाधान निकालें।

इन बातों पर विचार करके बहुत आशंका रहती है कि छोटे देशों के एटमी हथियार उन लोगों के हाथों में आ सकते हैं जो बिना सोचे समझे हथियारों का उपयोग करने पर उतारू होते हैं जिन के पास न तो योग्यता है और न ही वे अपनी गतिविधियों के परिणामों के संबंध में विचार करने का प्रयास करते हैं। यदि महाशक्तिशाली देश न्यायपूर्वक काम नहीं करते और छोटे देशों की निराशाओं का निवारण नहीं करते तथा महान और न्यायसंगत नीतियां नहीं बनाते तो परिस्थिति शनै: शनै: अनियंत्रित होती चली जाएंगी और इसके फलस्वरूप जो विनाश आएगा वह हमारे अनुमान और कल्पना से बाहर होगा, यहां तक कि विश्व की अधिकतर जनता जो शान्ति की अभिलाषी है उस विनाश की लपेट में आ जाएगी।

अत: यह मेरी हार्दिक इच्छा और दुआ है कि आप और शेष समस्त शक्तिशाली देशों के नेता इस भयंकर वास्तविकता को समझें और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आक्रामक नीतियों और शक्तियों को प्रयोग में लाने की बजाए आपको वे नीतियां अपनानी चाहिएं जो न्याय को बढ़ावा दें और उसकी रक्षा करें।

यदि हम निकट अतीत में झांक कर देखें तो हमें विदित होगा कि ब्रिटेन ने कई देशों पर शासन किया तथा न्याय और धार्मिक स्वतंत्रता के उच्च स्तर स्थापित किए विशेषकर भारत और पाकिस्तान उपमहाद्वीप में। जब अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रवर्तक ने आदर्णीय महारानी विक्टोरिया को उनकी हीरक जयन्ती पर बधाई दी तथा इस्लाम का सन्देश पहुंचाया तब उन्होंने विशेष तौर पर यह दुआ की

कि ख़ुदा ब्रिटेन की सरकार को उसकी न्याय और समानता पर आधारित शासन पद्धति पर भरपूर प्रतिफल प्रदान करे। उन्होंने सरकार की न्यायसंगत नीतियों एवं धार्मिक स्वतंत्रता देने पर उसकी नितान्त प्रशंसा की। वर्तमान समय में ब्रिटेन की सरकार अब भारत और पाकिस्तान में शासन नहीं करती परन्तु धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धान्त अब भी ब्रिटेन के समाज और उसके कानून में दृढ़ता के साथ स्थापित हैं, जिनके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता और समानता के अधिकार दिए जाते हैं। इस वर्ष आदरणीय महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय की हीरक जयन्ती मनाई जा रही है जो बर्तानिया को यह अवसर प्रदान कर रही है कि वह विश्व के सम्मुख अपने न्याय और ईमानदारी के स्तर को प्रदर्शित करें। अहमदिया मुस्लिम जमाअत का इतिहास यह प्रकट करता है कि ब्रिटेन ने जब भी न्याय का प्रदर्शन किया है हमने उसकी सराहना की है और आशान्वित हैं कि भविष्य में भी न्याय ब्रिटेन की सरकार का यह विशेष गुण स्थापित रहेगा, न केवल धार्मिक मामलों में अपितु प्रत्येक मामले में और यह कि आप अपने देश की उत्तम विशेषताओं और परम्पराओं को कभी नहीं भूलेंगे तथा विश्व की वर्तमान परिस्थिति में ब्रिटेन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति-स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभाएगा।

मेरा यह निवेदन है कि प्रत्येक स्तर पर और दृष्टिकोण से हमें अनिवार्य रूप से प्रयास करना होगा ताकि नफ़रत की ज्वाला को शान्त किया जा सके। इस प्रयास की सफलता के पश्चात् ही हम भावी पीढ़ियों के उज्जवल भविष्य का आश्वासन दे सकते हैं परन्तु यदि हम इस कार्य में सफल न हुए तो हमारे मन में इस संबंध में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमाणु युद्ध के फलस्वरूप भावी पीढ़ियों को हर जगह हमारे कर्मों के भयानक परिणाम को भुगतना पड़ेगा और वे अपने पूर्वजों को पूरे विश्व को विनाश की ज्वाला में झोंकने के कारण कभी क्षमा नहीं करेंगी। मैं आपको पुन: स्मरण कराता हूं कि ब्रिटेन भी उन देशों में से है जो विकसित और विकासशील देशों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं और डालते हैं। यदि आप चाहें तो आप न्याय और इन्साफ़ की मांगों को पूरा करते हुए विश्व का पथ-प्रदर्शन कर

सकते हैं। अत: ब्रिटेन तथा अन्य शक्तिशाली देशों को विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। अल्लाह तआला आपको और विश्व के अन्य नेताओं को यह सन्देश समझने की सामर्थ्य प्रदान करे।

शुभकामनाओं और दुआओं के साथ
आपका शुभ चिन्तक
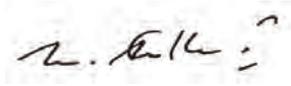
मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह पंचम
प्रमुख विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

जर्मनी की चान्सलर के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

महामहिम

चांसलर आफ़ जर्मनी

एंजेला मरकेल

Bundeskanzleramt

Willy-Brandt-Str.1

10557 Berlin

15 अप्रैल 2012

आदरणीया चान्सलर !

विश्व को सतर्क करने वाली और अत्यधिक चिन्तित करने वाली वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए मैंने आप को पत्र लिखना आवश्यक समझा। विश्व में जर्मनी जैसे नितान्त महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली देश की चांसलर होने के नाते आपको ऐसे निर्णय लेने का अधिकार है जो आपके देश और समस्त विश्व पर प्रभावी हों। आज जबकि विश्व वर्गों में विभाजित हो रहा है, उग्रवाद तीव्रता धारण करता जा रहा है तथा राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियां बहुत ख़राब होती जा रही हैं तो इन कथित परिस्थितियों में इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि हर प्रकार की नफ़रत और घृणा को समाप्त किया जाए और शान्ति की नींव रखी जाए। इस उद्देश्य को केवल इस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति की भावनाओं का आदर किया जाए, परन्तु चूंकि उसे उचित रूप से पूर्ण ईमानदारी और नेकी के साथ कार्यान्वित नहीं किया जा रहा, इसलिए विश्व की परिस्थितियां बड़ी तीव्रता से अनियंत्रित होती जा रही हैं। हम देखते हैं कि बहुत से देशों के द्वारा

न्याय की मांगें पूरी नहीं की जा रही हैं जिसके कारण एक विश्व-युद्ध की नींव पहले ही रखी जा चुकी है। अधिकांश छोटे-बड़े देशों के पास अब एटमी शस्त्र हैं। अतः अब यदि विश्व-युद्ध होता है तो बहुत संभव है कि यह युद्ध परम्परागत शस्त्रों द्वारा नहीं होगा अपितु यह एटमी शस्त्रों से होगा। इस युद्ध के परिणामस्वरूप होने वाली बरबादी पूर्ण रूप से सर्वनाश करने वाली होगी। इसके प्रभाव केवल उसी समय तक सीमित नहीं रहेंगे, अपितु भावी नस्लें एक लम्बे समय तक इस से प्रभावित होती रहेंगी तथा वे नस्लें चिकित्सा सम्बन्धी एवं अनुवांशिक तौर पर भयानक दोषों के साथ पैदा होंगी।

अतः मेरा यह विचार है कि विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए सच्चे न्याय की आवश्यकता है और समस्त लोगों की भावनाओं एवं धार्मिक रीति-रिवाजों का सम्मान किया जाना चाहिए। मैं कुछ पश्चिमी देशों की इस बात का सम्मान करता हूं कि उन्होंने नितान्त उदारता के साथ निर्धन और विकासशील देशों के लोगों को अपने देशों में रहने की अनुमति दी हुई है जिनमें मुसलमान भी सम्मिलित हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नाम के मुसलमानों का एक अल्पसंख्यक वर्ग है जो पूर्ण रूप से अनुचित कार्यों में व्यस्त है तथा पश्चिमी देशों के लोगों के हृदयों में अविश्वास की भावना को जन्म देते हैं, परन्तु उनकी ऐसी समस्त गतिविधियों का इस्लाम से कोई संबंध नहीं है। ऐसे चरमपंथी हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन्होंने विश्व को शान्ति, प्रेम और एकता का सन्देश दिया है, से सच्चा प्रेम नहीं करते। निश्चय ही कुछ मुट्ठी भर गुमराह लोगों की गतिविधियों को हमारे धर्म के विरुद्ध आरोप लगाने और बहुत बड़ी संख्या में मौजूद निष्कपट और निर्दोष मुसलमानों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए आधार नहीं बनाना चाहिए। समाज में शान्ति स्थापित करना द्विपक्षीय प्रक्रिया है और यह तब ही स्थापित की जा सकती है जब समस्त पार्टियां एक साथ मिलकर परस्पर समझौते के लिए कार्य करें। विकासशील देशों और लोगों के साथ संबंध स्थापित करने की बजाए पश्चिमी विश्व के लोगों के हृदयों में अविश्वास के कारण कुछ ग़ैर मुस्लिम लोगों की

प्रतिक्रिया आज बहुत अधिक खराब होती जा रही है तथा मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम जगत के बीच एक दरार पैदा कर रही है।

हम देखते हैं कि कुछ मुस्लिम संगठनों और देशों की गुमराह गतिविधियों के आधार पर कुछ शक्तिशाली देशों के विशेष हितों को ईमानदारी और न्याय पर प्रमुखता दी जा रही है। विश्व के कुछ शक्तिशाली देश चाहते हैं कि कुछ देशों के भण्डार एवं संसाधनों तक पहुंच पैदा कर लें तथा प्रतिस्पर्धा करने वाले देशों का उन संसाधनों तक पहुंचना बिल्कुल असम्भव बना दें। इसलिए अधिकांश निर्णय लोगों की सहायता करने या विश्व-शान्ति की स्थापना के नाम पर किए जाते हैं तथा विश्व की वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों के पीछे एक बड़ा कारण आर्थिक गिरावट है जो हमें एक और विश्व-युद्ध की ओर ले जा रही है। यदि सच्चाई का उचित रूप से प्रदर्शन किया जाता तो उनमें से कुछ देश, परस्पर न्याय पर आधारित औद्योगिक एवं आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करके एक-दूसरे से न्याय के साथ लाभ प्राप्त कर सकते थे। इस प्रकार वे एक दूसरे के संसाधनों से अनुचित लाभ प्राप्त न करते अपितु उसके स्थान पर वे एक दूसरे के निकट आकर परस्पर एक दूसरे की सहायता करते। अत: विश्व की वर्तमान अव्यवस्था का कारण एक प्रमुख तत्त्व न्याय का पूर्ण रूप से अभाव है जिस के कारण चारों ओर अशान्ति और बेचैनी की हालत है।

अत: मेरा यह निवेदन है कि इस विश्व-युद्ध से लोगों को बचाने के लिए पहले से भरपूर प्रयास करें। अपनी शक्ति, संसाधनों और प्रभाव को प्रयोग करते हुए विश्व को इस भयंकर विनाश से बचाएं जो प्रकट होने के कगार पर है। सूचनाओं के अनुसार जर्मनी परमाणु शस्त्रों से लदी हुई तीन अति आधुनिक पनडुब्बियां इस्राईल को देने जा रहा है। जर्मनी के एक प्रोफेसर के विचार में ऐसा निर्णय इस्राईल और ईरान के मध्य पहले से चल रही तनावपूर्ण स्थिति को और अधिक भड़काने में सहायक सिद्ध होगा। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि वर्तमान समय में परमाणु शस्त्र केवल विश्व की महाशक्तियों के पास ही नहीं हैं अपितु तुलनात्मक दृष्टि से

छोटे देशों ने भी इसको प्राप्त कर लिया है। चिन्ताजनक विषय यह है कि इन छोटे देशों में से कुछ के नेता शस्त्रों के असावधानीपूर्ण प्रयोग पर आतुर हैं और वे इन शस्त्रों के उपयोग के विनाशकारी परिणामों के प्रति सर्वथा उदासीन हैं। अतः आपसे पुनः निवेदन है कि विश्व शान्ति स्थापित करने का भरसक प्रयास करें। यदि हम इस कार्य में विफल हो गए तो हमारे मन में फिर कोई शंका नहीं रहनी चाहिए कि परमाणु युद्ध के कारण ऐसा विनाश होगा जिसके दुष्प्रभाव भावी पीढ़ियों के विकलांग रूप में जन्म लेने के रूप में प्रकट होंगे और वे अपने पूर्वजों को इस बात के लिए कभी क्षमा नहीं करेंगे कि उनके कारण उन्हें इस महाप्रलय का मुंह देखना पड़ा है। सर्वशक्तिमान परमात्मा आपको और विश्व के सभी नेताओं को इस संदेश को समझने की सामर्थ्य प्रदान करे।

शुभकामनाओं तथा प्रार्थनाओं सहित,

मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह पंचम
प्रमुख, विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

फ्रांस गणराज्य के राष्ट्रपति के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

राष्ट्रपति फ्रांस गणराज्य
महामहिम Francois Hollande
Palais de l'Elysee
55, Rue du Faubourg Saint-Honore
75008 Paris, France

16 मई 2012

प्रिय राष्ट्रपति जी,

सर्वप्रथम मैं इस अवसर का लाभ उठाते हुए आपको फ्रांस के नए राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित होने पर बधाई देना चाहता हूं। वास्तव में यह एक महान उत्तरदायित्व है जो आप को सौंपा गया है और मैं आशा करता हूं कि फ्रांस की जनता ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व आपके नेतृत्व से लाभान्वित होगा। विश्व की बिगड़ती हुई वर्तमान परिस्थितियों को सम्मुख रखते हुए मैंने आपके पूर्व राष्ट्रपति निकोलस सरकोज़ी को एक पत्र भेजा था। उस पत्र में मैंने राष्ट्रपति सरकोज़ी को एक विश्व स्तर के नेता होने के रूप में उनके कर्त्तव्यों की ओर ध्यानाकर्षण कराते हुए यह अनुरोध किया था कि आप अपनी सम्पूर्ण शक्ति और प्रतिष्ठा का उपयोग करते हुए विश्व युद्ध की संभावना को रोकने का प्रयास करें। फ्रांस के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति होने के नाते मैंने आपको भी इसी संदेश पर आधारित पत्र लिखना आवश्यक समझा क्योंकि अब आपके पास ऐसे निर्णय लेने का अधिकार है जिन

से आपके देश और सामान्य रूप से पूरे विश्व का भविष्य प्रभावित हो सकता है। मेरा यह मत है कि विश्व की वर्तमान परिस्थितियों के प्रति सभी देशों की सरकारों को अति चिन्तित होना चाहिए। विभिन्न देशों के मध्य अन्याय और शत्रुता की भावनाओं के कारण एक विश्व युद्ध का रूप धारण करने की प्रबल आशंका है। गत शताब्दी में दो विश्व युद्ध हुए। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई, परन्तु न्याय की मांगों को पूर्ण न किए जाने के फलस्वरूप इसने द्वितीय विश्व युद्ध को जन्म दिया जो परमाणु बमों के प्रयोग के साथ समाप्त हुआ। तत्पश्चात् मानवाधिकारों की सुरक्षा और विश्व शान्ति स्थापित करने हेतु संयुक्त राष्ट्र का गठन किया गया। अत: इस प्रकार युद्धों को टालने का समाधान तो निकाला गया परन्तु आज हम देखते हैं कि तृतीय विश्व युद्ध की नींव पहले ही रखी जा चुकी है। विभिन्न छोटे तथा बड़े देशों के पास परमाणु शस्त्र मौजूद हैं। चिन्ता का विषय यह है कि परमाणु शक्ति वाले कुछ छोटे देश ऐसे शस्त्रों के विनाशकारी परिणामों से अनभिज्ञ हैं और उनके प्रति उदासीन हैं। यह बात कल्पनातीत नहीं कि यदि परमाणु शस्त्रों का प्रयोग किया गया तो इसके भयंकर परिणाम तुरन्त प्रकट होंगे और वह दिन प्रलय के समान होगा। आज जो शस्त्र उपलब्ध हैं वे इतने विनाशकारी हैं कि उनके कारण भविष्य में कई पीढ़ियों तक गम्भीर आनुवंशिक तथा शारीरिक दोष वाले शिशु जन्म लेंगे। कहा जाता है कि एक मात्र देश जापान जिसने परमाणु युद्ध के भीषण परिणाम भुगते हैं, सात दशक बीत जाने के पश्चात आज भी वहां नवजात शिशुओं में परमाणु बमों के दुष्प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं।

अत: आपसे मेरा विनम्र अनुरोध है कि मुस्लिम तथा ग़ैर मुस्लिम देशों के मध्य शत्रुता एवं अविश्वास की भावना को शान्त करने का यथासम्भव प्रयास करें। कुछ यूरोपीय देश इस्लाम की शिक्षाओं और परम्पराओं के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष संशय रखते हैं और उन्होंने उन पर कुछ प्रतिबंध लगाए है जबकि कुछ अन्य देश ऐसी कार्यवाही करने का विचार कर रहे हैं। कुछ तथाकथित उग्र स्वभाव के लोग जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं उनकी पश्चिमी देशों के प्रति घृणा, उनकी ओर से

अनुचित प्रतिक्रिया का कारण बन सकती है जिसके फलस्वरूप धार्मिक असहिष्णुता और मतभेदों में और अधिक वृद्धि होगी। परन्तु इस्लाम एक शान्ति-प्रिय धर्म है जो हमें किसी अनुचित कार्य को अनुचित ढंग से रोकने की शिक्षा नहीं देता। हम अर्थात् अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लोग इस सिद्धान्त का पालन करते हैं और प्रत्येक समस्या का शान्तिपूर्ण समाधान ढूंढने में विश्वास करते हैं।

यह देख कर खेद होता है कि मुसलमानों का एक अल्प वर्ग इस्लाम का सर्वथा विकृत रूप प्रस्तुत करता है और अपने भ्रमित विश्वासों का पालन करता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि सम्पूर्ण मानवता के लिए दया का स्वरूप हैं, के प्रति अपने प्रेम के कारण मैं यह कहता हूं कि आप ऐसे लोगों की बातों को वास्तविक इस्लाम न समझें और उन का अधिकार-पत्र के रूप में प्रयोग करके बहुसंख्यक शान्तिप्रिय मुसलमानों की भावनाओं को ठेस न पहुंचाएं। कुछ ही दिन पूर्व एक निर्दयी और कठोर प्रकृति व्यक्ति ने दक्षिणी फ्रांस के क्षेत्र में कुछ फ्रांसीसी सैनिकों की अकारण गोली मारकर हत्या कर दी और उसके कुछ दिन पश्चात उस व्यक्ति ने एक स्कूल में प्रवेश कर तीन निर्दोष यहूदी बच्चों और उनके एक शिक्षक की हत्या कर दी। इसी प्रकार की और भी निर्मम घटनाएं हम अन्य मुस्लिम देशों में नियमित रूप से घटित होती देखते हैं और यह सभी घटनाएं इस्लाम के विरोधियों को अपनी घृणा के प्रदर्शन के लिए उत्तेजित करती हैं जिनके आधार पर वे अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यापक स्तर पर कार्यवाही करते हैं। एक मुसलमान होने के नाते मैं पूर्णतः स्पष्ट करना चाहता हूं कि इस्लाम किसी भी अत्याचार और किसी अन्याय की अनुमति नहीं देता। पवित्र क़ुर्आन ने एक निर्दोष व्यक्ति की अकारण हत्या को सम्पूर्ण मानवजाति की हत्या के समान ठहराया है। यह अपवाद रहित स्पष्ट निर्देश है। पवित्र क़ुर्आन यह भी कहता है कि यद्यपि कोई जाति या राष्ट्र तुम से वैमनस्य रखता हो तो फिर भी यह बात तुम्हें उनके साथ निष्पक्ष और न्यायपूर्ण व्यवहार करने से न रोके।

शत्रुता या प्रतिद्वन्द्विता तुम्हें प्रतिशोध लेने अथवा अत्याचार पूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित न करे। यदि आप विवादों का उत्तम समाधान करना चाहते हैं तो शान्तिपूर्ण हल ढूंढने का प्रयास करें।

मैं इस बात की प्रशंसा करता हूं कि बहुत से पश्चिमी देशों ने निर्धन तथा अविकसित देशों की जनता को जिनमें मुसलमान भी सम्मिलित हैं अत्यन्त उदारतापूर्वक अपने देश में बसने की अनुमति दी है। निस्संदेह बहुत से मुसलमान आपके देश में रहते हैं और वे आपके नागरिक भी हैं। उनमें से अधिकतर कानून का पालन करने वाले और निष्कपट लोग हैं। इसके अतिरिक्त यह कि इस्लाम की स्पष्ट शिक्षा है कि अपने देश से प्रेम करना हमारे ईमान का अंश है। आपके लिए भी मेरा यही संदेश है कि यदि इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का हर जगह प्रसार किया जाए तो इसके फलस्वरूप राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश-प्रेम की भावनाओं और शान्ति की स्थापना सम्भव होगी।

आपसे और वास्तव में विश्व के सभी महान नेताओं से मेरा यह विनम्र अनुरोध है कि दूसरे देशों का दमन करने हेतु शक्ति के प्रयोग के स्थान पर कूटनीति, वार्तालाप तथा सद्बुद्धि से काम लेना चाहिए। विश्व की महाशक्तियों, जैसे कि फ्रांस को शान्ति स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। उन्हें छोटे देशों की गतिविधियों को विश्व-शान्ति भंग करने का आधार नहीं बनाना चाहिए। अतः मैं पुनः आपको स्मरण कराता हूं कि विश्व की छोटी और बड़ी शक्तियों को तृतीय विश्व युद्ध की विस्फोटक स्थिति उत्पन्न करने से रोकने के लिए यथासम्भव प्रयास करें। इस सम्बन्ध में हमारे मन में कोई शंका नहीं रहनी चाहिए यदि हम इस कार्य में विफल हो गए तो ऐसे युद्ध के प्रभाव एवं परिणाम केवल एशिया, यूरोप तथा उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के निर्धन देशों तक ही सीमित नहीं रहेंगे अपितु हमारी भावी पीढ़ियां भी हमारे कार्यों के भीषण परिणामों से प्रभावित होंगी और पूरे विश्व में विकलांग और शारीरिक दोष वाले बच्चे जन्म लेंगे। मैं प्रार्थना करता हूं कि विश्व

के नेता सद्बुद्धि से काम लें और विभिन्न देशों और लोगों के मध्य निम्न स्तर पर चल रही शत्रुता को विश्व युद्ध का रूप धारण करने से रोकें। महाप्रतापी परमात्मा आपको और विश्व के अन्य सभी महान नेताओं को यह सन्देश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

शुभ कामनाओं एवं प्रार्थनाओं सहित

भवदीय
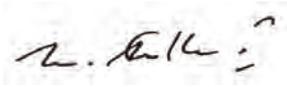
मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

प्रमुख, विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत

युनाइटेड किंगडम तथा राष्ट्र-मण्डल देशों की महारानी के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

Her Majesty, Queen Elizabeth II
Queen of the United Kingdom and Commonwealth Realms
Buckingham Palace
London SW1A 1AA
United Kingdom

19 अप्रैल, 2012

आदरणीया महारानी जी,

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख के रूप में और पूरे विश्व के अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लाखों सदस्यों की ओर से मैं हीरक जयन्ती के इस आनन्दपूर्ण अवसर पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं। हम विशेष रूप से सर्वशक्तिमान परमात्मा के कृतज्ञ हैं कि उसने हमें इस भव्य समारोह में भाग लेने का सुअवसर प्रदान किया। विशेष रूप से सभी अहमदी मुसलमान जो यू.के. के नागरिक हैं, हीरक जयन्ती के इस अवसर पर अत्यन्त हर्ष एवं गर्व अनुभव कर रहे हैं। अतः मैं उन सब की ओर से महारानी को हार्दिक बधाई प्रस्तुत करता हूं।

मैं उस परमेश्वर को जो सर्वश्रेष्ठ है और जिसने धरती और आकाश का सृजन करके उसको हमारे जीवन के लिए असंख्य ने'मतों से परिपूर्ण किया है, से याचना करता हूं कि वह हमारी महारानी को जिसका दयापूर्ण राज्य बहुत से स्वतंत्र राष्ट्र और राष्ट्र-मण्डल के सदस्य देशों पर व्याप्त है, सदैव शान्ति और सुरक्षा प्रदान करे। जिस प्रकार महारानी से वृद्ध एवं युवक अर्थात् समस्त प्रजा प्रेम करती है और उनका आदर करती है हमारी दुआ है कि परमात्मा के फ़रिश्ते भी उसी प्रकार महारानी से प्रेम करें। जिस प्रकार महारानी को परमात्मा ने प्रचुर मात्रा में सांसारिक ने'मतें प्रदान की हैं, हमारी कामना है कि परमात्मा उसी प्रकार महारानी को असंख्य आध्यात्मिक

वदान्यताओं एवं ने'मतों से भी परिपूर्ण कर दे। परमात्मा करे इन ने'मतों के फलस्वरूप इस महान राष्ट्र के सभी नागरिक अपने सर्वशक्तिमान परमात्मा को पहचानने में सक्षम हो जाएं और परस्पर प्रेम एवं सहानुभूति की भावना से जीवनयापन करने लगें। परमात्मा करे यू.के. के सभी नागरिक, धर्म, रंग, नस्ल, राष्ट्रीयता अथवा धर्म के भेदभाव से ऊपर उठ कर एक दूसरे के प्रति इस सीमा तक आदर एवं सम्मान की भावना का प्रदर्शन करने लगें कि इस व्यवहार का सकारात्मक प्रभाव इस देश की सीमाओं को पार करके विश्व के अन्य देशों के लोगों में व्याप्त हो जाए। परमात्मा करे कि यह संसार जिसका अधिकांश भाग आज युद्धों, विवादों तथा शत्रुताओं में संलिप्त है शान्ति, प्रेम, भ्रातृत्व और मित्रता का केन्द्र बन जाए। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस महत्त्वपूर्ण एवं सर्वोत्तम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए महारानी के दृष्टिकोण और प्रयास एक प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

गत शताब्दी में दो विश्व-युद्ध लड़े गए जिनमें लाखों प्राण नष्ट हुए। यदि आज विभिन्न देशों के मध्य विवादों में वृद्धि होती गई तो अन्ततः इस का परिणाम तृतीय विश्व-युद्ध के रूप में प्रकट होगा। विश्व-युद्ध में परमाणु शस्त्रों के प्रयोग की प्रबल संभावना का अर्थ है विश्व एक अत्यन्त भयानक और कल्पनातीत विनाश के दर्शन करेगा। हमारी प्रार्थना है कि परमात्मा ऐसी भयानक विपत्ति को घटित न होने दे और संसार के सभी लोगों को सद्‌बुद्धि और सुमति प्रदान करे। महारानी से मेरा विनम्र निवेदन है कि आप हीरक जयन्ती के इस आनन्दपूर्ण अवसर को मानवजाति की भलाई के लिए प्रयोग में लाते हुए सभी देशों चाहे वे बड़े हों या छोटे की जनता को यह स्मरण कराएं कि वे परस्पर प्रेम, शान्ति तथा एकता की भावना से जीवन व्यतीत करें।

इस सम्बन्ध में हीरक जयन्ती के इस पावन अवसर पर आपसे मेरा एक विनम्र निवेदन है कि आप विश्व को यह संदेश दें कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों तथा उनको भी जो परमात्मा में विश्वास नहीं करते सदैव अन्य धर्म के लोगों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। इस्लाम के सम्बन्ध में आज विश्व में गलत

धारणाएं प्रचलित हैं। इस के फलस्वरूप एक ओर शान्तिप्रिय मुसलमानों की भावनाएं आहत होती हैं तो दूसरी ओर ग़ैर मुस्लिमों के हृदय में इस्लाम के प्रति अविश्वास और घृणा की भावना उत्पन्न होती है। अतः यदि आप सभी लोगों को यह उपदेश दें कि प्रत्येक व्यक्ति सभी धर्मों और उनके अनुयायियों का आदर और सम्मान करे तो सभी धर्मों के मानने वालों अपितु समस्त विश्व पर यह आपकी दया और महान उपकार होगा। महाप्रतापी परमात्मा इस उद्देश्य की पूर्ति में हमारी महारानी की सहायता एवं समर्थन करे।

जैसा कि इस पत्र के आरम्भ में मैंने लिखा था कि मैं विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत का प्रमुख हूं। इस सम्बन्ध में मैं अपनी जमाअत का एक अति संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना चाहता हूं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत का यह दृढ़ विश्वास है कि वह मसीह मौऊद और सुधारक जिसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा उनसे पूर्व अवतारों की भविष्यवाणियों के अनुरूप इस युग में आविर्भाव निश्चित था, वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं। सन् 1889 ई. में आपने एक पवित्र और सदाचारी समुदाय की नींव रखी जिसका नाम अहमदिया मुस्लिम जमाअत है। इस जमाअत की स्थापना से आपका उद्देश्य परमात्मा और मनुष्य में सम्बन्ध स्थापित करना और लोगों का एक दूसरे के अधिकारों को पूर्ण करने की ओर ध्यानाकर्षित करना था जिसके फलस्वरूप सभी लोग परस्पर सम्मान और शुभेच्छा की भावना के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। जब 1908 ई. में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम का देहान्त हुआ तो उस समय आपके लगभग 400000 अनुयायी थे। आपके स्वर्गवास के पश्चात् परमात्मा की इच्छा अनुसार ख़िलाफ़त की व्यवस्था की स्थापना हुई और इस समय परमात्मा का यह विनीत सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पांचवां ख़लीफ़ा है। अतः अहमदिया मुस्लिम जमाअत पूरे विश्व में अपने संस्थापक के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है। हमारा संदेश प्रेम, सुलह, और भ्रातृत्व पर आधारित है और हमारा आदर्श वाक्य है - प्रेम सब के लिए,

घृणा किसी से नहीं जो वास्तव में इस्लाम की अनुपम शिक्षाओं का सार है।

यहां यह वर्णन करना उचित होगा कि यह शुभ संयोग है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक के जीवनकाल में महारानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती मनाई गई थी। उस समय अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक ने तोहफ़ा कैसरिया (महारानी के लिए एक भेंट) नामक एक पुस्तक की रचना की जिसमें आपने महारानी विक्टोरिया के लिए बधाई का संदेश लिखा था। अपने संदेश में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम ने महारानी को हीरक जयन्ती के अवसर पर बधाई दी और साथ ही इस बात की भी बधाई दी कि महारानी के शासन में सभी लोगों, जिनमें भारतीय उपमहाद्वीप के लोग भी शामिल हैं, को न्याय एवं धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की गई है और वे सभी शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आपने इस्लाम की सुन्दर शिक्षाओं को प्रस्तुत करते हुए अपने आगमन और दावे का व्याख्यात्मक वर्णन किया।

यद्यपि ब्रिटेन की सरकार ने भारतीय उपमहाद्वीप को स्वतन्त्रता प्रदान कर दी है, अपितु वास्तव में ब्रिटेन की सरकार का विभिन्न जाति तथा धर्मों के लोगों को अपने देश में निवास करने की अनुमति देना और उन्हें समान अधिकार, धार्मिक स्वतन्त्रता, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रदान करना ब्रिटेन की उच्चतम स्तर की सहनशीलता का विशाल प्रमाण है। आज सहस्त्रों अहमदी मुसलमान ब्रिटेन में रहते हैं उनमें से अधिकतर ऐसे हैं जिन्होंने अत्याचार के कारण अपने देश से हिजरत (प्रवास) करके यहां शरण ली है। महारानी के दयापूर्ण शासन में वे शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिसमें उन्हें न्याय और धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। इस उदारता के लिए मैं पुनः आदरणीया महारानी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

मैं यह पत्र महारानी के लिए एक प्रार्थना के साथ समाप्त करता हूं। वास्तव में यह वही प्रार्थना है जो अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक ने आदरणीय महारानी विक्टोरिया के लिए की थी।

"हे सर्वशक्तिमान तथा सर्वश्रेष्ठ परमात्मा ! अपनी कृपा एवं दया से हमारी आदरणीया महारानी को सदैव प्रसन्न रखना ठीक उसी प्रकार जैसे कि हम उनके दयापूर्ण शासन में प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हे सर्वशक्तिमान परमात्मा ! उनसे दया एवं स्नेहपूर्वक व्यवहार करना जैसे कि हम उनके दयापूर्ण शासन में शान्ति एवं समृद्धिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।"

मेरी यह भी प्रार्थना है कि महाप्रतापी परमात्मा हमारी आदरणीया महारानी का मार्गदर्शन करे। सर्वशक्तिमान परमात्मा आदरणीय महारानी की सन्तान का भी ऐसा मार्गदर्शन करे कि वे सच्चाई पर स्थापित हो कर अन्य लोगों को भी इस मार्ग पर चलने का उपदेश दें। परमात्मा करे न्याय और स्वतन्त्रता के गुण ब्रिटिश साम्राज्य के मार्गदर्शक सिद्धान्त बने रहें। मैं पुनः आदरणीया महारानी की सेवा में इस आनन्दपूर्ण अवसर पर हार्दिक बधाई प्रस्तुत करता हूं। हमारी आदरणीया महारानी की सेवा में मेरी ओर से हार्दिक एवं सच्ची बधाई प्रस्तुत है।

शुभ कामनाओं तथा प्रार्थनाओं सहित

भवदीय
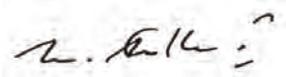
मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

प्रमुख अहमदिया मुस्लिम जमाअत

इस्लामी गणराज्य ईरान के सर्वप्रमुख नेता के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

इस्लामी गणराज्य ईरान के सर्वप्रमुख नेता
आयतुल्लाह सैयद अली हुसैनी ख़ुमैनी
तेहरान, ईरान

14 मई 2012

आदरणीय आयतुल्लाह,

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपको ईरान में इस्लाम की सेवा का अवसर प्रदान किया है तथा इस समय ईरान की सरकार आपके संरक्षण में कार्यरत है। अत: आवश्यक है कि हम संसार तक इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का संदेश पहुंचाने का भरसक प्रयत्न करें। मुसलमान होने के नाते हमें संसार को शान्ति, प्रेम और एकता से रहने की शिक्षा देनी चाहिए। विशेष रूप से मुस्लिम नेताओं को इस ओर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य हेतु मेरा आप से अनुरोध है कि आप अपनी सरकार का विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए उसके कर्त्तव्य की ओर ध्यानाकर्षण कराएं। यदि ईरान पर आक्रमण होता है तो उसे अपने देश की रक्षा करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है, परन्तु उसे आक्रमण करने अथवा किसी विवाद में पड़ने की पहल नहीं करनी चाहिए, वरन् धार्मिक मतभेदों को एक ओर रखकर नैतिक मूल्यों के आधार पर एकता बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस्लाम के इतिहास से हमें ज्ञात होता है कि यही मार्ग अपनाया गया था।

मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिसके इस युग में आगमन की भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी, पर ईमान लाने

वाले, उनके उत्तराधिकारी और ख़लीफ़ा होने के नाते आपको यह पत्र लिख रहा हूं। अल्लाह की कृपा से यह जमाअत अब विश्व के 200 देशों में स्थापित हो चुकी है और विश्व भर में इसके लाखों श्रद्धावान अनुयायी हैं।

हमारी यह प्रबल इच्छा है कि हम परस्पर प्रेम और शान्ति से रहने के लिए विश्व का मार्गदर्शन करें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मैं जीवन के विभिन्न वर्ग के लोगों का निरन्तर ध्यानाकर्षण कराता रहता हूं। अतः मैंने इन्हीं दिनों में इस्राईल के प्रधानमंत्री, संयुक्त राज्य अमेरिका और कई अन्य विश्व स्तर के नेताओं को पत्र लिखें हैं। मैंने पोप बैनिडिक्ट XVI को भी इस सम्बन्ध में पत्र लिखा है।

एक विशाल इस्लामी देश के आध्यात्मिक नेता के रूप में मुझे आशा है कि आप इस बात से सहमत होंगे कि यदि समस्त मुस्लिम समुदाय एकजुट हो कर कार्य करें तो विश्व-शान्ति स्थापित हो सकती है। हमें शत्रुता और वैमनस्य को अकारण बढ़ाना नहीं चाहिए अपितु हमें शान्ति स्थापित करने के अवसर ढूंढने चाहिएं। इसके अतिरिक्त यह कि दूसरों के साथ शत्रुता या विरोध की भावना भी अन्यायपूर्ण नहीं होनी चाहिए। पवित्र क़ुर्आन ने हमें यही शिक्षा दी है :-

अनुवाद - हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में साक्षी बन जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात की ओर प्रेरित न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़्वा (संयम) के सबसे अधिक निकट है और अल्लाह से डरो। जो तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है। (सूरह अलमाइदह : 9)

अल्लाह तआला समस्त मुस्लिम समुदाय और सभी मुस्लिम राज्यों को मेरा संदेश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे और वे विश्व में शान्ति स्थापित करने हेतु अपनी-अपनी भूमिका निभाने के लिए तत्पर हो जाएं।

समस्त मुस्लिम समुदाय के प्रति प्रेम के फलस्वरूप उत्पन्न मानवजाति से प्रेम की भावना ने और इस बात ने कि मैं उसकी उम्मत का सदस्य हूं जो समस्त मानवजाति के लिए साक्षात् दया है, मुझे आपको यह पत्र लिखने के लिए प्रेरित

किया है। अल्लाह तआला विश्व के सभी नेताओं को मेरा संदेश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे और वे विश्व-शान्ति की स्थापना में सक्रिय भूमिका निभाने वाले हों। अन्यथा, यदि किसी एक देश का असावधानीपूर्ण तथा विवेकरहित कार्य दो देशों के मध्य पूर्ण युद्ध का कारण बनता है तो वह विवाद केवल उन दो सम्बन्धित देशों तक सीमित नहीं रहेगा अपितु युद्ध की ज्वाला समस्त विश्व को अपनी चपेट में ले लेगी। अतः इसके फलस्वरूप विश्व-युद्ध छिड़ जाने की पूर्ण सम्भावना है जो परम्परागत शस्त्रों से नहीं बल्कि परमाणु शस्त्रों से लड़ा जाएगा।

परमाणु युद्ध के ऐसे भीषण और भयंकर परिणाम निकलेंगे कि जिन से न केवल समकालीन जनता अपितु इसके दूरगामी परिणामों से भावी पीढ़ियां भी प्रभावित होंगी और यह युद्ध उन भावी पीढ़ियों के लिए जो विकलांगता और शारीरिक दोषों के साथ जन्म लेंगीं, एक 'विकराल भेंट' होगी। अतः किसी भी देश को यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि वह शीघ्र आने वाले इस विनाश से सुरक्षित है।

अतः मैं पुनः अल्लाह, उसके रसूल और मानवता के प्रति प्रेम एवं दया के नाम पर आप से अनुरोध करता हूं कि विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए अपनी भूमिका निभाएं।

शुभकामनाओं तथा प्रार्थनाओं सहित

वस्सलाम

भवदीय
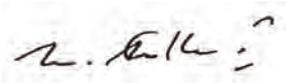
मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

प्रमुख, विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया

रूस के राष्ट्रपति के नाम पत्र

16 Gressenhall Road
Southfields, London
SW18 5QL, UK

महामहिम व्लादिमीर पुतिन
राष्ट्रपति रूस
क्रेमलिन, 23 इलियंका स्ट्रीट
मास्को 103132 रूस

18 सितम्बर, 2013

प्रिय राष्ट्रपति,

मैं आपको यह पत्र अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख के नाते लिख रहा हूं। यह जमाअत जो शान्तिप्रिय और शान्ति को प्रोत्साहन देनी वाली जमाअत है, विश्व के 204 देशों में स्थापित हो चुकी है।

विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को सम्मुख रखते हुए मैं अपने विभिन्न भाषणों के माध्यम से विश्व के लोगों का परमात्मा के प्रति उनके कर्त्तव्यों और मानवता के प्रति उनके दायित्वों की ओर ध्यानाकर्षण कराता रहा हूं। मुझे इस बात का खेद है कि मुझे आपसे बात करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है, परन्तु सीरिया की वर्तमान चिन्ताजनक परिस्थिति ने मुझे इस बात के लिए प्रेरित किया कि मैं आपको पत्र लिखूं और आपने युद्ध-क्षेत्र की बजाए वार्तालाप के द्वारा समस्याओं का समाधान करने के लिए विश्व के विभिन्न देशों में सहमति बनाने का जो प्रयास किया है उसके लिए आपका धन्यवाद और सराहना करूं। किसी भी प्रकार के आक्रमण से न केवल इस क्षेत्र में युद्ध छिड़ जाएगा अपितु इसके विश्व-युद्ध में

परिवर्तित होने की प्रबल संभावना है। एक पश्चिमी समाचार पत्र में आपका एक लेख पढ़ कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई जिस में आपने इस बात को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया कि आक्रमण करना अति विनाशकारी होगा और इसके परिणामस्वरूप विश्व-युद्ध की सम्भावना हो सकती है। आपके इसी संकल्प के कारण महा-शक्तियों ने आक्रमण का मार्ग त्याग कर सहमति एवं संधि का मार्ग अपनाया और इस समस्या का राजनैतिक समाधान निकालने पर सहमति व्यक्त की। निश्चय ही मेरा यह विश्वास है कि इस सहमति ने विश्व को एक महाविनाशकारी एवं विध्वंसक स्थिति से बचा लिया है। मैं विशेष रूप से आपके इस विचार से सहमत हूं कि यदि विश्व के देश अपने-अपने स्तर पर और एक-पक्षीय निर्णय लेंगे तो संयुक्त राष्ट्र का भी वही अन्त होगा जो कि लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) का हुआ था अर्थात यह विफल हो जाएगा। निस्संदेह अभी युद्ध की चिंगारी भड़काई गई थी परन्तु प्रसन्नता इस बात की है कि यह ज्वाला अब कुछ सीमा तक शान्त हो गई है। जो सकारात्मक प्रयास अब तक किया गया है भगवान करे उसके फलस्वरूप युद्ध का ख़तरा पूर्णतया समाप्त हो जाए। भगवान करे विश्व की महाशक्तियां छोटे देशों की रक्षा करें, उनका सम्मान करें और उनके उचित अधिकार उन्हें दें, न यह कि केवल अपनी वीटो-शक्ति के प्रयोग की चिन्ता में व्यस्त रहें।

शान्ति-स्थापना हेतु आपके प्रयासों ने मुझे यह धन्यवाद-पत्र लिखने के लिए विवश कर दिया है। मेरी प्रार्थना है कि यह प्रयास अस्थाई न हों अपितु मेरा विश्वास है और मैं प्रार्थना करता हूं कि आप सदैव शान्ति-स्थापना के लिए प्रयासरत रहें। परमात्मा आपको इस उद्देश्य-पूर्ति का सामर्थ्य प्रदान करे।

विश्व-शान्ति के लिए जब भी मुझे अवसर प्राप्त होता है मैं लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित कराता हूं कि न्याय पर आधारित विश्व-शान्ति स्थापित की जाए। मेरे कुछ भाषण World Crisis and the Pathway to Peace (विश्व संकट तथा शान्ति-पथ) नामक पुस्तक में प्रकाशित हो चुके हैं जिसकी एक प्रति

भेंट स्वरूप आपके लिए प्रस्तुत है।

शुभकामनाओं एवं प्रार्थनाओं सहित

मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह पंचम
प्रमुख, विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत